

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178908

UNIVERSAL
LIBRARY

सरस्वती-सिरीज नं० २२.

श्रिया महत्त्व

ठाकुरदत्त मिश्र



सर्वोदय साहित्य मन्दिर
हुसैनीअलम रोड, हैदराबाद (दक्षिण).

प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड

मद्रास

छिपा महल

पहला परिच्छेद

मयूखमाली मुम्बई की विलायत में पढ़ रहा था। बी० ए० की परीक्षा देने के लिए वह तैयार हो रहा था, इतने में केबिल* से उसे पिता की बीमारी की सूचना मिली। इससे वह तुरन्त ही देश की ओर लौट पड़ा। जब वह घर पहुँचा तब उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी और एक अनुलित सम्पत्ति का वही एकमात्र उत्तराधिकारी बन बैठा था। पिता का क्रिया-कर्म करके उसने अपनी समस्त सम्पत्ति का समुचित प्रबन्ध कर लिया, तब वह निश्चिन्त होकर बैठा। हाथ में कोई वैसा काम-काज था नहीं, इससे गमय व्यतीत करना उसके लिए बहुत कठिन हो रहा था। इधर उसकी मानसिक अवस्था भी वैसी नहीं थी कि मनोरंजन की कोई सामग्री एकत्र करके वह उमी में अपना मन लगाता।

एक दिन की बात है। दूसरे वक्त्त एक आराम-कुर्सी पर वह लेटा आ था। सामने खिड़की खुली थी। उमी से वह खिन्न दृष्टि से शून्य आकाश की ओर ताक रहा था। किन्तु किसी खास चीज पर उसकी दृष्टि नहीं थी। अपनी इच्छा के ही अनुसार वह निरुद्देश्य-भाव से निक रहा था।

* विदेशी तार

ज़रा देर के बाद कमरे में किसी के प्रवेश करने की आहट मिली। परन्तु कौन आया, यह देखने के लिए उसमें ज़रा भी कौतूहल का लक्षण नहीं मालूम हुआ। आकाश की ओर ताकता हुआ जैसे वह लेटा था, वैसे ही लेटा रह गया। घर में उसके थोड़े से नौकरों के अति-रिक्त अपना कोई था नहीं। माना की उसकी बहुत दिन पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। भाई-बहन कोई था नहीं। विवाह भी उसका नहीं हुआ था। कमरे में जिस किसी ने प्रवेश किया हो, वह कोई मित्र या बाहरी आदमी नहीं है, यह उसने इसी में समझ लिया कि आगन्तुक के पैरों में जूते नहीं थे। इसलिए उसकी ओर ताकने की आवश्यकता उसने नहीं समझी।

मयूख की कुर्सी के पाम एक छोटा-सा टेबिल था। उसी के ऊपर थोड़ी-सी पत्र-पत्रिकायें और चिट्ठियाँ आदि रखकर नौकर चला गया।

डाक से क्या-क्या आया है, यह देखने के लिए मयूख ने सारे कागज़-पत्र उठा लिये और एक-एक करके वह उन सब पर दृष्टि दौड़ाने लगा। वह देख रहा था कि कौन-कौन से मासिक, साप्ताहिक या दैनिक पत्र आये हैं और किस-किस व्यक्ति ने चिट्ठी लिखी है। सारी डाक देख लेने के बाद उसने नीले रंग का एक मोटा-सा चौकोर लिफ़ाफ़ा उठाया और उसी को सबसे पहले खोलकर चिट्ठी निकालने लगा। लिफ़ाफ़े पर जिस ओर पता लिखा था उसके दूसरी ओर एक मकान का चित्र और 'मोटो' नीले रंग की रोशनाई से एम्बस करके छपा हुआ था। कागज़ काटने की हाथीदाँत की छुरी से लिफ़ाफ़े को काटते-काटते उसी चित्र और मोटो को वह देखने लगा—चित्र भारत की प्राचीन स्थापत्य-कला के अनुसार बने हुए एक दुर्ग-जैसे एक मकान का था। वह मकान जंगल में था और अगणित पेड़-पौधों से ढका था। चित्र के

ऊपर देवनागरी अक्षरों में लिखा था—छिपा महल और उसके नीचे अँगरेजी में लिखा था—**World's ways are mysterious**, अर्थात् संसार की नीति रहस्यमय है ।

मयूख ने लिफाफे के भीतर से चिट्ठी निकाल ली । तब उसने देखा कि जो चित्र और मोटो लिफाफे पर छपा हुआ है, वही ऊपर की ओर चिट्ठी के कागज पर भी एक किनारे पर छपा है । एक दूसरे किनारे पर छपा था 'नाहिपुर, बम्बई।' इस नाहिपुर में मयूख का एक मित्र अग्निमय अधिकारी रहा करता था । विलायत में उससे मयूख की मित्रता हुई थी । मयूख के विलायत से लौटने से थोड़े दिन पहले ही अग्निमय आक्रमण में बी० ए० पास करके स्वदेश को लौट आया था । अग्नि के पिता हुताशन अधिकारी बंबई-प्रदेश के कई देशी राज्यों में जज थे और अब पेंशन लेकर आराम कर रहे थे । खान-देश के नाहिपुर नामक स्थान में उन्होंने एक पुराना मकान खरीद लिया था और वहीं वे रहने लगे थे । अग्नि ने मयूख को लिखा था—

“प्रिय मयूख, डिगरी लिये बिना ही तुम्हें एकाएक विलायत से लौट आना पड़ा । इधर तुम्हारे पिता की मृत्यु भी हो गई । यह जानकर मैं बहुत ही दुःखी हुआ हूँ । लौटकर आने पर तुम अपने पिता को नहीं देख पाये हो, यह बड़े ही दुःख की बात है । परन्तु डिगरी जो तुम नहीं पा सके, इसके लिए दुःखी होने की कोई बात नहीं है, क्योंकि तुम्हें तो अब डिगरी दिखाकर नौकरी के बाज़ार में उम्मीदवारी करते फिरना न पड़ेगा ।

“नौकरी से पेंशन लेकर पिता जी ने निश्चित रूप से इसी देश में रहना आरम्भ कर दिया है । इसी लिए उन्होंने यहाँ एक मौज़ा भी खरीद लिया है । उस मौज़े का नाम है नाहिपुर । मौज़ा यह बहुत

छोटा है। थोड़े ही में घर इसमें हैं। महाराष्ट्र-देश की कृषक जातियों तथा भीलों की इसमें बस्ती है। परन्तु यह गाँव जहाँ पर बसा हुआ है, वह स्थान बहुत ही मनोरम है। गाँव के उत्तर सतपुड़ा पर्वत की एक शाखा है, जो अधिक ऊँची नहीं है। पश्चिम की ओर एक छोटी-सी पहाड़ी नदी है। मानो वह गाँव को एक दृढ़ और बहुत लम्बी बाँह फैलाकर खूब जोर से पकड़कर लिपटाये हुए है। गाँव के पूर्व ओर दक्षिण एक विस्तृत वन है, राम-लक्ष्मण और सीता ने वनवाम के समय जिस दण्डकवन को पवित्र किया था, उसी का यह भी एक अंश है। यह नदी है तो पतली-सी, किन्तु धारा इसकी बड़ी तेज़ है। इस नदी का नाम है सलिता। यह सलिता नदी सतपुड़ा पर्वत से निकलकर गाँव की गोद में होकर बीच वन से बहती हुई जाकर नर्मदा नदी में मिली है। हमारे गाँव से नर्मदा नदी भी अधिक दूर नहीं है। केवल पाँच-छः कोस की दूरी पर है। सवेरे शिकार के लिए जब घोड़े पर सवार होकर निकलें तब नर्मदा के कछार में शिकार खेलकर भोजन के समय लौट आ सकते हैं।

“शिकार भी यहाँ बहुत मिलते हैं। सतपुड़ा पहाड़ पर, पहाड़ से लेकर नर्मदा-तट तक फैले हुए वन में तथा सलिता नदी के तट पर और नर्मदा के कछार में हिरण, खरगोश तथा चिड़ियाँ आदि तरह-तरह के खाने योग्य जीव-जन्तु मिल सकते हैं। खोजने पर दो-एक शेर-चीता तथा जंगली सूअर आदि भी मिल सकते हैं। इन सबकी अपेक्षा भी अधिक उल्लेखनीय जो आकर्षण की वस्तु यहाँ है वह है यह मकान, जिसमें हम लोग निवास करते हैं। यह मकान क्या है, एक छोटा-मोटा किला है। यह मकान पत्थर का है और भारत की प्राचीन स्थापत्य-कला के अनुसार इसका निर्माण हुआ है। इसमें कितने टेढ़े-मेढ़े गुप्त

रास्ते हैं, इसका कोई ठिकाना नहीं है। मकान क्या है, यह एक प्रकार का गोरख-धन्धा है। इसमें एक सुरंग भी थी, परन्तु पता नहीं कब किसने इस सुरंग का द्वार बन्द करवा दिया है। गाँव में इस बात की प्रसिद्धि है कि इस महल से एक सुरंग सलिता नदी तक और एक नर्मदा नदी तक चली गई है। छिपा महल के नाम से ही यह प्रसिद्ध है।

“यह छिपा महल किस मुसलमान या मराठा राजा का बनवाया हुआ है, यह बात अब ठीक-ठीक नहीं मालूम हो पाती। इस देश के हिन्दू और मुसलमान प्रधानता प्राप्त करने के लिए निरन्तर जो संघर्ष करते रहते थे उसके कारण राजाओं का जीवन, ऐश्वर्य तथा उनकी स्वाधीनता इतनी अनिश्चित रहा करती कि उन्हें समय समय पर अपने आपको छिपाने की आवश्यकता पड़ा करती थी। यह छिपा महल सम्भवतः उन्हीं में से किसी के छिपे रहने का बड़ा था। भारत के पुरातत्त्व-विभाग की ओर से इस मकान के सम्बन्ध में कभी किसी प्रकार का अनुसन्धान हुआ है या नहीं, यह नहीं मालूम है। किसी प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता को निमंत्रित करके इस सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने का विचार है। दो स्थानों पर फ़ारसी अक्षरों में कुछ लिखा है, उसे भी पढ़ना है। आज-कल मैं फ़ारसी सीख रहा हूँ।

“तुम्हें तो आज-कल कोई काम है नहीं। तुम एक बार हमारा यह छिपा महल देख न जाओ। तुम तो इतिहास के विद्यार्थी हो। इसमें से इतिहास की कोई सामग्री खोज सकोगे। पिता जी तथा माता जी से मैंने तुम्हारी चर्चा की थी। वे बड़े आदर से तुम्हें निमंत्रित कर रहे हैं। तुम्हारे यहाँ आने पर इन सबसे भी अधिक मनोहर और कौतूहल उत्पन्न करनेवाली एक और वस्तु मैं तुम्हें दिखलाऊँगा। उसके सम्बन्ध में अभी तुम्हें मैं कुछ बतलाऊँगा नहीं। उसे मैं तुमसे अभी

इसलिए छिपा रखता हूँ कि एकाएक जानकर विस्मय-जनित आनन्द का उपभोग कर सको। अभी मैं केवल इतना ही बतलाऊँगा कि उसका नाम प्रमिता है और उसका रूप और गुण अपरिमित है।

“इस घर में ज़िम्मे दिन मैं आया हूँ, उस दिन से बराबर कल्पना के एक आनन्दमय लोक में ही विचरण कर रहा हूँ। यह कल्पना इतनी मादकतामय है कि मैं रात-दिन आनन्द में ही मग्न रहता हूँ। इस आनन्द का उपभोग करने के लिए मैं तुम्हें फिर निमंत्रित कर रहा हूँ। तुम शीघ्र चले आओ। ठीक सूचना मिलने पर मैं ताँगा लिये हुए स्टेशन पर उपस्थित रहूँगा। मेरा मकान स्टेशन से अधिक दूर नहीं है। चार-पाँच मील होगा।

तुम्हारा—अग्निमय’

यह चिट्ठी पढ़ते ही मयूख सीधा होकर बैठ गया। उसने निश्चय किया कि कल की गाड़ी से ही बम्बई के लिए यात्रा कर दूँगा।

दूसरा परिच्छेद

दरिद्र के मनोरथ की यदि कोई गति हो सकती है तो केवल दुर्गति ही हो सकती है। परन्तु जिनकी मनोरथ-रूपी गाड़ी में चाँदी के चक्के और धुरी लगी हो, उनके मनोरथ की गति भला किस प्रकार रोकी जा सकती है? उनका मनोरथ तो पूर्णता की ओर अबाध गति से ही बढ़ता चला जाता है। मयूख के मनीषे में चाँदी के टुकड़ों की अधिकता थी ही, इससे मित्र के निमंत्रण की रक्षा के निमित्त दूसरे ही दिन वह नाहिपुर की ओर चल पड़ा। स्टेशन पर पहुँचकर उसने तार से अपनी यात्रा की सूचना अग्निमय को दे दी। भड़ोँच से राजपिपला की ओर जो लाइन गई है, उसी के एक छोटे से स्टेशन से उतरकर नाहिपुर उसे जाना था।

निर्दिष्ट स्टेशन पर पहुँचकर मयूख ने देखा तो उसका मित्र प्लेटफार्म पर उपस्थित नहीं था। तब उसने सोचा कि अग्निमय शायद और कहीं होगा, इससे गाड़ी से वह उतर पड़ा और इधर-उधर टहलने लगा। किन्तु चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देखने पर भी मयूख अग्निमय को देख न पाया। तब उसने सोचा कि सम्भवतः घर से चलने में ही उसे कुछ विलम्ब हो गया है, और अभी तक वह यहाँ नहीं पहुँच पाया है; इससे कुछ समय तक यहीं पर प्रतीक्षा करनी चाहिए।

छोटा-सा स्टेशन था। उस पर बहुत रोब-दाब की साहबानी पोशाक पहने हुए एक यात्री को फ्रस्ट क्लास के डिब्बे से उतरते देखकर सारे स्टेशन में खलबली मच गई। गाड़ी रवाना हो जाने पर स्वयं स्टेशनमास्टर साहब दौड़ते हुए पहुँचे। मयूख को सलाम करके उन्होंने

पूछा—दुजूर कहाँ जायेंगे ? क्या मैं किसी प्रकार की सेवा कर सकता हूँ ?

मयूख ने कहा—मैं नाहिपुर जाऊँगा ।

स्टेशनमास्टर ने कहा—ओह, शायद आप छिपा महल जायेंगे ।

मयूख—हाँ, वहाँ मेरे एक मित्र रहते हैं ।

स्टेशनमास्टर ने पूछा—अग्निमय बाबू या वह्निमय बाबू ?

मयूख ने कहा—अग्निमय मेरे मित्र हैं । वह्निमय उनका छोटा भाई है । तो शायद आप उन्हें जानते हैं ।

स्टेशनमास्टर ने कहा—वे लोग तो बहुत बड़े आदमी हैं । इधर आस-पास के भू-भाग में कौन ऐसा आदमी है, जो उन्हें नहीं पहचानता ? वे सदा इसी स्टेशन से होकर आते-जाते रहते हैं, इससे मेरी भी उनसे जान-पहचान हो गई है । क्या आपने अपने आने की सूचना उन्हें नहीं दे रखी है ?

मयूख—मैंने तो चलते समय टेलिग्राम कर दिया था । अग्निमय ने लिखा भी था कि पहले से सूचना मिलने पर मैं ताँगा लिये हुए स्टेशन पर खड़ा रहूँगा ।

स्टेशनमास्टर ने कहा—तो वे अब आते ही होंगे । तब तक आप मेरे आफिस में चलकर बैठिए ।

मयूख स्टेशनमास्टर के साथ-साथ उसके आफिस में गया । कुली लोग भी जाकर वहीं उसका सामान रख आये ।

मयूख स्टेशनमास्टर से बातचीत कर रहा था, किन्तु दृष्टि उसकी बाहर की ही ओर लगी रहती । धीरे-धीरे विलम्ब अधिक हो गया, किन्तु इतनी प्रतीक्षा के बाद भी अग्निमय दिखाई न पड़ा । तब तो मयूख चिन्तित हो उठा । उसने सोचा—सम्भव है कि अग्निमय कहीं

अन्यत्र चला गया हो, या उसकी तबीअत खराब हो गई हो, जिससे कि यहाँ आने में वह असमर्थ हो। इससे स्टेशनमास्टर से उसने कहा कि आप कृपा करके मुझे दो कुली दे दीजिए, मैं धीरे-धीरे चलूँ। रास्ते में यदि अग्निमय का ताँगा मिल जायगा तब तो अच्छा ही है, अन्यथा केवल पाँच ही मील की तो बात है। पैदल ही चला जाऊँगा। नई जगह में आया हूँ। इधर की स्थिति का अभी मुझे कुछ ज्ञान नहीं है, साथ ही रात भी अँधेरी है। इससे दिन रहते-रहते पहुँच जाना ही अच्छा है।

दो कुलियों के मस्तक पर अपना सामान रखकर मयूख नाहिपुर की ओर चला। पहाड़ की गोद में घना वन था। उस वन के भीतर से होकर रास्ता गया था। मयूख वन की शोभा देखता हुआ चला जा रहा था। कितने प्रकार की चिड़ियाँ, कितने प्रकार के जंगली फूल उसने देखे। शोभा और मौन्दर्य्य में वे सब एक से एक बढ़कर थे। उनकी ओर दृष्टि जाने ही मयूख मुग्ध हो जाता, किन्तु जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता वैसे ही वैसे मित्र के लिए उसका चित्त उद्विग्न हो उठता।

चलते-चलते मयूख छिपा महल के फाटक पर पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि वास्तव में इसका छिपा महल नाम सार्थक है। कोठी के चारों ओर बहुत ऊँची चहारदीवारी थी। उस चहार-दीवारी के बाहर दीवार से बिलकुल भिड़ाकर पेड़ लगा दिये गये थे। वे पेड़ भी बहुत ऊँचे-ऊँचे थे और इतने घने लगे थे कि उनके तने आपस में मिलकर ब्रेड़ा-सा बना लिये थे। इससे समीप आ जाने पर भी आसानी से यह नहीं मालूम हो पाता था कि यहाँ कोई मकान है। फाटक पर पहुँच जाने पर मयूख भी यह नहीं समझ सका कि चहार-

दीवारी के भीतर का मकान कितना बड़ा है। लोहे से दृढ़तापूर्वक जड़ा हुआ बड़ा-सा कपाट खुला था। ड्योढ़ीदार वहाँ कोई था नहीं। कपाट के ऊपर जो मेहराब था, उस पर लकड़ी के एक बड़े से चक्के में एक मोटा-सा मँकड़ा लगा था और वही मँकड़ा दो भागों में विभक्त करके कपाट के दोनों पल्लों से लोहे के मोटे-मोटे चुल्ले लगाकर जोड़ दिया गया था। यह देखकर मयूख समझ गया कि यह चक्का घुमाकर रात्रि में या विपत्ति के समय यह कपाट बन्द किया जा सकता है। फाटक में घर तक जाने के लिए जो मार्ग था, उसके बगल-बगल ऊँची-ऊँची दीवारें उठी हुई थीं। इसके सिवा जगह-जगह से वह रास्ता इस प्रकार घुमा दिया गया था कि जगह ही दूर आगे बढ़कर ऊँची दीवार में दृष्टि रुक जाती। कोने पर जो मोड़ थी उसके बाद क्या है, और कितनी दूर चलकर हम मकान तक पहुँच सकेंगे, यह कुछ ठीक-ठीक मालूम नहीं हो पाता था।

उम टेढ़े-मेढ़े रास्ते से मयूख आगे बढ़ने लगा। ठीक सामने चलते-चलते एकाएक उसे कभी इस ओर घूमना पड़ता, कभी उस ओर घूमना पड़ता और कभी मोड़ पर से एकदम घूमकर फिर पीछे की ही ओर लोटना पड़ता। इस गोरखधन्धे में काफी देर तक भटकते-भटकते वह एक छोटे-से दरवाजे के पास पहुँचा। वह दरवाजा भी चारों ओर से दीवार से घिरा हुआ था। उस दरवाजे को पार करते ही मयूख एक बहुत बड़े अहाते में पहुँचा। अहाते के बीच में क़िला-जैसा एक बहुत बड़ा और ऊँचा मकान बना हुआ था। वह मकान नीचे से ऊपर तक पत्थर से ही बना था। वह अहाता भी एक प्रकार से जंगल ही था, क्योंकि उसमें खूब ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की भरमार थी। उन वृक्षों के बीच-बीच में जहाँ कहीं जगह मिल गई थी, वहीं थोड़े-बहुत देशी

और विलायती फूल लगा दिये गये थे। वे फूल हाल के ही लगे हुए मालूम पड़ते थे।

इतना लम्बा-चौड़ा अहाता था और इतना बड़ा मकान था ! परन्तु वहाँ कहीं आदमी का नाम तक नहीं था। वह सारा मकान एक उजाड़ दैत्यपुरी के समान सूना पड़ा-पड़ा खाने-सा दौड़ता था। मकान के सामने खूब चौड़ी और ऊँची-मी जो सीढ़ी बनी थी, उस पर से होकर मयूख ऊपर चढ़ गया। दरवाजे की चौखट के उस पार उसके पैर रखते ही एक मराठा नौकर दौड़ना हुआ आ पहुँचा। मयूख को बिना किसी प्रकार का अभिवादन किये ही व्यग्र-भाव से उसने पूछा—कोई खबर मिली है क्या आपको ?

इस प्रश्न का कोई अर्थ मयूख की समझ में न आ सका। उसने कहा—मैं अग्निमय का मित्र हूँ, बंगाल में आ रहा हूँ। उन्होंने मुझे यहाँ आने के लिए लिखा था।

एक लम्बी साँस लेकर नौकर बोला—ओह !

इतने पर भी नौकर के रंग-डंग से कुछ यह न मालूम पड़ा कि वह मयूख की किसी प्रकार की आवभगत करना अपना कर्तव्य समझता है। यह देखकर मयूख ने पूछा—अग्निमय कहाँ हैं ? क्या तुम उन्हें जग खबर दे दोगे ?

उत्साहहीन होकर नौकर ने कहा—मँझले साहब घर में नहीं हैं। छोटे साहब भी बाहर गये हुए हैं। केवल बड़े साहब और मेम साहब हैं। आप मेरे साथ चलिए।

तीसरा परिच्छेद

मयूख को साथ में लिये हुए नौकर दोमंजिले पर गया। सीढ़ी के पास ही एक कमरे के द्वार पर खड़ा होकर उसने मयूख से कहा— साहब इसी कमरे में हैं।

मयूख ने कमरे में प्रवेश किया। कमरा वह बहुत बड़ा था और उसमें जो वस्तुएँ सजी हुई थीं, वे भी बहुमूल्य थीं। सजावट का ढंग विलायती था। कमरे के बीच में सफ़ेद पत्थर का एक बड़ा-सा टेबिल था। उसी पर हाथ फैलाये तथा मस्तक झुकाये हुए एक वृद्ध पुरुष, जिनके मस्तक के बाल सफ़ेद हो गये थे, कुर्सी पर बैठे हुए थे। उनकी बगल में एक लम्बी-सी एकदमे बदन की सुन्दरी रमणी खड़ी थी, जो न बिलकुल तरुणी थी और न वृद्धा थी। उसके खुले हुए लम्बे-लम्बे बाल लटक रहे थे। दूर से देखने पर जान पड़ता कि मानो किसी ने इस सुन्दरी की पीठ तथा दोनों भुजाओं पर स्याही की धारा बहा दी है। आँखें उसकी बड़ी-बड़ी और खूब उज्ज्वल थीं। उसकी दृष्टि से मानों क्रूरतापूर्ण स्वार्थपरायणता चारों ओर बिखर रही थी। इन दोनों मूर्तियों को देखते ही मयूख ने समझ लिया कि ये वृद्ध महानुभाव अग्निमय के पिता हुताशन बाबू हैं और ये महिला उसकी विमाता तथा वह्निमय की माता हैं। इनका नाम है निपुणिका।

इन पति-पत्नी की ओर दृष्टिपात करते ही मयूख ने समझ लिया कि इनका चित्त काफ़ी प्रसन्न नहीं है। उसने यह भी समझ लिया कि हुताशन बाबू के मन में जितना अधिक विषाद का भाव है, उतनी

व्यग्रता निपुणिका को नहीं है। निपुणिका के मुख-मण्डल पर दुःख का भाव थोड़ा-बहुत वत्तमान है अवश्य, किन्तु उसके साथ ही विजय से उत्पन्न हुए एक प्रकार के सन्तोष का भाव भी उस दुःख के भाव के साथ ही सम्बद्ध है। यह बात निपुणिका की आकृति देखते ही स्पष्ट रूप में मालूम पड़ रही थी। यह देखकर मयूख ने अनुमान किया कि कदाचित् इन पति-पत्नी में किसी बात पर थोड़ा-बहुत विवाद हो गया है, इसी लिए ये दुःखी हैं। इनकी उद्विग्नता का सम्भवतः इसके अतिरिक्त और कोई विशेष कारण नहीं है। तरुणी भार्या होने पर वृद्ध की जो दशा हुआ करती है, वही इनकी भी हो रही है। इस असम द्वन्द्व में वृद्ध की पराजय और तरुणी की विजय होना अवश्यम्भावी ही है। यही सब सोचते-सोचते मयूख बढ़ता हुआ कमरे में चला गया। उसने उन पति-पत्नी को प्रणाम करके कहा—अग्निमय का मैं मित्र हूँ। उन्होंने मुझे बुलाया था।

अपना मुरझाया हुआ मुख ऊपर उठाकर हुताशन बाबू ने कहा—हाँ जानता हूँ। परन्तु यह नहीं मालूम था कि तुम आज ही आ जाओगे। अच्छा बैठी बेटा, बैठो।

एक कुर्मी खीचकर मयूख बैठ गया। उसने कहा—चलने से पहले मैंने तार दे दिया था। क्या उन्हें वह तार मिला नहीं?

दुःखी-भाव से हुताशन बाबू ने कहा—शायद मिला हो उसे!

मयूख हुताशन बाबू की इस बात का भाव हृदयङ्गम नहीं कर सका। वह सोचने लगा कि किसी घरेलू विषय पर अवश्य इन लोगों में कुछ विवाद हुआ है, इससे आपस में मनमुटाव भी हो गया है। यह सोचकर मयूख बड़े असमंजस में पड़ गया। उसके मन में यह बात आई कि बड़े असमय में आया हूँ मैं इनके यहाँ। मित्र से यदि मुलाकात

हो जाती तब भी मयूख थोड़ी-बहुत शान्ति का अनुभव कर पाता। किन्तु अग्नि तो कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। मयूख ने हुताशन से पूछा—अग्निमय कहाँ हैं? क्या वे घर में नहीं हैं?

एक लम्बी साँस लेकर हुताशन ने बहुत ही कातर-स्वर से कहा—भगवान् जानें वह कहाँ है?

हुताशन का भाव तथा उनकी बातों का अर्थ मयूख की समझ में न आया। अवाक् होकर वह उसके मुँह की ओर ताकता बैठा रहा।

मयूख को विस्मितभाव से ताकते देखकर निपुणिका ने कहा—हम लोग बड़े सङ्कट में पड़े हैं। कल दोपहर को एकाएक अग्नि न जाने कहाँ भाग गया। अभी तक उसका कहीं पता नहीं चल सका है।

निपुणिका की इस बात ने मयूख को आश्चर्य में डाल दिया। उसने विस्मयपूर्ण स्वर से कहा—भाग गया है?

“अग्निमय भाग गया है,” इस बात पर मयूख को मानो विश्वास ही नहीं हो रहा था।

हुताशन ने भर्राई हुई आवाज़ से कहा—भाग गया है, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। यह तो मानो एकाएक अदृश्य हो जाना है। यह एक ऐसा रहस्य है, जिसे हृदयङ्गम करने में बुद्धि नहीं काम देती।

मयूख ने अग्नि की विमाता के मुँह की ओर एक बार ताक लिया। बाद को ज़रा-सा इधर-उधर करके उसने पूछा—क्या कोई ऐसा कारण उपस्थित हो गया था, जिसमें अग्नि घर छोड़कर चला गया है?

शोक से अधीर पिता ने व्यथापूर्ण स्वर से कहा—यही तो और भी आश्चर्य की बात मालूम पड़ती है। यदि कोई ऐसी घटना हुई होती जिससे कि उसके घर छोड़कर चले जाने या ज़रा भी रुक होने

की सम्भावना होती तब तो कोई बात ही नहीं थी। इसके बिना क्रोध में आकर घर से निकल भागना उसके स्वभाव के बिलकुल विपरीत है। इस प्रकार के स्वभाव का लड़का तो वह है नहीं कि कोई ऐसा कार्य कर बैठे, जिससे हम लोग दुःखी हों या हमारे सामने किसी प्रकार की चिन्ता का कारण उपस्थित हो। इसी लिए हमारे मन में और भी आशङ्का उत्पन्न हो रही है और उसके अमङ्गल के भय से हम अधीर हो उठे हैं।

इस घटना का क्या कारण हो सकता है, यह बात मयूख की समझ में न आ सकी। परन्तु फिर भी चिन्ताग्रस्त माना-पिता को सान्त्वना देने के भाव से उसने कहा—अभी कल से ही तो उनका पता नहीं चल रहा है? इसके लिए अधीर होने की कौन-सी बात है? सम्भव है कि कुछ आगे बढ़कर मुझसे मिलने के ही लिए वे कहीं चले गये हों और गाड़ी में मुझसे मुलाकात न हो सकने के कारण कहीं पीछे पड़े रह गये हों। सम्भवतः आज या तो वे स्वयं आ जायेंगे, या उनका कोई पत्र या तार आवेगा।

निराशा का भाव व्यक्त करते हुए मस्तक हिलाकर हुताशन ने कहा—मुझे तो कोई ऐसी सम्भावना मालूम नहीं पड़ती। कल दोपहर को भोजन-आदि से निवृत्त होकर वह इसी कमरे में बैठा हुआ महाराष्ट्र देश के इतिहास की कई अच्छी-अच्छी पुस्तकें देख रहा था। आकर मैं भी उसके सामने बैठ गया। तब मुस्कराते हुए उसने मुझसे कहा—इतिहास में खोजकर देखता हूँ कि कहीं इस मकान का कुछ उल्लेख है या नहीं। मैंने उससे कहा कि आर्कोलजिकल डिपार्ट ने अपनी खोजों की जो रिपोर्टें निकाली हैं, उन्हें ज़रा ध्यान से देख लो। इतने में उसकी मा कमरे में आई.....

निपुणिका ने कहा—हाँ, यहाँ आकर मैंने जब देखा कि तुम लोग बातें कर रहे हो, तब मैं लौट गई ।

हुताशन ने कहा—ये जैसे ही कमरे से निकली, वैसे ही वह भी कुर्सी से उठ पड़ा । कमरे से निकलकर जाने-जाते उमने कहा—दक्षिण ओर की गुम्बज में फारसी अक्षरों में कुछ लिखा हुआ-सा मालूम पड़ता है । सफ़ेदी के नीचे अक्षर दबे हुए हैं । उस जगह का चूना खरोंचकर जग में देख आऊँ कि वहाँ चिह्न जो मालूम पड़ते हैं, वे वास्तव में कोई अक्षर है या नहीं । यदि वहाँ कोई लेख हुआ तब तो उसकी सहायता से इस मकान के खोये हुए इतिहास का उद्धार किया जा सकेगा ।—यह कहकर वह चला गया । मेरी धारणा थी कि वह शीघ्र ही लौट आवेगा, इसमें मैं इसी कमरे में बैठा रह गया । उसके लौटने में विलम्ब होते देखकर मुझे यह जानने का कौतूहल हुआ कि वह क्या कर रहा है । इसमें मैं भी उस गुम्बज की ओर गया; किन्तु वहाँ वह मुझे दिखाई न पड़ा । यह सोचकर कि वह और कहीं चला गया होगा, मैं अपने कमरे में चला गया । साँभ को जलपान के लिए भी वह न आया । तब मैंने उसे बुलाने के लिए आदमी भेजा । पता चला कि वह घर पर नहीं है । उस समय तक मुझे किसी प्रकार भी आशङ्का या सन्देह नहीं हुआ । मेरे मन में यह बात आई कि वह कहीं चला गया होगा, थोड़ी देर में आ जायगा । परन्तु रात्रि में भोजन के समय भी जब वह न दिखाई पड़ा, तब मुझे चिन्ता हुई । हम दोनों आदमी और नौकर-चाकर सब मिलकर सारा घर, बगीचा तथा बाहर का जंगल तक, एक-एक जगह खोजकर देख आये । परन्तु उसका कहीं भी पता नहीं चल सका । अभी तक बराबर खोज हो रही

है। वह गाड़ी से कहीं गया है या नहीं, यह जानने के लिए एक घुड़-सवार को मैंने स्टेशन भेजा है।

मयूख ने कहा—हाँ, आते समय मैंने देखा था कि एक आदमी घोड़ा दौड़ाता हुआ स्टेशन की ओर जा रहा है।

मयूख के साथ अग्नि की बड़ी घनिष्ठ मित्रता थी। अपने मित्र से वह बहुत ही प्रेम किया करता था। इससे मित्र के अकस्मात् अदृश्य हो जाने के कारण मयूख बहुत दुःखी और चिन्तित हुआ। उसे उसके लिए बड़ी आशङ्का होने लगी। वह मित्र के सम्बन्ध में हुताशन तथा निपुणिका से तरह-तरह के प्रश्न करने लगा। हुताशन पुत्र-शोक से इस प्रकार विह्वल हो उठे थे कि मयूख के प्रश्नों के उत्तर में वे अधिक कुछ कह नहीं पाते थे। मुँह से कोई बात निकालने का प्रयत्न करते ही आँसुओं से उनका कण्ठ-स्वर रुद्ध हो जाता और वे अपने को सँभालने के लिए कितना प्रयत्न करते, किन्तु उनके मुँह से ठीक-ठीक बात न निकल पाती। इससे मयूख के प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर दिये निपुणिका ने। उसने कहा—अग्नि तो सदा से ही मुँह छिपाकर कोने में पड़ा रहनेवाला आदमी है। वह मनुष्य की अपेक्षा पुस्तकों का साथ अधिक पसन्द करता है। इसलिए उसके साथी-संगी बहुत कम हैं। उसके पास कोई आता नहीं, वह भी किसी के पास नहीं जाता। आज-कल वह महाराष्ट्र-जाति का एक बहुत ही खोजपूर्ण इतिहास लिख रहा है। अभी वह पूरा नहीं हुआ है। देखो, उस अधूरी पुस्तक का ही एक पृष्ठ खुला हुआ उसके टेबिल पर पड़ा है। उसके पास ही फ्राउण्टेन पेन भी जैसी वह छोड़ गया है वैसी ही पड़ी है। परन्तु उसका कोई पता नहीं है।

अग्नि की विमाता जब ये सब बातें कह रही थी, तब उनके कण्ठ-स्वर से ममता और दुःख का आभास पाया जाता था, किन्तु मयूख ने जब उनकी दृष्टि की ओर ताका तब नेत्रों में जल का कहीं लेश तक नहीं था । मयूख के मन में यह बात आई कि ऐसी अवस्था को प्राप्त होने पर और कोई स्त्री फूट-फूटकर रोते-रोते व्याकुल हुए बिना न रहती । परन्तु निपुणिका शिक्षिता स्त्री हैं, इसलिए उन्होंने अपने आपको सँभाल रक्खा है और कदाचित् इस विचार में सँभाल रक्खा है कि एक बाहर से आये हुए अनिधि के सामने यदि मैं रो पड़ूंगी तो बहुत बुरा मालूम पड़ेगा ।

निपुणिका की बातें सुनकर मयूख ने कहा—अग्नि में मिलने के लिए मैं इतनी दूर तक आया हूँ, उमे खोज निकाले बिना किसी प्रकार भी लौटकर न जाऊँगा । यदि मैं उसे खोजने में आपकी कुछ भी सहायता कर सका तो मुझे बड़ा सुख मिलेगा ।

हुताशन यह आशा प्रायः छोड़ चुके थे कि मेरा अग्नि लौटकर फिर मेरे पास आ जायगा । उनके मन में यह धारणा क्रमशः दृढ़तापूर्वक जड़ पकड़ती जा रही थी कि अग्नि अब जीवित नहीं है । तो भी मयूख की इस बात से उनमें ज़रा-सी आशा का मंचार हुआ । उन्होंने कहा—बहुत अच्छा बेटा, बहुत अच्छा । ऐसा ही करो तुम । अपने इस कष्ट और प्रयत्न के बदले में तुम मित्र के वृद्ध और शोक से व्याकुल पिता के आशीर्वाद के अधिकारी होओगे । शैशवकाल के साथ-साथ मनुष्य का परिचय होता है माता-पिता से । वही मनुष्य जब युवा अवस्था का सङ्ग प्राप्त करता है तब उसका परिचय होता है मित्र और स्त्री से । तुम अग्नि के एक प्रिय मित्र हो । एक प्रकार से तुम्हीं

एकमात्र उसके मित्र हो। उसे तुम आन्तरिक भाव से जानते हो। तुम्हें यह भी मालूम होगा कि उसका भुकाव किस ओर था, कौसी परिस्थिति में किस प्रकार का कार्य करना वह अधिक पसंद करता था। तुम अपनी इन सब विषयों की जानकारी की सहायता से उसे खोज सकोगे। वह भी तो साधारण युवकों की ही तरह क्षणिक-बुद्धि और चञ्चल था नहीं। मुझे कोई ऐसा कारण नहीं जान पड़ता, जिससे उसकी अकाल मृत्यु हो गई हो, किसी ने गुप्त रीति से उसकी हत्या कर डाली हो या अकस्मात् मस्तिष्क में ही कोई विकार आ गया हो, जिससे वह कहीं छिपकर भाग गया हो।

इतना कह चुकने के बाद हुताशन कुछ अपने आपको और कुछ निपुणिका को सम्बोधित करते हुए बोले—कल फिर प्रमिता आ रही है ! आते ही यह दुःसंवाद सुनकर वह बेचारी सूख जायगी। यह एक और दुःख के ऊपर दुःख है !

कुछ भुंभलाहट के साथ कठोर-स्वर से निपुणिका ने कहा—तुम जितना समझते हो, उतना दुःख उसे न होगा।

यह बात कहते समय निपुणिका का मुख अद्भुत प्रकार से कठोर हो उठा और उसकी दृष्टि में एक तीक्ष्ण ज्योति विकीर्ण होने लगी। उसके मुख का भाव देखने ही मयूख ने समझ लिया कि यह प्रमिता इनको प्रिय नहीं है। इस प्रमिता के ही विषय में उसने पत्र में लिखा था—अवश्य वह अग्नि की प्रेमिका है, उसकी भावी पत्नी है।

पत्नी की बात का प्रतिवाद करते हुए हुताशन ने कहा—तुम्हें यह मालूम नहीं है कि अग्नि प्रमिता को कितना चाहता है ? प्रमिता भी अग्नि से कम प्रेम नहीं करती।

हुताशन अब अपने शोक का संवरण नहीं कर सके। यह बात समाप्त करते ही वे रो पड़े।

इतनी देर के बाद निपुणिका के आचरण में भी कोमलता और ममता का थोड़ा-बहुत आभास मिलने लगा। उतावली के साथ स्वामी के पास वह पहुँची और उनका हाथ पकड़कर धीरे-धीरे खींचती हुई बोली—चलो, चलो, बाहर चलो। दिनभर इसी कमरे में बन्द रहने के कारण तुम्हारा मन और खराब होता जा रहा है। निरर्थक मन में अशुभ आशङ्का को स्थान देकर तुम दुःखी हो रहे हो। जब तक स्पष्ट रूप से यह न मालूम हो जाय कि कोई अमङ्गल की ही बात हो गई है तब तक क्यों इस प्रकार की चिन्ता को हृदय पर अधिकार करने देते हो? अभी तो हमें यही समझना चाहिए कि अग्नि सकुशल है।

निपुणिका के साथ कमरे से निकलकर जाते-जाते हुताशन ने मयूख से कहा—तुम हाथ-मुँह धोकर जरा विश्राम करो। बहुत दूर से आ रहे हो।

कमरे के द्वार के पास ही एक नौकर खड़ा था। उसकी ओर सङ्केत करके हुताशन ने कहा—फूलचन्द, साहब को रहने के लिए कमरा और गुसलखाना दिखला दो। हाथ-मुँह धो लेने के बाद इन्हें चाय और जलपान की सामग्री दे देना।

अतिथि की आवभगत की व्यवस्था करना गृहिणी का ही कर्तव्य था। परन्तु उन्होंने इस सम्बन्ध में मुँह से एक बात तक नहीं निकाली, यह देखकर मयूख का मन क्षुब्ध और अप्रसन्न हो उठा। परन्तु उसने निश्चय किया कि मित्र के लिए हर प्रकार की असुविधा और उपेक्षा स्वीकार करके मैं यहाँ रहूँगा।

मयूख खड़े-खड़े देखने लगा कि हुताशन और निपुणिका पास-पास चल रहे हैं। दोनों आदमियों का शरीर लम्बा और एकहरा है। हुताशन के बालों की सफ़ेदी उनकी वृद्धावस्था का परिचय दे रही है, किन्तु इतनी अधिक अवस्था का भार लादे हुए वे बिलकुल सीधे होकर ही चल रहे हैं।

चौथा परिच्छेद

मयूख ने हाथ-मुँह धोया, कपड़े बदले और मकान के अहाते में जो बगीचा था, उसमें वह टहलने लगा। मित्र के अदृश्य होने का कारण क्या हो सकता है, इसी विषय पर वह गम्भीर-भाव में विचार कर रहा था। वह क्यों गया, कहाँ गया, कैसे गया और किम उगाय का अवलम्बन करके उसकी खोज की जा सकती है, इन्हीं सब विषयों पर विचार करते-करते वह मकान के सदर फाटक पर पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर मयूख ने देखा तो जो घुड़सवार स्टेशन की ओर दौड़ता हुआ जा रहा था, वही अब लौट रहा था। घोड़े का वेग ठीक पहले का-सा ही था। मयूख उत्सुक-भाव से अपनी दृष्टि सवार के ऊपर जमाये हुए द्वार से ज़रा-सा बगल हटकर खड़ा हुआ।

मयूख के मन में यह बात आई थी कि घुड़सवार मेरी ओर दृष्टि-पात तक न करके बराबर घर के भीतर चला जायगा, क्योंकि उसके घोड़े का वेग ज़रा भी कम नहीं हो रहा था। इसी लिए मयूख रास्ता छोड़कर फाटक पर एक बगल खड़ा हो गया था। उसकी इच्छा थी कि सवार जब समीप आ जाय तो उसको बुलाकर खड़ा कल्लू और हाल-चाल पूछूँ। परन्तु घुड़सवार ने दूर से ही मयूख को देखकर घोड़े का वेग क्रमशः कम करना आरम्भ कर दिया। उसके समीप आकर उसने घोड़ा रोक दिया और उस पर से कूदकर उतरने के बाद बायें हाथ से बागडोर पकड़ ली और दाहिना हाथ उठाकर झुककर सलाम किया।

मयूख ने उससे पूछा—कोई समाचार मिला है क्या ? उस आदमी ने कहा—नहीं हुआ, अभी तक तो कोई समाचार नहीं मिला । स्टेशन वे नहीं गये । गये होते तो किसी न किसी की दृष्टि उन पर अवश्य ही पड़ी होती । इस ओर के सभी लोग तो उन्हें पहचानते हैं, सभी को तो वे प्रिय हैं । जो सुनता है वही आश्चर्य में पड़ जाता है और दुःख प्रकट करने लगता है ।

मयूख ने कहा—अग्नि बाबू मेरे मित्र हैं । हम दोनों आदमी विलायत में साथ-साथ रहा करते थे । उनसे मिलने के लिए कलकत्ते से मैं इतनी दूर आया हूँ । यहाँ आने पर देखा कि जिनके पास मैं आया हूँ, वे है ही नहीं ।

घुड़सवार ने कहा—हाँ, हाँ, परसों वे आपकी चर्चा कर रहे थे । उन्होंने मुझे कहा—ताराचन्द, कलकत्ता से मेरे एक मित्र आवेंगे, उन्हें ले आने के लिए स्टेशन चलना होगा, तुम ताँगा अपना ठीक कर रखना ।

ताराचन्द यह बात एक विस्तृत भूमिका के साथ बतलाने लगा और मयूख यदि उसे रोक न देता तो उसकी भूमिका शायद समाप्त ही न हो पाती । मयूख ने पूछा—अच्छा ताराचन्द, अग्नि बाबू जो इस तरह एकाएक अदृश्य हो गये हैं, तुम्हारे विचार में इसका क्या कारण हो सकता है ?

ताराचन्द ने कहा—मुझे तो कोई भी ऐसा कारण नहीं मालूम पड़ता हुआ ? इस घटना ने मुझे बड़े आश्चर्य में डाल दिया है । बुद्धि बिल्कुल काम ही नहीं दे रही है ।

मयूख ने पूछा—क्या तुम्हारी धारणा है कि वह स्वेच्छा से कहीं छिपा रहकर वृद्ध पिता तथा माता को त्रिन्नित करके उन्हें क्लेश दे सकता है ?

ताराचन्द ने कहा—नहीं हुआ, प्राण रहते तक तो वे कभी इस तरह का काम कर न सकेंगे । उनके प्राण ही नहीं हैं, यह मेरी दृढ़ धारणा है । परन्तु यही मैं कैसे कहूँ कि किसी ने उनकी हत्या करके लाश गायब कर दी है । हम लोगों ने तो सारा मकान, बगीचा तथा जंगल आदि रत्ती-रत्ती खोज डाला है, कहीं किसी प्रकार का सुराग नहीं लग सका । केवल घर के भीतर की भील में नहीं खोज की गई, यदि आपकी आज्ञा हो, तो उसमें भी जाल डालकर देख लिया जाय ।

भयूख ने कहा—भील में सबसे पहले खोज करनी चाहिए थी । परन्तु उसमें जाल डालने की आज्ञा देना मेरे लिए उचित न होगा । बल्लि उनका भाई है, उनका कर्त्तव्य है कि वे बड़े भाई को खोजने के लिए हर प्रकार का प्रयत्न करें । परन्तु ऐसे समय में तो वे घर में हैं ही नहीं !

“इसका कारण क्या है, यह आप जानते नहीं हुआ । घर में उनसे किसी की जरा भी नहीं बनती ! नौकरों के साथ तो वे सदा ही खिचखिच करते रहते हैं । भाई को देखकर वे सदा जलते ही रहते हैं । उस दिन पिता से भी खूब लड़ गये थे । झगड़ा तो उनका कभी-कभी मा से भी हो जाता है, किन्तु औरों की अपेक्षा उनसे कम होता है । जब से मिस साहेब, प्रमिता बीबी, ने यहाँ आना आरम्भ किया है, तभी से झगड़ की नींव पड़ी है । अग्नि साहेब पहले की तरह अब केवल लिखने-पढ़ने में ही नहीं व्यस्त रहा करते । आज-कल वे कुछ चञ्चल-से हो उठे हैं । इस स्त्री ने आते ही मानो उन्हें सोते से जगा दिया है । बल्लि साहेब तो सदा से ही चञ्चल प्रकृति के थे, इधर उनकी चञ्चलता और भी बढ़ गई

है। बड़े भाई से प्रतिद्वन्द्विता करके प्रमिता बीबी के हृदय पर अधिकार करने के प्रयत्न में वे हैं। हमारे साहब की इच्छा है कि प्रमिता बीबी के साथ अग्नि बाबू का विवाह हो, किन्तु मेम साहब चाहती हैं वह्नि बाबू के साथ उनका विवाह करना। इस कारण से भी मन में शान्ति नहीं है। वह्नि बाबू हैं मेम साहब की अपने पेट की मन्तान, इसलिए उनकी ओर स्वभावतः उनका आकर्षण अधिक है।”

“किन्तु प्रमिता बीबी का आकर्षण किसकी ओर है? वे किसे अधिक चाहती हैं? मैंने तो सुना था कि उनके साथ अग्नि का ही विवाह होना निश्चित हुआ है। परन्तु अब क्या वह्नि बड़े भाई के मुँह का ग्रास निकाल लेने की चिन्ता में हैं?”

“आप अग्नि साहब के मित्र हैं, इससे आपसे बतलाने में तो कोई हानि नहीं है टुजूर! वह्नि साहब बड़े भाई को यदि हर प्रकार से बेदखल कर सकें तभी उन्हें खुशी होगी।”

“वह्नि गया कहाँ है इस समय?”

“वे बड़े भाई को खोजते फिर रहे हैं।”

“बड़े भाई की खोज में लगे हैं या जिसके साथ बड़े भाई का विवाह होनेवाला है, उसके साथ स्वयं विवाह करने का उद्योग करने के लिए गये हैं?”

“आपके नेत्रों की दृष्टि यदि इतनी दूर तक जा सकती है तब तो मुझमें यह शक्ति है नहीं कि मैं आपसे कोई बात छिपा सकूँ? वह्नि साहब राजपिप्पला में प्रमिता बीबी के पास ही गये हैं। स्टेशन पर टिकट लेकर मैं उन्हें गाड़ी पर बैठा लाया हूँ। परन्तु वे केवल प्रमिता बीबी के ही पास नहीं गये हैं, किन्तु आज वहाँ एक बहुत बड़ा रेस

भी है। छोटे साहब को रेस का बड़ा शौक है। रेस में वे बड़ा रुपया फूँक चुके हैं। इसी लिए साहब ने उनके मासिक में बहुत कमी कर दी है। इसी विषय में आज-कल पिता-पुत्र में काफ़ी अत-वन भी हो गई है।”

“तब वे रुपये कहाँ से पाते हैं? शायद मा से पा जाते होंगे?”

“जी हाँ, मा से उन्हें रुपये मिलते हैं। परन्तु उतने रुपयों से उनका काम नहीं चल पाता। बड़े भाई से भी वे कुछ रुपये पा जाया करते हैं। अग्नि साहब बहुत अच्छे आदमी हैं, इससे बड़े साहब पुस्तकें खरीदने के लिए उन्हें बहुत-से रुपये दिया करते हैं। किन्तु बल्लि साहब वे रुपये माँगकर रेस खेला करते हैं। अग्नि साहब भाई को बहुत प्यार किया करते हैं, इसलिए कुछ माँगने पर उनमें इनकार नहीं किया जाता। बड़े साहब के पास रेस का एक निजी घोड़ा है। उसके ऊपर बल्लि साहब की दृष्टि लगी हुई है। उस दिन उन्होंने मुझसे कहा—ताराचन्द, मेरे ऊपर कुछ ऋण हो गया है। यदि तुम दो दिन के लिए राकेट घोड़ा चुपके से मुझे दे सकते तो मैं रेस जीतकर अपना ऋण चुका सकता था।”

“तब क्या तुमने घोड़ा दिया उसे?”

“नहीं हुआ, मैं कैसे दे सकता हूँ? बात यदि किसी प्रकार बड़े साहब के कान में पहुँच जाय तो मेरी नौकरी जा सकती है। गरीब आदमी हूँ हुआ, नन्हें-नन्हें बच्चों का पेट कहाँ से भरूँगा? ऐसा विकराल समय लगा है.....”

बीच में ही ताराचन्द को रोककर मयूख ने कहा—अग्नि यदि मार डाला गया होगा तो साहब की सारी सम्पत्ति बल्लि के ही हाथ लगेगी न ?

मस्तक हिलाकर ताराचन्द ने कहा—हाँ हुजूर, उनके सिवा और कौन पानेवाला है ? वे ही तो इस समय.....

साँभ हो चली थी। ताराचन्द की बातों के प्रवाह का अन्त न होते देखकर मयूख ने उसे रोक दिया और कहा—तो अब तुम चलकर तालाब में जाल डालने का प्रबन्ध करो।

“अच्छी बात है हुजूर।”—यह कहकर ताराचन्द घोड़े की लगाम पकड़े हुए, फाटक के भीतर प्रवेश करके टेढ़े-मेढ़े रास्ते में अदृश्य हो गया। मयूख जरा देर तक तो वहीं टहलता रहा, बाद की कुछ मोचने-मोचने वह भीतर की ओर चला।

मकान के अहाने में जो बगीचा था, उसमें चारों ओर टहलते-टहलते मयूख इसी बात का निर्णय करने का प्रयत्न कर रहा था कि अकस्मात् अग्नि के अदृश्य हो जाने का रहस्य क्या हो सकता है और उसका अन्वेषण करने के निमित्त किस सूत्र का अवलंबन करके किस दिशा में उद्योग करना चाहिए।

क्रमशः सन्ध्या का अन्धकार प्रगाढ़ हो गया। बगीचे का एक भी ऐसा वृक्ष नहीं रह गया जिस पर आकर चिड़ियों ने अड्डा न जमा लिया हो। समस्त दिन आहार की खोज में आकाशमण्डल में चक्कर लगाने के बाद उन सबने अपने-अपने घोंसलो में आश्रय ग्रहण किया और अपने कलरव से सन्ध्या-काल के समीरण को मुखरित कर दिया। उधर छिपा महल के समीप ही बने हुए देवी जी के मन्दिर में सन्ध्या-काल की आरती आरम्भ होने पर काँस का घंटा बज उठा। वह शब्द सुनकर मयूख सचैत-सा हो उठा। मन ही मन भगवान् को प्रणाम करके लौटकर वह तालाब की ओर चला। दूर से ही उसने देख लिया कि थोड़े से आदमी तालाब के किनारे पर छाया-चित्र के समान टहल

रहे हैं। आगे बढ़कर मयूख जब मकान के पास पहुँचा तब उसने देखा कि बाहर के द्वार के सामने मीठी के ऊपर निपुणिका खड़ी है। उसे देखते ही मयूख ज़रा-सा चिन्तित और व्यस्त हो उठा। उसके मन में यह बात आई कि शायद माता की आँख के सामने पुत्र का निर्जीव शरीर खोजना बड़ी ही निष्ठुरता तथा अविवेक का कार्य होगा। इसी लिए उतावली के साथ वह निपुणिका की ओर बढ़ गया और कहने लगा—आप इस समय ज़रा देर के लिए घर के भीतर चली जाइए।

मयूख के इस अनुरोध का कारण क्या हो सकता है, यह बात हृदयङ्गम करने के विचार से निपुणिका ने जैसे ही चारों ओर दृष्टि दौड़ाना आरम्भ किया, वैसे ही वह तालाब के घाट पर छाया-चित्रों को चलते-फिरते देख गई। उनका उद्देश्य समझकर वह बोली—अग्नि मछली के समान तैर सकता था। उसे इस तालाब में खोजना व्यर्थ है। तो भी सन्देह निवृत्त करने के विचार से यदि देखना चाहो तो देख सकते हो।

मयूख ने देखा कि अग्नि के सम्यन्ध में जो कोई किसी प्रकार की भी बात करता है, वह क्रियापद में भूतकाल का ही प्रयोग करता है। सब लोगों ने ही मन में निश्चय कर लिया है कि वह अब जीवित नहीं है। उसे ऐसा भी जान पड़ा कि स्थिर रूप से पुत्र की मृत्यु का अनुमान कर लेने पर भी निपुणिका कुछ वैसी अधीर नहीं हुई हैं। माता की अपेक्षा पिता ही अधिक शोकाकुल हैं। इसलिए उसने निपुणिका से पूछा—बाबू साहब कहाँ हैं? इस समय क्या कर रहे हैं वे?

निपुणिका ने कहा—मैं ही उन्हें बड़ी कठिनाई से मुला आई हूँ। थोड़ी-सी नींद आ गई है उन्हें। कल मे तो आहार-निन्द्रा त्यागे ही हुए हैं वे!

और कुछ न कहकर मयूख वहीं टहलने लगा । निपुणिका भी मुंह से कोई बात न निकालकर कुछ क्षण तक तो चुपचाप खड़ी रही, बाद को वह भीतर चली गई ।

रात्रि के प्रगाढ़ अन्धकार में घने वृक्षों की आड़ में बना हुआ वह मकान खूब चटकीली रोशनाई के तालाब में डूबा हुआ-सा जान पड़ रहा था । भूत के समान आकर ताराचन्द ने नीरव-भाव से केवल मस्तक हिला दिया । इस प्रकार उसने सूचित किया कि कोई पता नहीं चल सका । मकान के भीतर जाकर मयूख ने निपुणिका का खोज लिया और उसने उसे इस आशय की सूचना दे दी ।

एक लम्बी सांस लेकर निपुणिका ने कहा—यह तो मैं पहले ही कह चुकी थी । तो भी मेरा हृदय धकधक कर रहा था । भगवान् ने रक्षा की है ।

पाँचवाँ परिच्छेद

रात्रि में भोजन-आदि से निवृत्त होने के बाद घर के सभी आदमी विश्राम के निमित्त अपने-अपने कमरे में चले गये । क्रमशः सारे घर में निस्तब्धता छा गई । दुश्चिन्ता के कारण मयूख को निद्रा आ नहीं रही थी । विस्तरे पर पड़े-पड़े जरा देर तक कारवटें बदलने के बाद वह उठ पड़ा । टेबिल के ऊपर समादान रक्खा हुआ था । उसमें रक्खी हुई बत्ती जलाकर मयूख ने समादान उठा लिया और वह कमरे से निकल पड़ा । उगने यह निश्चय किया कि अग्नि के मोने और पढ़ने का कमरा जरा खूब ध्यान से देख लेना चाहिए !

मयूख पहले-पहल अग्नि के मोने के कमरे में गया । वहाँ भी एक-एक चीज को उसने खूब ध्यान से देखा । परन्तु उसे कोई भी ऐसी वस्तु न मिल सकी, जिसके द्वारा वह अग्नि के इस प्रकार एका-एक अदृश्य हो जाने के सम्बन्ध में किसी प्रकार का अनुमान कर पाता । अब वह उसके पढ़ने के कमरे की ओर चला । वह कमरा एक अद्भुत प्रकार के स्थान पर बना था । मकान के एक कोने में था वह कमरा । बहुत टेढ़ा-मेढ़ा, गली-कूँचा पार करके जाना पड़ता था उसमें । इस ओर का भाग सारे मकान से मानो एक प्रकार से पृथक् था । एक पतली-सी गली के पास एक पंक्ति में बारह कमरे बने थे । एकान्त में निर्विघ्न-भाव से पढ़ने-लिखने में सुविधा होगी, यह सोचकर ही अग्नि ने इस ओर का एक कमरा अपने पढ़ने के लिए ठीक किया था । मयूख ने सोचा कि शायद अग्नि के कागज़-पत्र में कोई ऐसा पत्र या नोट-आदि कहीं मिल जाय जिससे कि उसके एकाएक

अन्तर्धान हो जाने का कोई कारण मालूम किया जा सके। इसी विचार से वह उसका टेबिल, ड्रार तथा आलमारी आदि सब उलट-पलटकर देखने लगा; परन्तु मतलब की कोई भी चीज न हाथ लग सकी। कमरे में लगी हुई घड़ी में उस समय बारह बज चुके थे। इससे हताश होकर मयूख फिर अपने कमरे में लौट आया।

बिस्तरे पर पड़े-पड़े वह अविराम गति से अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाता रहा। सम्भव-असम्भव कितनी बातें उसके मन में उदित हुईं। मयूख उस समय विचार कर रहा था घर के लोगों की अवस्था के सम्बन्ध में। उसके मन में आया, अग्नि के पिता शोक से अत्यन्त ही अधीर हो उठे हैं; परन्तु माता के मन पर भी पुत्र-शोक का कुछ-कुछ विशेष प्रभाव पड़ा है, यह तो मालूम नहीं पड़ता। सौत का लड़का है तो क्या हुआ? इनने दिनों से साथ में रहती आ रही हैं; कुछ न कुछ ममता तो होनी चाहिए थी। कारण क्या है जो अग्नि का अदृश्य हो जाना उन्हें जग भी नहीं खल रहा है? वृद्धि भी पिता को इस धोखे में डालकर कि मैं भाई की खोज करने जा रहा हूँ, गया है राजपिप्पला में रेन खेलने और भाई की भावी पत्नी का मन अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करने के लिए। तो क्या इन लोगों के आचरण से अग्नि के अदृश्य होने का कोई सम्पर्क है? परन्तु उमने घर छोड़ा था दोपहर के समय। कहीं जाने हुए उसे किसी ने देखा भी नहीं। साथ में वह कुछ वस्त्र-आदि भी नहीं ले गया है। इसका कारण क्या हो सकता है? पिता से बातचीत करते-करते उसे याद आई अपने पढ़नेवाले कमरे के सबसे अन्त के कोने में बनी हुई गुम्बज पर लिखे हुए फ़ारसी अक्षरों के पढ़ने की। इसी उद्देश्य से वह कमरे से निकला है, बाद को लौटकर वह नहीं

आया । सम्भव है कि खोज करते-करते अन्त में किन्तु, अन्त में क्या ?

रात्रि में ही, पत्थर पर खुदा हुआ फ़ारसी का वह लेख देखने का इतना प्रबल आग्रह मयूख के हृदय में उत्पन्न हुआ कि वह किसी प्रकार भी स्थिर न रह सका । उतावली के साथ वह बिस्तरे पर से उठ पड़ा । दियासलाई खींचकर वह बत्ती जलाने का उद्योग कर रहा था । डिब्बी में एक ही काड़ी थी । वह बत्ती जलने से पहले ही बुझ गई । इससे मयूख चिन्ता में पड़ गया । चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर उसने देखा कि कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा उदित हो आये हैं और क्षीण होने पर भी उनका प्रकाश खुली हुई खिड़की से कमरे में आ रहा है । इससे मयूख ने निश्चय किया कि चन्द्रमा के इस प्रकाश में मार्ग निर्धारित करने में मुझे कठिनाई न होगी । बाद को अग्नि के कमरे में पहुँच जाने पर सम्भवतः मुझे दियासलाई मिल जायगी । यह सोचकर प्रकाश के बिना ही वह कमरे से निकल पड़ा । खटखटाहट से कहीं निपुणिका और हुताशन के विश्राम में व्याघात न पड़े, इस आशङ्का से उसने पैरों में जूते भी नहीं पहने ।

मयूख ने सोचा था कि अग्नि का कमरा खोजने में मुझे विशेष कठिनाई न पड़ेगी । परन्तु अन्त में उसकी यह धारणा गलत साबित हुई । जिस गली से होकर उस कमरे में जाना था, उस गली तक चन्द्रमा की किरणों की पहुँच ही नहीं हो सकी । धीरे-धीरे पैर रगड़-रगड़कर तथा टटोल-टटोलकर वह आगे की ओर बढ़ता गया । इस गोरखधन्धे में वह ठीक-ठीक अनुमान नहीं कर पाता था कि अग्नि का कमरा कौन-सा है । टटोलते-टटोलते एक कमरे के द्वार पर उसका हाथ पड़ा । उसने सोचा कि शायद यही अग्नि का कमरा होगा ।

इससे वह दरवाजा खोलने लगा। हाथ से ज़रा-सा ठेलते ही दोनों कपाट खुल गये। कमरे में प्रवेश करने के बाद दोनों हाथ फैलाकर वह फिर टटोलने लगा। वह सोच रहा था कि पुस्तकों की आलमारी यदि मिल जाती तो उसके आधार पर मैं रास्ता ठीक कर लेता। परन्तु कहीं भी किसी रेक या आलमारी से उसका हाथ न टकरा सका। दीवार पर कुछ दूर तक हाथ फेरकर उसने देखा तो सारी दीवार खाली थी। तब उसके मन में यह बात आई कि अँधेरे में भूलकर मैं किसी और कमरे में चला आया हूँ। इसलिए यहाँ से अब भागना ही उचित है, दिन के उजाले में ही शिलालेख की परीक्षा करना ठीक होगा। इससे वह लीटने का उपक्रम करने लगा। इतने में समीप के ही किसी कमरे का द्वार खुलने की आवाज़ उसके कान में आई। चकित होकर दरवाज़े से मस्तक निकालकर वह झाँकने लगा। मयूख जिस कमरे में था, उसके पासवाले कमरे के बाद के कमरे से निकलकर एक रमणी बाहर आई। मयूख को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह रमणी और कोई नहीं निपुणिका है ?

मयूख के मन में यह बात आई कि जिस कमरे से निपुणिका निकली है, वह अग्नि का पढ़ने का कमरा है। परन्तु इतनी रात्रि में निपुणिका इस कमरे में क्यों आई थी ? एक अनिर्दिष्ट आशङ्का और सन्देह से मयूख का हृदय पूर्ण हो उठा। निपुणिका जब वहाँ से चली गई तब वह गुप्त स्थान से निकल आया और बहुत दबे पाँव से धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। चारों ओर खूब ध्यान से ताकते-ताकते मयूख ने उसी कमरे में प्रवेश किया जिसमें से अभी निपुणिका निकली थी। उसमें प्रवेश करते ही उसे निश्चय हो गया कि हाँ, यह कमरा मयूख का लाइब्रेरीवाला ही कमरा है।

कमरे में टटोल-टटोलकर मयूख कुछ देर तक दियासलाई खोजता रहा। परन्तु कहीं भी कोई दियासलाई उसके हाथ में नहीं लगी। अतएव उसे प्रातःकाल तक प्रतीक्षा करना ही उचित जान पड़ा, इससे कमरे से वह बाहर निकल आया। चुपके से दरवाजा बन्द कर देने के विचार से जैसे ही उसने कपाट में लगे हुए लोहे के चुल्ले में हाथ लगाया वैसे ही चुल्ला भीगा हुआ-सा मालूम पड़ा। विस्मित होकर मयूख ने सोचा कि भय और उद्वेग के कारण क्या मेरे हाथ में पसीना हो आया है ? एक छेद के रास्ते से चन्द्रमा का एक टुकड़ा भर प्रकाश उस गली में आकर पड़ रहा था। उसी प्रकाश में हाथ फैलाकर मयूख ने देखा। उसके हाथ में रक्त लगा हुआ था। अब तो मयूख के विस्मय की सीमा न रही। उसने मन में कहा—कपाट के चुल्ले से मेरे हाथ में रक्त लग गया है और यह कपाट अभी बन्द करके गई है निपुणिका !

छठा परिच्छेद

मयूख ने देखा कि मेरे हाथ में यह जो रक्त लगा है, वह अग्नि के पढ़नेवाले कमरे के दरवाजे के चुल्ले से लगा है और अभी-अभी इस कमरे से अग्नि की विमाता निपुणिका निकलकर गई हैं। इससे उसका हृदय अत्यधिक भय, चिन्ता तथा सन्देह से पूर्ण हो उठा। उसके मन में आया कि इस कमरे में न जाने कैसी घटना हो गई है? यह रक्त क्या मेरे मित्र अग्नि का ही है? यह रक्तपात किया किमने और क्यों किया?

मयूख जहाँ पर खड़ा था, वहीं बड़ी देर तक बिलकुल काठ की तरह वह खड़ा रहा। बाद को ज़रा-सा सचेत होकर वह फिर भी अग्नि के कमरे के द्वार के पास पहुँचा और उसी चुल्ले में उसने हाथ लगाया। चुल्ले को छूते ही मयूख का शरीर रोमाञ्चित हो उठा। हृदय धकसे हो उठा। उसका समस्त हृदय आतङ्क से पूर्ण हो उठा। किन्तु मयूख ने देखा कि चुल्ला पहले की तरह भीगा नहीं है। उसमें जो रक्त लगा है, वह सूख गया है।

एक बार मयूख के मन में आया कि इस समय चलकर विस्तरे पर लेट जाना ही अच्छा है, कल प्रातःकाल साथ में हुताशन बाबू को लेकर ही खोज करना ठीक होगा। किन्तु बाद को उसके मन में आया—नहीं, खोज इसी समय करनी चाहिए। इस समय खोज करने पर सम्भव है कि अग्नि घायल होकर मृतप्राय अवस्था में पड़ा हुआ मिल जाय। तब तो उसकी रक्षा भी की जा सकेगी, साथ ही यह भयङ्कर रहस्य भी खुल जायगा।

अन्धकारमय कमरे में टटोलते-टटोलते मयूख के हाथ में एक दियासलाई लग गई। डिब्बी में से एक काड़ी निकालकर जैसे ही वह जलाने का उद्योग करने लगा, उसका शरीर थरथर कांपने लगा, दौंत भी आपस में टकराकर किटकिट करने लगे। उसे भय हो रहा था कि उजाला हो जाने पर पता नहीं कैसा बीभत्स दृश्य देखने को मिलेगा।

दियासलाई की डिब्बी में लगे हुए रोगन से काड़ी को कई बार रगड़ने के बाद उजाला हो उठा। काड़ी के फुर से जलते ही मयूख की अन्तरात्मा भी कांप उठी। इधर उजाला मिल जाने पर उसकी आँख भी विस्फारित हो उठी। मयूख ने उतावली के साथ एक बार चारों ओर दृष्टि फेरकर देखा। परन्तु कहीं भी खून-खच्चर या रक्तपात का चिह्न तक उसे दिखाई नहीं पड़ सका। तब ज़रा कुछ धैर्य में आकर वह चिराग जलाने का उद्योग करने लगा। परन्तु चिराग मिलने से पहले ही दियासलाई की काड़ी बुझ गई।

उजाले के बाद जब अँधेरा हुआ तब वह अत्यन्त ही प्रगाढ़ हो उठा और कहीं कुछ सूझ ही न पड़ता। अब मयूख को ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मानो चारों ओर खुस-खस शब्द हो रहा है और शरीर-हीन भूत चारों ओर से उसे घेरे हुए अन्धकार में मिलकर घूम-फिर रहे हैं। डर के मारे मयूख के शरीर का रोयाँ-रोयाँ खड़ा हो गया।

मयूख फिर दियासलाई जलाने का प्रयत्न करने लगा। कई बार के प्रयत्न के बाद फिर एक काड़ी जली। अब उसे अग्नि के टेबिल के पास कमरे के कोने में तिपाई पर रक्खा हुआ एक लैम्प दिखाई पड़ा। मयूख ने जलती हुई काड़ी को लैम्प की बत्ती में

लगाने का प्रयत्न किया किन्तु बत्ती में वह लग भी न पाई कि आग की लौ उसकी उँगली में लगने लगी; इससे काड़ी को उसने भूमि पर फेंक दिया ।

फिर अँधेरा हो गया । इस बार दियासलाई की काड़ी जलाने पर लैम्प भी जल गया । अभी तक कमरे की जो चीजें एक अद्भुत आकार धारण करके मयूख के हृदय में आतङ्क उत्पन्न कर रही थीं, अब उजाला होने पर वे ही चीजें स्वाभाविक रूप में उसके सामने आईं । मयूख ने देखा कि अग्नि के टेबिल पर उसके हाथ के लिखे हुए महा-राष्ट्र के इतिहास के पन्ने इधर-उधर बिखरे पड़े हैं और उन पन्नों के आस ही पास विभिन्न व्यक्तियों के लिखे हुए इतिहास तथा रिपोर्टें आदि पड़ी हैं ।

मयूख कमरे भर में दृष्टि फेर गया । उसे आशा थी कि कमरे में कहीं न कहीं रक्तपात का चिह्न अवश्य दिखाई पड़ेगा । परन्तु कहीं ज़रा भी रक्त लगा हुआ उसे दिखाई न पड़ा । अब बहुत-कुछ स्वाभाविक अवस्था में आकर उसने अपने हाथ पर दृष्टि डालकर देखा । जितना वह समझ रहा था, उतना रक्त लगा नहीं था । एक स्थान पर ज़रा-सा रक्त का हल्का-सा दाग पड़ गया था । उसके मन में आया कि घोती के छोर से यह दाग पोंछ डालूँ । परन्तु तुरन्त ही एकाएक वह फिर काँप उठा । यह रक्त मेरे मित्र का ही है, यह सन्देह वह किसी प्रकार भी अपने हृदय से नहीं निकाल पाता था ।

मयूख के मन में आया कि पहले-पहल जब मुलाकात हुई है तभी से निपुणिका का बंग ठीक नहीं मालूम पड़ रहा है । अग्नि के अन्तर्धान हो जाने के कारण उनमें कुछ अधीरता आई है, इस बात का भी कोई लक्षण नहीं प्रकट होता । अग्नि उनकी सीत का लड़का है,

पिता को वह अधिक प्रिय है, उनके पुत्र वह्नि से सब विषयों में उसकी प्रतिद्वन्द्विता है, पिता ने अप्रसन्न होकर वह्नि का मांसिक घटाकर अग्नि का मांसिक बढ़ा दिया है, इधर धनवान् पिता की एकमात्र पुत्री प्रमिता के साथ अग्नि का विवाह भी निश्चित हुआ है, ये सब ऐसी बातें हैं, जिनके कारण अग्नि के प्रति निपुणिका के मन में विद्वेष का भाव उत्पन्न हुए बिना नहीं रह सकता। उनके मन में यह बात अवश्य आई होगी कि अग्नि की यदि किसी प्रकार हटाया जा सके तो वह्नि का मार्ग निष्कण्टक हो जाय और वह सरलतापूर्वक अपने पिता के अतिरिक्त प्रमिता के पिता की भी समस्त सम्पत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी हो सकेगा।

यह सब तर्क-वितर्क करने के बाद मयूख इस निर्णय पर पहुँचा कि गुप्त रीति से अग्नि की हत्या कर डालने की प्रवृत्ति निपुणिका में उत्पन्न हो आने के लिए ये सब कारण पर्याप्त हैं। इनकी अपेक्षा कहीं अधिक साधारण कारणों से सौत के पुत्र का प्राण-वध करनेवाली कितनी विमातायें सुनने में आई हैं। परन्तु अग्नि को तो अपनी इन विदुषी और सुदक्ष नई माता की प्रशंसा करने में तृप्ति ही नहीं होती थी! नई मा की चर्चा छिड़ती नहीं कि अग्नि अपनी वाणी से श्रद्धा, भक्ति और स्नेह की धारा प्रवाहित करना आरम्भ कर देता। निपुणिका ने इस विषय में अच्छी ह्यांति भी प्राप्त की थी कि सौत के पुत्र के प्रति अपने पुत्र की अपेक्षा वे किसी प्रकार कम स्नेह-ममता का भाव नहीं प्रदर्शित करतीं। ऐसी दशा में इस प्रकार की सुशिक्षिता, सुन्दरी तथा उच्च कुल की महिला के लिए ऐसे जघन्य कर्म में हाथ लगाना सम्भव है, इस प्रकार के सन्देह को मन में स्थान देना ही बहुत अनुचित है।

इस रहस्यमय गोरखधन्धे में प्रवेश करके मयूख भटकते-भटकते व्याकुल हो रहा था; बाहर निकलने का रास्ता उसे नहीं सूझ पड़ता था। हताश होकर वह एक कुर्सी पर बैठ गया और समस्याओं के इस जाल में से मीमांसा के लिए कोई उपयुक्त सूत्र खोज निकालने के लिए गम्भीर भाव से चिन्ता करने लगा।

कुछ क्षण सोच-विचार करने के बाद मयूख अग्नि के कागज-पत्र तथा पुस्तकें आदि उलटकर देखने लगा। उसने सोचा, आश्चर्य नहीं कि कोई ऐसा नोट या पत्र इनमें मिल जाय, जिससे अग्नि के घर से निकल भागने या उसकी गुप्त हत्या का कोई सङ्केत मिल सके। परन्तु खूब ध्यान से खोजने पर भी उसे कोई ऐसी वस्तु नहीं मिल सकी।

हाथ में लैम्प लिये हुए मयूख कमरे से बाहर निकला। दरवाजे के चुल्ले को वह ध्यान से देखने लगा। लोहे का चुल्ला ओस से भीग गया था। उस पर मटमैले सेंदुर का-सा ज़रा-सा रंग लगा था अवश्य; किन्तु ठीक रक्त नहीं मालूम पड़ता था। इससे मयूख के मन में आया कि मित्र की खोज करने का अत्यन्त प्रबल आग्रह होने के कारण मैंने हृदय में शायद एक मिथ्या भय तथा सन्देह को स्थान देकर इतना आकाश-पाताल बाँधना आरम्भ कर दिया था।

एक प्रकार से बेवकूफ बनकर मयूख ने दीपक बुझाया; कमरे का द्वार बन्द कर दिया और वह अपने कमरे में चला गया।

सातवाँ परिच्छेद

समस्त रात्रि मयूख को ज़रा भी निद्रा नहीं आ सकी । सबेर होते ही उसे हुताशन तथा घर के नौकरों के उठने की आहट मिली । उतावली के साथ आँख-मुँह धोकर वह स्वयं भी बाहर निकल पड़ा ।

नीचे उतरते-उतरते मयूख ने सुना कि हुताशन नौकरों को नये-नये स्थानों में जाकर नये-नये ढंग से अग्नि की खोज में लगने का आदेश कर रहे हैं । मयूख का मन सङ्कल्प-विकल्प और दुश्चिन्ता से आन्दोलित होने लगा । वह इसी उधेड़-बुन में पड़ा था कि गन रात्रि की घटना की चर्चा हुताशन से करना उचित है या नहीं ? अन्त में वह इसी निर्णय पर पहुँचा कि स्वामी के समक्ष स्त्री के चरित्र के सम्बन्ध में किसी प्रकार का सन्देह प्रकट करना मेरे लिए बुद्धिमानी का कार्य न होगा ।

मयूख के समीप आते ही हुताशन ने पूछा—तुम इतने सबेरे ही उठ गये हो बेटा ? रात्रि में तुम्हारी निद्रा में तो कोई व्याघात नहीं हुआ ?

व्याघात भला नहीं हुआ ! परन्तु इस बात को स्पष्टरूप से न कहकर मयूख ने ज़रा-सा घुमाकर कहा—एक तो नई जगह है, दूसरे मन में इतनी घोर चिन्ता थी ।

एक आह भरकर हुताशन ने कहा—आज फिर प्रमिता आ रही है ! उससे मैं क्या कहूँगा, इस दुश्चिन्ता से मैं भी समस्त रात्रि सो नहीं सका हूँ । अच्छा मयूख, तुमने तो बहुत देर तक सोच-विचार कर चुके हो, क्या आता है तुम्हारे मन में ? क्या अग्नि जीवित है ?

मयूख ने कहा—मुझे तो इस बात की बड़ी आशंका हो रही है कि वे अब जीवित नहीं हैं।

कातरभाव से हुताशन ने कहा—मुझे भी ऐसा ही लगता है। कल रात्रि में अग्नि की मा से मैं यही बात कह रहा था।

उत्सुक होकर मयूख ने पूछा—आपकी बात सुनकर उन्होंने क्या कहा ? वे क्या अनुमान करती हैं ?

“उन्होंने कहा कि जब कोई सूराम ही नहीं लग रहा है तब वह जीवित है या नहीं, यह कुछ स्थिर रूप से नहीं कहा जा सकता। एक न एक दिन यह रहस्य खुलकर ही रहेगा।”

कुछ क्षण के विराम के बाद बड़े क्लेश से हुताशन ने कहा—परन्तु मेरे दिन तो अब बीत चुके हैं, पुत्र-शोक से हृदय विदीर्ण होता जा रहा है। रह-रहकर कलेजे में इतने जोर की पीड़ा मालूम पड़ती है कि अब अचेत होकर गिरना ही चाहता हूँ, मेरी मृत्यु होने में विलम्ब नहीं है।

जरा देर में किसी प्रकार अपने को सँभालकर हुताशन ने फिर कहा—मेरी मृत्यु के बाद बल्लि मेरा उत्तराधिकारी होगा। परन्तु इतने क्लेश से मैंने जो यह सम्पत्ति उपाजित की है, बल्लि के हाथ में पड़कर वह नष्ट-भ्रष्ट होती जा रही है, यह चिन्ता मृत्यु के बाद भी मेरी आत्मा को शान्ति से न रहने देगी।

“तो शायद बल्लि का हिसाब-किताब ठिकाने से नहीं रहता, वे चंचल प्रकृति के आदमी हैं ?”

“हिसाब-किताब ? वह पूरा उड़ाऊ-बीर है ! चंचल प्रकृति का क्यों कहते हो उसे ? वह तो एकदम से उच्छृंखल है, निकम्मा है !”

हुताशन दुःखी होकर फिर चुप हो गये। कुछ क्षण तक नीरव रहने के बाद उन्होंने कहा—अच्छा, आज तुम किस ओर खोज करोगे, कुछ निश्चय किया है ?

“मैं अच्छी तरह से अग्नि के कमरों में खोजकर देखना चाहता हूँ।”

“अच्छी बात है, यही करो। परन्तु वे सब कमरे तो कितनी बार खोजकर देखे जा चुके हैं। उनमें तुम्हें किस बात का पता चल सकेगा ?”

“क्या अग्नि के कमरे से कोई गुप्त रास्ता निकला हुआ है या उसके फर्श में कोई चोरदरवाजा है ?”

“नहीं, वह सब कुछ नहीं है। बीच-बीच में दो-एक चोर-कोठरियाँ हैं।”

‘चोर-कोठरी’ का नाम सुनकर मयूख ने उत्सुक होकर पूछा—तो क्या इस मकान में चोर-कोठरियाँ भी हैं ?

हुताशन ने कहा—हाँ, चोर-कोठरियाँ हैं अवश्य; परन्तु वे तो बार-बार खोजकर देखी जा चुकी हैं। इसके सिवा किसी चोर-कोठरी में अग्नि जाने ही क्यों लगा ?

जरा-सा इधर-उधर करके हुताशन ने कहा—उन कोठरियों को क्या आपने स्वयं देखा है ?

“नहीं, मेरे नौकरों ने देखा है। उन्होंने (निपुणिका) भी देख लिया है।”

मयूख के मन में संदेह उत्पन्न हो गया। उन्होंने देखा है और नौकरों ने देखा है। चोर-चोर मौसेरे भाई ! निपुणिका के विरुद्ध स्वामी से कोई बात मयूख कह न सका। परन्तु हुताशन से उसने पूछा—क्या आपके सभी नौकर विश्वासपात्र हैं ? किसी के सम्बन्ध में किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता ?

“अवश्य विश्वासपात्र हैं ! मेरे अधिकांश नौकर बहुत पुराने हैं।”

“क्या वे लोग आपके तथा गृहिणी के पूर्णरूप से अनुगामी हैं ?”

“बिल्कुल ! विशेषरूप से उनके । वे सब नौकरों तथा नौकरानियों को अपने लड़के-लड़कियों की ही तरह मानती हैं । इससे उनमें से भी कोई ऐसा नहीं है, जो उनके लिए प्राण देने को तैयार न रहता हो ।”

जरा-सा इधर-उधर करके मयूख ने पूछा—चाची जी का सबसे अधिक विश्वासपात्र नौकर कौन है ?

“ताम्बे । वह उनके पिता के यहाँ का पुराना नौकर है । विवाह होने पर वह उनके साथ में आया है । तब से वह यहीं रहता है ।”

“क्या वह स्वभाव का गम्भीर आदमी है ? किसी तरह के लप-भ्रम में तो नहीं रहता ?”

“नहीं, वह बड़ा गम्भीर है । बहुत कम बोलता है । किसी से वैसा मिलता-जुलता नहीं । क्रुद्ध होते तो कभी किसी ने उसे देखा ही नहीं ।”

इतने में एक नौकर ने आकर हुताशन से कहा—हुजूर, नाहिपुर का भील-सरदार कोई सूचना देने आया है ।

मयूख को वहीं छोड़कर हुताशन उतावली के साथ दूसरी ओर चले गये ।

आठवाँ परिच्छेद

मयूख गृहिणी तथा उनके पिता के यहाँ से आये हुए नौकर ताम्बे की आकृति का अध्ययन करने लगा। इस अध्ययन से वह इस परिणाम पर पहुँचा कि घर भर में उन्हीं दो आदमियों के मुख-मंडल पर किसी प्रकार के उद्वेग का भाव नहीं है। इससे उन दोनों के प्रति मयूख के मन में बहुत अधिक संदेह होने लगा। उसने सोचा कि अग्नि को क्या हुआ है, यह बात यदि निश्चित रूप से इन्हें न मालूम होती तो ये लोग इस तरह उद्वेगहीन नहीं हो सकते थे। घर भर में एक और व्यक्ति के सम्बन्ध में मयूख को ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मानो यह भी बहुत ही शान्त है, किसी प्रकार की चिन्ता या उद्वेग से इसका हृदय रहित है। वह थी घर की एक परिचारिका। उसकी समस्त भाव-भङ्गी एक ऐसे व्यक्ति की-सी जान पड़ती जिसे मानो किसी से किसी प्रकार की ममता ही नहीं है, वह उदासीन है। काम-काज जब कोई करना होता तो वह बिल्कुल मशीन की तरह करती, किसी काम में मानो उसे जोर लगाना ही नहीं पड़ता था।

मयूख ने रंग-ढंग से पहचान लिया कि वही दासी गृहिणी की मुख्य दासी है और यह उनकी बिश्वासपात्र है। वह दासी बीच-बीच में ताम्बे के कार्य में भी हाथ बटाया करती और कार्य-कारण से जब कोई नौकर या दासी अनुपस्थित हो जाता, तो भी दौड़-दौड़कर वह सारा काम सँभालती फिरती।

मयूख के मन का भाव दासी भी ताड़ गई। उसने समझ लिया कि यह आदमी मुझे संदेह की दृष्टि से देखता है। इससे वह कुछ घबराने-

सी लगी। रह-रहकर आँख बचाकर वह मयूख की ओर ताक भी लिया करती थी। इससे मयूख का संदेह और भी बढ़ने लगा। ताराचन्द ने बात ही बात में मयूख ने मालूम कर लिया कि इस दासी का नाम अहल्या है।

स्वयं घर की मालिकिन के ऊपर संदेह ! यह बात न तो मुँह से निकालते बनती थी और न कहे बिना रहा जाता था। मयूख बड़े संकट में पड़ गया। उसने यह निश्चय किया कि स्वामी के समक्ष स्त्री के विरुद्ध संदेह प्रकट करने के लिए जब तक कोई उपयुक्त प्रमाण न खोज लिया जाय तब तक हुताशन से कुछ कहना ठीक न होगा। इस विचार में मयूख बड़ी तत्परता के साथ प्रमाण संग्रह करने का उद्योग करने लगा। वह एक उपद्रवी बालक की तरह घर भर में इधर से उधर और उधर से इधर व्यग्रभाव से घूमता फिरता। जिस कमरे में उसके प्रवेश करने की किसी को कोई आशा नहीं होती थी; उस कमरे में भी वह घुस जाया करता था। किसी कमरे में प्रवेश करते समय किसी को आहट न मिल सके, इस बात की सुविधा के लिए उसने पैर में जूते पहनना छोड़ दिया। मयूख के ज़रा-सा शान्तभाव से एक स्थान पर बैठने या विश्राम करने का कोई निर्दिष्ट समय नहीं था। या यों कहिए कि विश्राम करना उसने एक प्रकार से छोड़ ही दिया था।

अपनी इस दौड़-धूप के कारण मयूख ने दिन भर में कई बार निपुणिका, ताम्बे और अहल्या को फिस-फिस करके बातें करते हुए देखा। कभी अहल्या और निपुणिका एक साथ मिलीं, कभी ताम्बे और अहल्या में बातें हो रही थीं, कभी निपुणिका और ताम्बे एक स्थान पर देखने में आये तो कभी ये तीनों ही आदमी एक स्थान पर मिले !

परन्तु मयूख पर जैसे ही इन लोगों की दृष्टि जाती; वे सब पृथक्-पृथक् होकर विपरीत दिशा को चल देते और अलग-अलग कामों में लग जाते ।

घर भर में चक्कर लगाने के बाद मयूख ने टहलते-टहलते जाकर देखा तो ताराचन्द उतावली के साथ गाड़ी जोत रहा था । उससे पूछने पर मयूख को मालूम हुआ कि प्रमिता बीबी आ रही हैं, उन्हें लेने के लिए वह स्टेशन जा रहा है ।

अस्तबल से लौटकर आते-आते मयूख ने देखा तो हुताशन चिन्तित-भाव से टहल रहे थे । मयूख को देखते ही वे बोल उठे—प्रमिता आ रही हैं । किस तरह मैं उसे इस सर्वनाश का हाल बतलाऊँगा !

विषादमयी दृष्टि से हुताशन की ओर ताकता हुआ मयूख उनके साथ ही साथ चुपचाप द्वार के सामने टहलने लगा । टहलते ही टहलते वह एक बार झटपट भीतर घुस गया और सारा घर घूमकर देख आया ।

लगभग ग्यारह बजे गाड़ी की घड़घड़ाहट और घोड़े की टाप सुनाई पड़ी । जान पड़ा कि गाड़ी लौटी आ रही है । आगन्तुकों के स्वागत के लिए निपुणिका भी पति की बगल में आकर खड़ी हो गई । मयूख जरा कुछ दूर खड़ा रहा । गाड़ी अहाते का टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता तय करती हुई क्रमशः द्वार के समीप आगई । उस पर तीन आदमी बैठे हुए थे । प्रमिता की बगल में बैठा था वह और दूसरी बगल प्रमिता का एक छोटा भाई । उन्हें देखते ही हुताशन ने कहा—वह भी तो इन्हीं लोगों के साथ आ रहा है ! इसके उत्तर में निपुणिका तत्काल ही बोल उठीं—शायद उसी गाड़ी पर वह भी किसी स्टेशन से सवार हुआ है ।

हुताशन ने कहा—तब तो प्रमिता को बह्नि से सारा हाल मालूम हो गया होगा। अच्छा ही हुआ, अब मुझे यह दुःसंवाद अपने मुँह से उसे न सुनाना पड़ेगा।

हुताशन ने शान्ति की ऐसी साँस ली, मानो उन्हें किसी बहुत बड़े संकट से छुटकारा मिल गया है।

गाड़ी आकर द्वार के पास खड़ी भी न हो पाई थी कि साईस उस पर से कूद पड़ा और बढ़कर उसने द्वार खोल दिया। गाड़ी का द्वार खुलते ही व्यग्रभाव से प्रमिता उस पर से कूद पड़ी और हुताशन तथा निपुणिका के समीप आकर उनकी पद-धूलि ग्रहण करती हुई उत्कण्ठित स्वर से बोली—लौटकर आये हैं वे ? कोई खबर नहीं मिल सकी, ऐसी बात मुझने न कहिएगा।

हुताशन के दुःख का आवेग बहुत बढ़ गया। मुँह से कोई बात न निकालकर उन्होंने मस्तक हिला दिया। निपुणिका होंठ से होंठ दबाये हुए कठोर और स्तब्ध हुई खड़ी रही।

प्रमिता अभी तक आशा और आशंका की खींचा-तानी में पड़कर किसी प्रकार अपने आपको सँभाले हुए थी। किन्तु उसकी अन्तरात्मा में वेदना का जो अत्यधिक उद्वेग था उसे रोक रखने में अब वह समर्थ न हो सकी। वक्ष पर मस्तक रखकर वह फफक-फफक कर रोने लगी।

प्रमिता को देखते ही मयूख ने यह समझ लिया कि इसे देखते ही अग्नि जो मुग्धभाव से इसके प्रेम में पड़ गया है, उसका कारण क्या है ? प्रमिता के शरीर का गठन, उसके मुख की आभा तथा अङ्ग-प्रत्यङ्ग का लावण्य, यह सब इतना आकर्षक है कि चित्त उसकी ओर अपने आप ही आकर्षित हो उठता है। उसकी दृष्टि की स्निग्धता तथा तीक्ष्णता और मुख पर कोमलता तथा दृढ़ता के भावों का

सम्मिश्रण देखकर यह अनुमान किये बिना कोई भी नहीं कह सकता कि यह एक परम तेजस्विनी और बुद्धिमती रमणी है। शरीर का रंग उसके उषा के प्रथम आभास के समान गुलाबी था; किन्तु उस समय दुश्चिन्ता और शोक के उद्वेग के कारण उस पर पीलापन आगया था।

मयूख मुग्ध और प्रशंसापूर्ण दृष्टि से प्रमिता की ओर ताक रहा था, एकाएक वह्नि की बात सुनकर प्रमिता की ओर से हटकर उसकी दृष्टि वह्नि की ओर गई।

वह्नि मन्थर गति से पिता की ओर बढ़ा और बिना किसी प्रकार के उद्वेग का भाव प्रकट किये ही शान्तभाव से उसने पूछा—क्या अभी तक कहीं से कोई खबर नहीं आई बाबू जी ?

पिता के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वह्नि ने अपनी दृष्टि मयूख की ओर फेरी और पिता की ओर संकेत करके वह बोला—ये शायद भैया के वे ही मित्र मयूख बाबू हैं ?

हुताशन के मस्तक हिलाकर स्वीकारात्मक उत्तर देते ही वह्नि मयूख की ओर बढ़ा और उसकी ओर हाथ बढ़ाकर बड़े ही अनुराग के साथ बोला—आपके आने का समाचार पाकर भैया कितने प्रसन्न हुए थे ! आपसे यदि मुलाकात हो जाती तो कितने सुखी होते वे !

मयूख ने वह्नि से हाथ मिलाया और तीक्ष्ण दृष्टि से उसके मुँह की ओर ताकते हुए कहा—अग्नि कहाँ लापता हो गये ? क्या आपको उनके सम्बन्ध में कुछ मालूम नहीं हो सका अभी तक ?

वह्नि ने उदासीनभाव से कहा—कितनी ओर तो खोज की जा रही है ! मैं भी कई जगह से खोजकर आ रहा हूँ। परन्तु अभी तक तो कोई पता चला नहीं ! खोजते-खोजते मैं जाकर राजपिप्पला पहुँचा। सोचा था कि कहीं वे प्रमिता के पास न हों।

वह्नि की यह बात सुनकर मयूख ने एक बार तीक्ष्ण दृष्टि से उसके मुँह की ओर ताका, बाद को क्रमशः निपुणिका और प्रमिता की ओर भी उसने उसी प्रकार की दृष्टि से ताका। वह्नि के मुख पर उसे किसी प्रकार के उद्वेग का चिह्न तक नहीं दिखाई पड़ा। प्रमिता अपना मुख निपुणिका के वक्ष में छिपाये हुए थी, इससे उस पर मयूख की दृष्टि ही नहीं ठीक से पड़ सकी। किन्तु मयूख ने देखा कि निपुणिका का शरीर ज़रा-सा कमित हो उठा है। उसके मुख पर सङ्कोच की छाया उदित हो आई है और उसने अपनी दृष्टि नीची कर ली है। मयूख ने देखा कि इस दृष्टि से लज्जा और वेदना का भाव बिखरा पड़ रहा है।

मयूख के मन में यह बात आई—वह्नि साफ़ भूठ बोल रहा है, यह बात शायद उसकी मा को मालूम हो गई। इसलिए पुत्र की मिथ्या-वादिता के कारण वह लज्जा और सङ्कोच का अनुभव कर रही है।

वह्नि की बात सुनकर प्रमिता और भी उच्छ्वसित होकर रो पड़ी।

अपने नेत्रों का जल किसी को दृष्टिगोचर न होने देने के विचार से हुताशन घर के भीतर चले गये। निपुणिका ने भी प्रमिता को लिये हुए घर के भीतर प्रवेश किया। उन सबके पीछे-पीछे वह्नि भी गया।

मयूख ज़रा देर तक तो इधर-उधर करता रहा, बाद को वह वह्नि को मा के सामने खड़ा हुआ देखकर उन दोनों की उस समय की आकृति का अध्ययन करने के विचार से भीतर गया।

नवाँ परिच्छेद

स्नान और भोजन से निवृत्त होने के बाद सब लोग जब अपने-अपने कमरे में विश्राम करने गये तब मयूख अपने कमरे में बन्दी होकर विश्राम के सुख का उपभोग करने में समर्थ नहीं हो सका । अग्नि के कमरे में खूब ध्यान से खोजकर एक बार फिर देखने के लिए वह उस एकान्त कोने की ओर चला । कमरे के समीप पहुँचते ही उसके कान में वह्नि का कंठ-स्वर पहुँचा । बहुत ही कोमल और सान्त्वनापूर्ण स्वर में वह कह रहा था—व्यर्थ में रोओ न मेरी रानी ! रोने से लाभ क्या होगा ? जो जा चुका, वह रोने से लौट तो आयेगा नहीं ! सम्भवतः उनके अदृश्य होने का कोई ऐसा विशेष कारण है, जिससे कि वे लौटकर घर नहीं आ रहे हैं । भविष्य में आ सकेंगे, इसकी भी वैसी आशा नहीं है । कहीं अपघात से यदि उन्हें प्राणों से हाथ धोने पड़े हों तो भी कोई आश्चर्य नहीं है ।

जरा देर तक खड़े-खड़े ये बातें सुनने के बाद मयूख ने समझ लिया कि वह्नि प्रमिता को सान्त्वना देने का प्रयत्न कर रहा है । जरा आड़ में होकर उसने प्रमिता के रोने का शब्द सुना । उसके बाद ही मयूख के कान में प्रमिता की आवाज़ पहुँची—फिर ! कहती हूँ कि मेरे शरीर में हाथ मत लगाओ । यहाँ चारों ओर उनकी स्मृति बिखरी हुई मुझे दृष्टिगोचर हो रही है । ऐसे स्थान और अवसर पर दूसरे व्यक्ति के लिए मेरे हृदय पर अधिकार करना सम्भव नहीं है !

प्रमिता का उस समय का कंठ-स्वर भुँभलाहट और क्रोध से पूर्ण था ।

मयूख ने समझ लिया कि वह प्रमिता को सान्त्वना देने का प्रयत्न कर रहा है, किन्तु प्रमिता उत्तेजित हो रही है। वह अग्नि की खोज करने पर जोर देने लगी और बोली—इस तरह सन्तोष करके बैठ जाने पर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना करने के कारण हम लोग **व्यर्थ** में पाप के भागी होंगे। तुम उनकी खोज नहीं कर रहे हो, यह बहुत अनुचित बात है। दो दिन का बहुमूल्य समय तुमने मेरे यहाँ निरर्थक बिता दिया।

वह ने कहा—कितने आदमी तो खोज रहे हैं ! कौन-सी ऐसी जगह बची है, जहाँ खोजना आवश्यक है ?

इसके बाद ही मयूख को ऐसा लगा कि मानो प्रमिता रुष्ट होकर उठ पड़ी और उस कमरे से निकल रही है। इससे वहाँ से भागने के लिए पीछे की ओर घूमते ही प्रमिता का रोषपूर्ण स्वर उसके कान में पहुँचा—आह, क्या करते हो ? हाथ मत पकड़ो !

क्षण भर में मयूख को कमरे से उसके निकल आने की आहट मिली। इससे वह पैर बढ़ाता हुआ भागा।

घर से बाहर आकर टहलते-टहलते मयूख सोचने लगा कि अग्नि के अन्तर्धान होने में उसकी विमाता तथा सौनेले भाई का काफ़ी हाथ अवश्य है। किसी प्रकार का षड्यंत्र करके इन माता-पुत्र ने अग्नि को मार्ग के कंटक के समान हटाकर दूर कर दिया। परन्तु कौन-सा प्रमाण सामने रखकर इस तरह की अनहोनी बात लोगों के सामने मुँह से निकालूँ और सबके मन में इसे बैठाल सकूँ ?

मयूख टहल ही रहा था कि तेज़ी से पैर बढ़ाती हुई प्रमिता भीतर से निकल पड़ी और उसकी ओर ज़रा भी ध्यान न देकर अपनी धुन में ही आगे बढ़ने लगी। परन्तु उसके साथ-साथ बढ़कर मयूख ने उसे छोड़ा।

उसने प्रमिता को अपना परिचय दिया, साथ ही इस बात पर दुःख प्रकट किया कि हमारा आपका परस्पर परिचय कराने के लिए अग्नि उपस्थित नहीं है।

प्रमिता को मयूख से अश्रद्धा हो गई थी। उसने सोच रक्खा था कि ये निश्चिन्त होकर यहाँ खूब कसकर भोजन कर रहे हैं और बहुत जोर मारा तो ज़रा-सा इधर-उधर टहलने लगे। इसलिए उसने कुछ बातचीत करने की आवश्यकता नहीं समझी; ज़रा-सा ताककर वह फिर आगे की ओर बढ़ी। मयूख के यह पूछने पर कि आप कहाँ जा रही हैं, प्रमिता ने कुछ भुँभलाहट के साथ कहा—उनके भाई तथा मित्र-आदि सब जब खोजकर निश्चिन्त हो चुके तो मुझे ही खोजने के लिए निकलना पड़ेगा। मैं ज़रा इस वन में खोजकर देखती हूँ।

मकान के पीछे के द्वार से हाँकर प्रमिता ने वन में प्रवेश किया। मयूख सोच रहा था कि अकेली जाने का साहस न करके सम्भवतः मुझसे भी साथ में चलने को वह कहेगी; परन्तु प्रमिता ने उसकी ओर दृष्टिपात तक नहीं किया। इधर संकोचवश मयूख ने अपनी ओर से यह कहना उचित नहीं समझा कि मुझे भी साथ में ले लीजिए।

प्रमिता जिस ओर गई, उसी ओर ज़रा देर तक ताकते रहने के बाद टहलते-टहलते मयूख अस्तबल की ओर चला। परन्तु उसने जब देखा कि अस्तबल में वल्लि जा रहा है तब चुपके से जाकर वह अस्तबल के पास लगी हुई प्याल की ढेर में छिप गया। वहाँ से उसने सुना—

“ताराचन्द, ‘राकेट’ आज कैसा है ?”

“बहुत अच्छा तो है हुज़ूर ?”

कुछ क्षण तक वह्नि और ताराचन्द्र की कोई बात नहीं सुनाई पड़ी। अब उस ढेर से निकल आने के विचार से मयूख ने जैसे ही जरा-सा भाँककर देखा, वह्नि उगी ओर आता हुआ उसे दिखाई पड़ा। इससे मयूख जरा ओर आड़ में हो गया।

प्याल की ढेर के पास आकर वह्नि ने बड़ी जल्दी में दबे हुए कंठ से कहा—निकल पड़ो। बड़ा अच्छा अवसर है यह। कहीं कोई नहीं है। मैं घर में लौटा जा रहा हूँ। इसी बीच मैं तुम अपना कार्य समाप्त कर लो।

मयूख सूखी लकड़ी की तरह बिना हिले-डुले वहीं खड़ा रहा। यह कैसा मामला है! अब यहीं पर अग्नि के अदृश्य होने के कारण का भी आभास मिल जायगा।

बड़ी देर तक छिपे रहने के बाद भी मयूख को जब किसी की आहट न मिली, तब वह प्याल की ढेर से निकल आया और चारों ओर घूमकर देखने लगा कि इसमें कोई छिपा है या नहीं। परन्तु लट्ठ से स्थान-स्थान पर उस प्याल के ढेर को पीटकर भी वह उसमें किसी आदमी के छिपे रहने का पता न चला सका।

मयूख जिस समय प्याल की ढेर के चारों ओर घूमकर देख रहा था उसी समय एक आदमी एक घोड़े की बागडोर पकड़े हुए निकला और तेज़ी से पैर बढ़ाता हुआ बाहर की ओर चला। तेज़ घोड़ा भी उसके पीछे-पीछे चंचलभाव से चला जा रहा था। वह आदमी चलते-चलते जरा-सा घूमकर जरा-जरा देर के बाद मयूख की ओर ताक लिया करता; इससे मयूख अपने इस व्यर्थ प्रयत्न के लिए कुछ लज्जा का-सा अनुभव करने लगा। ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए, यह निश्चय न कर सकने के कारण

कुछ अधीरता का-सा अनुभव करता हुआ मयूख वहाँ से वल्लि की खोज में चला ।

मयूख ने आकर देखा तो वल्लि द्वार के सामने कुछ व्यग्र और चंचलभाव से टहल रहा था । उसके सामने की ओर बढ़ने पर भी वल्लि ने मयूख की ओर जरा-मा देखा तक नहीं, इससे मयूख ने भी उससे बोलना उचित नहीं समझा, वह फूलों की क्यारियों की ओर बढ़ गया और इस प्रकार का भाव दिखाने लगा कि मानो घूम-घूमकर वह फूलों की बहार देख रहा है ।

जरा ही देर के बाद मयूख ने देखा कि ताराचन्द के साथ शोर-गुल करते हुए कई नौकर आ पहुँचे । वे सब बहुत अधिक व्यग्रता का भाव प्रदर्शित करते हुए एक साथ बोल उठे—फिर बहुत बड़ा नुकसान हो गया हुआ, फिर बहुत बड़ा नुकसान हो गया । राकेट हुआ, राकेट !

विस्मय का भाव प्रकट करते हुए वल्लि ने कहा—ऐं ! राकेट ! कहाँ गया ? कहीं छुड़ाकर भाग तो नहीं गया ?

वल्लि को इस प्रकार का विस्मय का भाव प्रकट करते हुए देखकर मयूख उसकी मनोवृत्ति पर दुःखी होने लगा । उसने सोचा कि प्याल की ढेर में छिपे-छिपे मैंने इसकी जो बातें सुनी हैं, उनसे इस राकेट के गायब होने का बहुत अधिक सम्पर्क है । मेरे देखते-देखते वह गायब भी हुआ है । परन्तु उस समय मैंने यही समझा था कि कोई साईस शायद इसे टहलाने के लिए ले जा रहा है ।

वल्लि के इस प्रश्न के उत्तर में ताराचन्द ने कहा—नहीं हुआ, घोड़ा भगा नहीं, चोर उसे खोल ले गया है, साथ में जीन-लगाव तथा उसकी साज वगैरह भी सब ले गया है ।

वल्लि बोल उठा—तब तो पिता जी को इसकी सूचना देनी चाहिए ।

बाहर का कोलाहल सुनकर हुताशन भी उतावली के साथ भीतर से निकल आये। उन्होंने सोचा था कि शायद अग्नि का कोई समाचार मिल गया है। परन्तु जब उन्होंने राकेट के गायब होने का हाल सुना तब वे और भी दुःखी हुए। उन्होंने कहा—शायद इस घर में अनिष्ट ही होता जायगा। पहले अग्नि गायब हुआ, बाद को उसका घोड़ा भी गायब हो गया। देखें, अब और क्या-क्या होता है ? अन्त में दुःखी भाव से वे भीतर चले गये।

मयूख यद्यपि निश्चित रूप से जानता था कि घोड़ा वह्नि के षड्यंत्र से ही गायब हुआ है; किन्तु कोई प्रमाण न होने के कारण वह उसके पिता के सामने यह बात मुँह से निकालने का साहस न कर सका।

दसवाँ परिच्छेद

वन में बड़ी देर तक भटकने के बाद प्रमिता शोकाकुल भाव से लौट आई। उसे देखते ही यह अनुमान किया जा सकता था कि निर्जन वन में एकान्त पाकर यह खूब जी खोलकर रोती रही है। उसकी रूप-रेखा से ही यह स्पष्ट था कि प्रमिता की यह यात्रा निष्फल हुई है, इसलिए उससे किसी ने कुछ पूछा नहीं। शोक, दुःख और चिन्ता से व्यग्र होकर सभी लोग गम्भीरभाव से बैठे रहे। स्वयं प्रमिता भी कुछ नहीं बोली। केवल वल्लि ने प्रमिता के मुँह की ओर ताकते हुए कहा— कोई अत्यन्त आवश्यक कार्य आ जाने के कारण वे घर से चले गये हैं, किसी से कुछ बतलाने का अवसर उन्हें नहीं मिला। अवकाश न मिलने के कारण सम्भवतः वे हम लोगों को कोई पत्र भी नहीं लिख सके। कोई आश्चर्य नहीं कि उनका पत्र रास्ते में ही गुम हो गया हो। पोस्ट-आफिस के कर्मचारियों की असावधानी के कारण कितने पत्र रास्ते में नष्ट हो जाया करते हैं !

मनुष्य का मन रहस्यों का एक अद्भुत आगार है। वह कभी-कभी अकारण और कभी-कभी नाम-मात्र के कारण से शङ्कित हो उठता है और तिल को ताड़ करके विभीषिका की सृष्टि कर लेता है। इसके विपरीत चाहे वह कितनी ही अधिक चिन्ता में पड़ा हो, उसके हृदय को कितने ही भयंकर संदेह और शोक का भाव क्यों न आच्छादित किये हो; किन्तु उस अवसर पर यदि दो-चार आशाजनक बातें सुनने को मिल जायें तो उनका अवलम्बन करके वह सान्त्वना प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, उसे इस बात पर विचार करने की प्रवृत्ति नहीं होती कि

यह आशाजनक बात सम्भव है या नहीं। इसी प्रकार वह्नि की यह आशा-जनक वाणी हुताशन और निपुणिका को सान्त्वना देने में बहुत कुछ समर्थ हो गई। हुताशन ने कहा—कोई ऐसी ही बात हो गई होगी। अन्यथा कोई ऐसा कारण तो नहीं मालूम पड़ता कि वह स्वयं छिपकर भाग गया हो, या किसी ने गुप्त रीति से उसकी हत्या कर डाली हो।

प्रमत्तभाव से पुत्र के मुँह की ओर ताकती हुई निपुणिका बोली—तेरे मुँह में फूल-चन्दन पड़े। भगवती जगज्जननी करें कि तेरी ही बात सच हो। अग्नि कुशलपूर्वक घर लौट आयेगा तो धूम-धाम से मैं भगवती की पूजा करूँगी।

वह्नि की बात पर विश्वास न करके प्रमिता मस्तक हिलाती हुई बोली—मेरा मन तो यही कहता है कि गायद वे कहीं किसी संकट में पड़ गये हैं। यदि मैं उनके साथ में रहकर उनकी विपत्ति में भाग ले पाती !

प्रमिता उस समय अपने आपको बहुत ही असहाय अनुभव कर रही थी। उसके हृदय में बार-बार यही बात आती कि ऐसे अवसर पर मेरी कोई भी शक्ति काम नहीं दे रही है। इस चिन्ता से वह बहुत ही अधीर, बहुत ही व्यग्र हो उठी।

मयूख कुछ बोला नहीं। उसके हृदय में यह धारणा क्रमशः दृढ़ होती जा रही थी कि वह्नि और उसकी मा इन दोनों ही का किसी गुप्त षड्यंत्र से बहुत गहरा सम्बन्ध है और ये ही लोग अग्नि के गायब हो जाने या उसके प्राणनाश के मूल कारण हैं। अग्नि का पड़ने का कमरा मानो मयूख को प्रबलभाव से अपनी ओर आकर्षित करने लगा। उसके मन में जो धारणा निश्चित रूप से जम गई थी, वह और भी अधिक दृढ़ होती गई। उसने यह निश्चय कर

लिया कि अग्नि के पढ़नेवाले कमरे में ही उसकी मृत्यु के रहस्य का सूत्र छिपा हुआ है, अतएव इस कमरे को खूब सावधानी के साथ देखते रहना चाहिए ।

मयूख ने देखा कि इस समय सभी लोग एक ही कमरे में जमे हुए हैं। इसने वह चुपचाप वहाँ से खिसक आया। उसने सोचा कि इस समय दिन के उजाले में अग्नि के कमरे को खोजकर देखने में बड़ी सुविधा होगी।

मयूख जब अग्नि के पढ़ने के कमरे के सामने आया तब डरते-डरते बहुत दबे-पाँव से द्वार के पाम गया और उसमें जो चुल्ला लगा था उस पर उसने हाथ रख दिया। चुल्ला भीगा हुआ नहीं था। झुककर उसने देखा तो उसमें कोई दाग भी नहीं लगा था। सवेरे खूब घिसकर माँजने के बाद वह धो डाला गया था। इससे मयूख का संदेह और भी दृढ़ हो उठा। वह सोचने लगा कि दरवाजों में लोहे के जो चुल्ले लगे हैं, वे साफ़ रखने के लिए नियमितरूप से घिसकर माँजे और धोये जाते हैं या केवल रक्त का दाग मिटाने के ही लिए यह विशेषरूप से माँजा-धोया गया है।

दरवाजे को ठेलकर मयूख ने कमरे के भीतर प्रवेश किया। ध्यानपूर्वक देखने पर उसे मालूम हुआ कि कमरे में जो-जो चीजें रक्खी हुई थीं, वे वैसी की वैसी रक्खी हैं, कोई भी चीज़ किसी ने इधर-उधर नहीं की। केवल एक खिड़की भर बन्द कर ली गई है। कल रात को मयूख ने जब कमरे में प्रवेश किया था तब वह खिड़की खुली हुई थी। उस समय उसने उसकी ओर विशेष ध्यान देकर देखा नहीं था! परन्तु इस समय जब उसने देखा कि यह

खिड़की बन्द कर दी गई है तब उसे निश्चय हो गया कि निस्सन्देह इस खिड़की के साथ रहस्य का बहुत ही घनिष्ठ सम्पर्क है ।

कमरे में जितनी वस्तुएँ थीं, उन सबको मयूख एक-एक करके बहुत ही ध्यान से देखने लगा । उसने देखा कि कमरे की दीवारें बहुत मोटी-मोटी हैं । इससे जगह-जगह पर धक्का दे-देकर वह देखने लगा कि कहीं से धम-धम की आवाज तो नहीं आती । ऐसा वह इसलिए कर रहा था कि दीवार में यदि कहीं कोई चोर-कोठरी हो तो वह मालूम पड़ जाय; क्यों कि दीवार जहाँ पोली होगी वहाँ से धम-धम की आवाज अवश्य होगी । कमरे भर में घूम-घूमकर देखते-देखते मयूख की दृष्टि एक बड़े से टेबिल पर पड़ी । उस टेबिल के ऊपर एक सुजनी पड़ी हुई थी, जिस पर फूलपत्ती का बहुत ही उत्तम ढंग का काम किया गया था । सुजनी टेबिल के पावों के नीचे तक भूल रही थी । मयूख कल इस कमरे की प्रायः सभी चीजें देख गया था, केवल इतना ही उसने नहीं देखा था कि इस टेबिल के नीचे क्या है ?

टेबिल के ऊपर की सुजनी का एक किनारा उठाकर मयूख ने जव भाँककर देखा तो टेबिल के नीचे लकड़ी का एक बड़ा-सा सन्दूक रक्खा हुआ दिखाई पड़ा । उस सन्दूक की लम्बाई इतनी थी कि आदमी उसमें आसानी से लेट सकता था । चौड़ाई में भी वह अधिक नहीं था । सन्दूक बिल्कुल नया नहीं था । ऊपर उसके पीतल की चद्दर जड़ी हुई थी और पीतल का ही उसमें कब्जा लगा हुआ था । उसी से भिड़ाकर दीन का एक और सन्दूक रख दिया गया था, जो सामने की ओर से उसे ढँके हुए था । इन सन्दूकों को देखकर मयूख एक अद्भुत प्रकार की उत्तेजना का अनुभव करने लगा । उसका हृदय धड़कने लगा । बिजली की-सी तेजी के साथ उसके हृदय में यह प्रश्न उदित

हो आया कि क्या अग्नि की हत्या करके इसी बक्स में उसे बन्द कर दिया गया है ?

बक्स की ओर देखते ही मयूख कांप उठा। परन्तु उसे खोलकर देखने से पहले उसे यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि इस सम्बन्ध में हुताशन से आज्ञा ले ली जाय। कमरे में जाकर मयूख ने जब देखा तब हुताशन और निपुणिका केवल दो ही व्यक्ति बैठे हुए थे। वहाँ पहुँचते ही मयूख ने कहा—चाचा जी, मेरा एक प्रस्ताव है। अग्नि के पढ़ने-वाले कमरे में लकड़ी का जो एक सन्दूक ।

मयूख की बात काटकर निपुणिका उनावली के साथ बोल उठीं—
उस सन्दूक में क्या खोजना है ?

निपुणिका के मुख पर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि जमाये हुए मयूख ने पूछा—क्या है उस सन्दूक में ?

निपुणिका ने उत्तर दिया—अग्नि के ही छुटपन के स्मृति-चिह्न हैं उसमें। कुछ फटी-पुरानी पुस्तकें हैं और कुछ टूटे हुए खिलौने। घर में ही अग्नि कहीं छिपा है, यह कल्पना अपने मन से तुम लोग निकाल दो मयूख ।

इसके बाद पति की ओर ताककर वे कहने लगीं—बह्नि ने जो कुछ कहा है, उसी पर विश्वास करने का हम लोगों को प्रयत्न करना चाहिए। अग्नि अवश्य किसी आवश्यक कार्य से कहीं चला गया है। सम्भवतः उसने सूचना भी दी है; किन्तु चिट्ठी हम लोगों के पास तक पहुँच नहीं पाई। आश्चर्य नहीं कि वह आज ही लौटकर आ जाय, उस समय हमें इस बात के लिए लज्जित होना पड़ेगा कि हम उसके सम्बन्ध में इस प्रकार की ऊँटपटाँग की कल्पनाएँ कर रहे थे।

अपनी रोषमयी दृष्टि निपुणिका के मुख पर गड़ाकर मानो उसे मिथ्यावादिनी प्रमाणित करने के ही विचार से मयूख ने ज़रा कुछ उच्च स्वर से कहा—इसे निश्चय समझिए आप कि अग्नि फिर लौटकर नहीं आयेगा ।

हुताशन और निपुणिका ने अवाक् होकर मयूख की ओर ताका । मयूख क्रुद्धभाव से कमरे से निकलकर तेज़ी के साथ चला गया ।

मयूख एकान्त कमरे में पड़े-पड़े समस्त दिन इसी बात पर विचार करता रहा कि निपुणिका और वह्नि ने मिलकर जो षड्यंत्र कर रखा है, उसके रहस्य का किस प्रकार उद्घाटन किया जाय । दूसरे वक्त जलपान करने के बाद वह फिर अग्नि के पढ़ने के कमरे की ओर चला । उसने निश्चय किया कि मैं स्वयं उस सन्दूक को खींचकर देखूंगा कि किसी प्रकार वह खोला जा सकता है या नहीं ?

कमरे की ओर जाने समय रास्ते में वह्नि उसी ओर से लौटकर आता हुआ मिला । मयूख की बगल से वह निकल गया । दोनों में से कोई भी कुछ बोला नहीं । वह्नि को देखते ही मयूख ने ताड़ लिया कि यह इस समय बहुत ही व्यग्र है । कोई बहुत ही भयंकर चिन्ता इसके हृदय में वर्तमान है और यह सम्भवतः अग्नि के पढ़नेवाले कमरे की ही ओर से आ रहा है ।

कमरे के पास पहुँचकर मयूख ने देखा तो उसमें ताला लगा हुआ था । अब मयूख के मन में यह बात आई कि निपुणिका की ही सलाह से यह ताला कमरे में लगाया गया है और कदाचित् अभी इसे लगाकर ही वह लौटा जा रहा है । मयूख यह भी ताड़ गया कि इच्छानुसार किसी भी समय जाकर मैं कमरे की जाँच न कर सकूँ, इसी उद्देश्य से निपुणिका ने इसमें ताला लगाने का पुत्र को आदेश किया है ।

यही सब सोचते-सोचते मयूख ने स्थिर किया कि इस कमरे में ही सारा रहस्य छिपा हुआ है, इसलिए इस पर बराबर दृष्टि रखनी होगी।

मयूख के मन में दृढ़तापूर्वक यह बात जमती गई कि कोई भयंकर पाप छिपा महल में छिपाया गया है, साथ ही यहाँ कुछ ऐसे व्यक्ति अवश्य हैं, जिनके लिए अग्नि का अदृश्य हो जाना कोई अज्ञात रहस्य नहीं है। परन्तु वह किसी भी ऐसे सूत्र का आविष्कार नहीं कर सका जो इस मंदिर का समर्थन करके इसे प्रमाणित कर पाता।

रात्रि में भोजन आदि से निवृत्त होने पर मयूख ने सोचा—आज रात भर अग्नि के कमरे की निगरानी में रहूँगा। आधी रात के समय वह अपने कमरे से चुपके से निकला। जरा दूर बढ़ते ही उसने देखा कि रास्ते में स्थान-स्थान पर जो कपाट हैं, वे सब बन्द हैं। वे कपाट बहुत बड़े थे और उन्हें खोलने पर इतने जोर का शब्द होने की सम्भावना थी, जिससे कि घर के सभी लोगों की निद्रा भंग हो जाने की आशंका थी, साथ ही मयूख का गुप्त रीति में निगरानी रखने का जो उद्देश्य था उसका भी नष्ट हो जाना अनिवार्य था। इससे वह अपने कमरे में लौट आया।

कमरे के द्वार पर टँगा हुआ पर्दा और पलंग पर बिछा हुआ चद्दर उतार कर मयूख ने उन्हें रस्मी की तरह बट लिया और उसका एक सिरा पलंग के एक पावे में बाँधकर खिड़की से लटका दिया। उस रस्सी की ही सहायता से मयूख किसी प्रकार नीचे उतर आया। फूल की एक क्यारी में छिपा हुआ वह बैठा रहा। इतने में उसके मस्तक के ऊपर ही एक खिड़की के खुलने का शब्द हुआ। फूल की क्यारी में छिपे-छिपे ही मस्तक उठाकर चन्द्रमा के प्रकाश में उसने देखा कि अग्नि

के कमरे की खिड़की खुल गई है। उस खिड़की की चौखटों के बीच में गोरे रंग का एक मुँह है और उस मुँह के चारों ओर बहती हुई काली रोशनाई के समान खुले हुए बाल भूल रहे हैं। देखने में रमणी का वह मुख ऐसा जान पड़ रहा था कि मानो फ्रेम में कोई तसवीर जड़ी हुई है। वहीं बैठे-बैठे मयूख ने देखा कि ज़रा देर तक खिड़की के पास खड़ी रहने के बाद वह रमणी धीरे-धीरे वहाँ से हट गई।

मयूख के मन में अब यह बात आई कि कदाचित् नीचे बगीचे में कोई आदमी छिपा हुआ है और उसी से गुप्त रूप से मिलने के लिए रमणी ने इस प्रकार का संकेत करके उसका आह्वान किया है। इससे वह छिपे-छिपे किसी के पैरों की आहट के लिए निरर्थक प्रतीक्षा करता रहा। खिड़की भी बराबर उसी प्रकार खुली रही। एक घंटा बीता, दो घंटा बीता, तीन घंटा बीत गया ! अन्त में अधीर होकर मयूख फूलों की क्यारी से निकल आया और उस चद्दर की रस्सी के सहारे से ऊपर चढ़ गया। कमरे में जाकर उसने रस्सी खींच ली। चद्दर खोलकर उसने खूब चुन कर तहाया। पर्दे को भी खूब खींच-खींचकर उसकी सिकुड़न बहुत कुछ ठीक कर दी और यथास्थान टाँग दिया। तब अग्नि के कमरे में जाने के विचार से उसने बहुत धीरे से अपने कमरे का द्वार खोला।

ज़रा ही दूर तक अग्रसर होने पर मयूख ने देखा कि अग्नि के कमरे की ओर जाने की गली के जो कपाट कुछ समय पहले बन्द थे, वे अब खुले हुए हैं। इससे उसका कौतूहल और भी अधिक बढ़ा। अग्नि के कमरे के सामने पहुँचकर उसने देखा तो उसमें ताला लगा हुआ था। अब मयूख ने अनुमान किया कि जिस रमणी ने इस कमरे में प्रवेश किया था, उसी के पास इसकी कुंजी है। इतनी देर तक वह

कमरे में थी; जाते समय कमरे में ताला लगाती गई है। किन्तु क्षण ही भर के बाद उसके मन में फिर आया—सम्भव है कि यह ताला बराबर कमरे में लगा रहता हो और भीतर कोई ऐसा गुप्त रास्ता हो, जिससे होकर रमणी ने इस कमरे में प्रवेश किया था।

मयूख ने निश्चय किया कि दिन में कमरे को खोलकर खूब सावधानी से देखूँगा तब शायद पता चल सकेगा कि इसमें कोई गुप्त रास्ता है या नहीं। यह सोचकर वह अपने कमरे में लौटा जा रहा था; इतने में किसी कमरे से रमणी की कंठ-ध्वनि सुनाई पड़ी। ऐसा मालूम पड़ा कि मानो वह भय से व्याकुल होकर चिल्ला उठी है !

मयूख चौंक पड़ा। भयभीत होकर अपने कमरे की ओर तेजी के साथ पैर बढ़ाते-बढ़ाते वह सोचने लगा—अब यह कैसा बीभत्स रहस्य है ! यह स्त्री है कौन ? क्या कारण है जो यह इस प्रकार चिल्ला उठी है ?

मयूख को इस बात की बड़ी इच्छा हो रही थी कि इसका रहस्य खोज निकालने का उद्योग करना चाहिए। परन्तु क्षण-भर के बाद ही फिर उसके मन में यह बात आई कि मैं केवल मेहमान भर यहाँ का हूँ। अभी अधिक समय मुझे यहाँ आये भी नहीं हुआ, इससे सम्भवतः मेरा जाँच करना ठीक न होगा।

मयूख बीच रास्ते में ठमककर खड़ा हो गया और वह यही सब तर्क-वितर्क करने लगा। इतने में घर के बहुत-से लोगों के जाग उठने तथा दरवाजे खोल-खोलकर बाहर निकलने की आहट उसे मिली। मयूख ने हुताशन का भी कंठस्वर सुना। वे बहुत ही व्यस्त और व्यग्र होकर पत्नी को पुकारते-पुकारते अपने कमरे से निकले आ रहे थे—क्यों जी, क्या हुआ ? स्वप्न तो नहीं देख रही हो ? डर तुम क्यों गई हो ?

निपुणिका स्वामी के कमरे के पासवाले कमरे में ही रहा करती थी। उसी कमरे से फिर एक बार भय से व्याकुल होकर चीत्कार करने की आवाज़ आई, उसके बाद ही एक बड़े जोर का ठहाका सुनाई पड़ा। इस प्रकार बहुत ही जोर से हँसने की आवाज़ सुनते ही मयूख के हृदय का रक्त मानो जम गया।

घर में जितने भी नौकर और नौकरानियाँ थीं, वे सभी भयभीत होकर हाथ में लालटेन लिये हुए अस्त-व्यस्त-भाव से दौड़ पड़ीं। उन सबके आगे-आगे मयूख भी बढ़ा।

हुताशन ने धक्का देकर पत्नी के कमरे का द्वार खोल दिया। हाथ में लालटेन लिये हुए एक बहुत बड़ा दल उस कमरे में प्रविष्ट हुआ। लालटेन के उजाले में मयूख ने देखा कि निपुणिका घुटनों के बल भूमि पर बैठी हुई हैं और हिस्टीरिया के प्रबल आक्रमण से उनका शरीर थर-थर काँप रहा है। उनके काले काले बाल कन्धे पर से होकर सारे शरीर पर लटक रहे हैं।

निपुणिका की यह मूर्ति देखकर मयूख चकित हो गया। यही मूर्ति तो वह अभी कुछ समय पहले अग्नि के कमरे की खिड़की के सामने देख चुका था। इतनी रात्रि के समय अग्नि के कमरे में उनके जाने का कारण क्या है और वहाँ से लौटकर आने ही इतने जोर से रुलाई और हँसी ही उन्हें क्यों आई?

हुताशन के स्पर्श करते ही निपुणिका उनकी गोद में मूर्च्छित होकर लोट पड़ीं। बड़ी कठिनाई से ले जाकर लोगों ने उन्हें बिस्तरे पर सुलाया। इधर अपने कमरे में आकर मयूख इसी समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करने लगा, यद्यपि समस्या उत्तरोत्तर जटिल ही होती गई।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

सवेरा होते ही छिपा महल के सभी आदमी अपने-अपने काम में लग गये। रात्रि के समय निपुणिका को जो हिस्टीरिया हो गया था उसमें किसी को कोई विशेष या असाधारण बात नहीं मालूम पड़ी। लोगों ने यही अनुभव किया कि अग्नि के वियोग के ही कारण इनकी मानसिक अवस्था में विकार आ गया है। लगातार तीन दिनों से शोक के आवेग को रोक रखने का उद्योग ये करती आरही हैं। उसी की यह प्रतिक्रिया है, जो एक साथ ही उन्हें हँसी और रुलाई दोनों आई और बाद को वे मूर्च्छित हो गईं। परन्तु मयूख के मन में यह संदेह जम गया था कि इसमें एक बहुत बड़ा संदेह छिपा हुआ है। इस कारण वह चंचल हो उठा था। सारे घर में वह बराबर घूमता रहता और जो कोई मिलता, उसी से कोई न कोई बात छेड़ देता। इस प्रकार लोगों की बातचीत से भी उसे गुप्त रहस्य का ज़रा-ज़रा आभास मिला करता।

नौकरों तथा नौकरानियों से बातचीत करने पर मयूख को इतना मालूम हो गया कि प्रमिता के आविर्भाव के बाद से ही निपुणिका का हृदय अग्नि की ओर से कुछ-कुछ खिंचने लगा है। बाद को उसके प्रति उनके मन में क्रमशः ईर्ष्या-द्वेष की वृद्धि होती ही गई। उसे यह भी मालूम हो गया कि प्रमिता हुताशन के एक मित्र की कन्या है और अग्नि जब विलायत में था, तब वहि से उसकी घनिष्ठता होने लगी थी और सम्भवतः उन दोनों में परस्पर प्रणय का भी सञ्चार हो गया था। परन्तु विलायत से लौटकर आते ही अग्नि ने उसके हृदय का

अपहरण कर लिया। इधर हुताशन ने भी एक विल तैयार करके अपनी समस्त सम्पत्ति अग्नि को ही दान कर दी है, निपुणिका और वह्नि के लिए उन्होंने कुछ मासिक की ही व्यवस्था की है। प्रमिता भी एक धनवान् की कन्या है और पिता के विल के अनुसार वह अपनी आधी पैत्रिक सम्पत्ति की अधिकारिणी है। इसलिए वह्नि के साथ यदि उसका विवाह हो जाता तो अनायास ही एक बहुत बड़ी सम्पत्ति उसके हाथ में आ जाती। परन्तु अग्नि की ओर उसका विशेष आकर्षण होने के कारण उसके लिए यह आशा भी नहीं रही। इसलिए निपुणिका अग्नि को ही वह्नि की उन्नति का बाधक समझती हैं। इसी लिए इधर कुछ दिनों से सौत के लड़के की ओर से विमाता का चित्त प्रतिकूल हो उठा है।

उपर्युक्त बातें मालूम कर लेने पर मयूख ने मन में यह निश्चय कर लिया कि वह्नि के मार्ग के कंटक-स्वरूप अग्नि को दूर कर देने के उद्देश्य से षड्यंत्र अवश्य किया गया है और उस षड्यंत्र की प्रधान नेत्री निपुणिका ही हैं। इतने भयंकर पाप का आचरण करने के कारण उनके मन में जो अत्यधिक ग्लानि उत्पन्न हुई है, वही कल रात्रि में हिस्टीरिया के रूप में प्रकट हुई थी। इधर प्रातःकाल से ही मयूख को बहुत ही उद्विग्न देखकर प्रमिता उसका मनोभाव ताड़ गई और उसे उदासीन देखकर पहले जो उसके मन में मयूख के प्रति अश्रद्धा का भाव उत्पन्न हुआ था, वह जाता रहा। इससे अवसर देखकर वह मयूख के पास गई और बहुत ही विनम्रभाव से नमस्कार करके बोली—क्या आपकी यह धारणा है कि उनके लापता होने का कारण यहीं इस मकान से मालूम किया जा सकेगा ?

बहुत ही गम्भीर होकर मयूख ने फिस-फिस करके कहा—मेरे मन में तो यह धारणा क्रमशः बद्धमूल होती जा रही है.....।

कुछ आवश्यक बातें करने के लिए मयूख प्रमिता को लेकर बाहर बगीचे में गया। एक कोने में लताओं का एक कुंज था, उथी में जाकर वे दोनों पत्थर के आसन पर बैठे। मयूख के पूछने पर प्रमिता ने बतलाया कि हुताशन-ताऊ तथा मेरे पिता जी की मित्रता बहुत पुरानी है। परन्तु राजपिप्पला में आकर जब ये राजा के यहाँ कार्य करने लगे तब एक स्थान पर रहने का अवसर मिलने पर दोनों ही परिवारों में बहुत अधिक घनिष्ठता हो गई। उस समय वे विलायत में थे।

मयूख के पूछने पर लज्जा से मुँह लाल किये हुए प्रमिता ने यह भी स्वीकार किया कि पहले-पहल वह्नि से ही मेरा प्रेम हुआ था; क्योंकि उन्हें मैंने कभी देखा नहीं था। वह्नि की भव्य आकृति तथा असाधारण साहस देखकर उस समय मैं बहुत प्रभावित हुई थी। वह भी पहली मुलाकात से ही मेरे प्रति प्रेम प्रकट करने लगा था। तब से उसका यह प्रणय-निवेदन बराबर जारी रहा। परन्तु उसका व्यवहार इतना असभ्यतापूर्ण था कि मैं तंग आ जाती और कभी-कभी क्रुद्ध भी हो उठती। बाद को घुड़दौड़ में जुआ खेलकर तथा पिता से लड़-भगड़कर वह्नि कुछ दिनों तक गायब रहा, उसने मेरी खोज-खबर नहीं ली। अन्त में विलायत से लौटकर आने पर उसके भैया ने उसकी खोज की, पिता से भी बहुत-कुछ कहा-सुना और उसे घर में लाकर रक्खा। वह्नि फिर तुरन्त ही मेरी ओर आकर्षित हुआ। परन्तु उसके भैया को देखते ही मैं उनके महत्त्व को पहचान गई। अवसर पाकर उन्होंने भी मेरे प्रति प्रेम प्रकट किया। वह्नि तथा उनकी माता का बराबर यह उद्योग रहा कि उनकी ओर मेरा ध्यान न जाने पाये; किन्तु मैं इतनी मूर्ख तो हूँ नहीं कि अमूल्य रत्न की उपेक्षा करके केवल ऊपरी तड़क-भड़क के कारण काँच की ओर दौड़ती !

प्रमिता ये बातें बड़े क्लेश से कह रही थी। आँखें उसकी भर आई थी। मयूख के पूछने पर फिर उसने कहा—यह सुनकर कि हम लोगों में परस्पर प्रणय का संचार हो गया है, मेरे भाता-पिता तथा उनके पिता बहुत ही प्रसन्न हुए थे। केवल उनकी मा उस समय चुप होकर रह गई थीं। बाद को मुझे एकान्त में पाते ही ताना-सा देती हुई वे कहने लगीं—तुमने अपना मन पक्का कर लिया है या बाद को अग्नि को भी छोड़कर किसी और को पसंद करोगी ? वह्नि के हिस्से की सभी वस्तुओं पर तो अग्नि अपना अधिकार जमाता जा रहा है; यहाँ तक कि उसने उसकी वाग्दत्ता वधू तक को नहीं छोड़ा।

मयूख चिन्ता में पड़ गया। क्षण भर की निस्तब्धता के बाद उसके पूछने पर प्रमिता ने कहा—विवाह के सम्बन्ध में मुझमें और वह्नि में कभी कोई बातचीत नहीं हुई थी। परन्तु लोगों ने समझ रक्खा था अवश्य कि वह्नि के ही साथ मेरा विवाह होगा। मेरी भी ऐसी ही धारणा हो गई थी। अन्त में उसके भाई के साथ मेरा विवाह स्थिर हो जाने पर भी वह मन में यही समझे बैठा रहा कि मानो मैं उसी का प्रणय प्राप्त करने की कामना से बैठी हूँ। वह अपने दुस्साहसपूर्ण तथा असभ्य व्यवहार से मुझे सदा ही परेशान किया करता था, परन्तु उसके भाई से मैंने कभी उसकी कोई शिकायत नहीं की।

मयूख के प्रश्नों की सूची तो समाप्त होने को थी नहीं। प्रमिता भी बराबर उत्तर देती गई। उसने कहा—ठीक प्रतिद्वंद्विता की बात तो नहीं कही जा सकती; परन्तु एक स्त्री के व्यवहार के कारण वह्नि अपने भाई से चिढ़ा करता था। उस स्त्री का नाम था लालिमा। वह

थी एक आश्रयहीन बाल-विधवा । सूरत के एक भाटिया सौदागर के साथ उसके पिता कलकत्ता से आये थे इस देश में । उसी सौदागर के यहाँ साधारण वेतन पर वे क्लर्क का काम करते थे । एक बार प्लेग के कारण उसके माता-पिता दोनों मर गये । तब किसी आत्मीय-स्वजन का पता न चल सकने पर भाटिया ने लालिमा को 'सारदा-सदन विधवा-आश्रम' में भर्ती करा दिया । इधर वहि की मा के साथ में, सहायता के लिए, किसी निराश्रय विधवा को रखने का निश्चय किया गया । इससे सारदा-सदन के अधिकारियों ने यह सोचकर कि बंगाली की लड़की बंगाली के घर में अच्छी तरह रह सकेगी, ताऊ जी की माँग के उत्तर में उसे यहाँ भेज दिया ।

मयूख लालिमा के सम्बन्ध की सारी बातें जानने के लिए उत्सुक हो उठा । उसका कौतूहल निवृत्त करने के विचार से प्रमिता ने कहा—लालिमा न तो रूपवती है और न वह नितान्त ही कुरूप है । शरीर उसका कुछ साँवले रंग का है । मुख की आकृति भी साधारणतः बुरी नहीं है । परन्तु उसकी यह बात आरम्भ में ही मुझे बुरी मालूम पड़ने लगी कि वह पुरुषों के मुँह बहुत अधिक लगती है । पढ़ना-लिखना वह जानती है । माता-पिता उसे इस विचार से पढ़ा रहे थे कि विधवा लड़की है, साक्षर रहेगी तो सम्भव है कि आगे चलकर निर्वाह के लिए चार पैसे कमा ले । सारदा-सदन में भी वह पढ़ती रही । बाद को यहाँ आने पर ताई जी तथा वहि से वह पढ़ा करती थी ।

“तो यह कहो कि वहि उसे पढ़ाया करता था, इसी लिए आपका उस पर विद्वेष है ।”

झोर से मस्तक हिलाती हुई प्रमिता कहने लगी—नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं । लालिमा तो वहि के भाई के ही साथ घनिष्ठतः

स्थापित करने के लिए अधिक प्रयत्न किया करती थी। उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह तरह-तरह की भाव-भंगियाँ प्रदर्शित किया करती थी। वह्नि को इससे बहुत चिढ़ होती थी। लालिमा से इस कारण उसकी खटपट होती ही रहती। कभी-कभी इसके लिए अपने भाई को भी फटकार देने में वह आनाकानी नहीं करता था।

मयूख ने फिर ज़रा-सा हँसकर कहा—मैं ठीक-ठीक टटोल नहीं पाया हूँ आपकी कच्ची नस ! शायद वह्नि के भैया की ओर उसका आकर्षण होने के ही कारण आपका उस पर इतना रोष है !

म्लान मुख से ज़रा-सा हँसने का प्रयत्न करती हुई प्रमिता कहने लगी—आप अब चाहे जो कहें; किन्तु लालिमा का हाव-भाव देखते ही मेरा कलेजा जल उठा करता था। अस्तु, अन्त में उससे अत्यन्त ही रुष्ट होकर अहल्या नामक नौकरानी तथा ताम्बे नामक नौकर के साथ ले जाकर वह्नि उसे सारदा-सदन में छोड़ आया।

मयूख ने पूछा—उस समय अग्नि का मनोभाव कैसा हुआ था ?

प्रमिता ने कहा—वे बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने बाद को मुझसे कहा था कि लालिमा का आचरण मुझे भी बुरा लगता था अवश्य; किन्तु मैं उसे हँसकर इसलिए टाल देता था कि कहीं मा भी रुष्ट होकर उसे निकाल न दें।

मयूख ने कहा—अग्नि की इस बात पर आपको विश्वास हो गया था ? यदि कहीं वे आपका मन रखने के ही लिए वैसी बात कहते रहे हों ?

प्रमिता रोष में आकर कहने लगी—तब आप अपने मित्र को पहचानते नहीं हैं। आपको अभी मालूम नहीं है कि कितना उदार है उनका हृदय !

मयूख ने मुस्कराते हुए कहा—अपने बित्र को मैं बहुत ही अच्छी तरह से पहचानता हूँ, केवल आपकी परीक्षा लेने के विचार से मैंने यह बात कही है। परन्तु एक बात है। अपने भावी स्वामी को तो आपने पहचान लिया है; किन्तु सास को आप अभी तक नहीं पहचान पाई हैं। मुझे कहना न चाहिए; किन्तु नौकरों की आपस की कानाफूसी से मुझे एक बहुत ही वैसी बात मालूम हुई है। उन्होंने भवानी की सौगन्ध खाकर यह प्रतिज्ञा की है कि जब तक उनके शरीर में प्राण रहेंगे, अग्नि के साथ वे तुम्हारा विवाह न होने देंगी। वह्नि के साथ चाहे आपका विवाह न भी हो, किन्तु वे जीवन में यह किसी प्रकार न सहन कर सकेंगी कि अग्नि आपके साथ विवाह करके वधू के रूप में आपको इस घर में ले आये।

दृष्टि को चिन्ता से व्याकुल किये हुए प्रमिता मयूख की ओर ताकती रह गई। उसका मनोभाव ताड़कर वह कहने लगा—इस समय शायद आप यह सोच रही हैं कि अग्नि की मा को आपके साथ उसका विवाह होने में जो आपत्ति है, वह भी अग्नि के इस प्रकार अदृश्य होने का बहुत-कुछ कारण है।

प्रमिता ने कहा—क्षण-मात्र के लिए मेरे हृदय में यह बात आई थी अवश्य; परन्तु ताई जी इतनी निष्ठुर, इतनी अमानुषिक प्रकृति की हो सकती हैं, यह मैं कैसे कहूँ ? लालिमा-जैसी स्त्री के लिए अवश्य यह कोई बड़ी बात नहीं थी।

मयूख ने कहा—संसार में ऐसी-ऐसी अनहोनी बातें प्रतिदिन होती रहनी हैं, जिन पर किसी प्रकार विश्वास ही नहीं किया जा सकता। अग्नि के अदृश्य होने का कारण क्या है, इसका कुछ आभास तो मिल नहीं रहा है, इसलिए हर ओर बहुत ही संदिग्ध

दृष्टि रखकर सावधानी के साथ पारस्परिक सहयोग के द्वारा पता लगाना होगा ।

प्रमिता ने व्यग्रभाव से कहा—आपकी जो भी आज्ञा होगी, मैं प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका पालन करने का प्रयत्न करूँगी । इतना कहकर उसने इस बात का संकेत किया कि वह आ रहा है, इसलिए ये बातें इस समय स्थगित रखी जायँ और तुरन्त ही उसने प्रसंग बदल दिया । वह स्वयं मयूख के व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध की ही विभिन्न प्रकार की बातें उससे पूछने लगी । मयूख भी उसकी प्रत्येक बात का उत्तर देने लगा ।

वह्लि कोट की जेबों में दोनों हाथ डाले हुए धीरे-धीरे खींचे में टहल रहा था । टहलते-टहलते जब उसने मयूख और प्रमिता को देखा तब आगे बढ़ आया और उसकी आकृति पर विन्ता की जो रेखायें उदित हो आई थीं, उन्हें किसी प्रकार दूर करके मुख पर मुस्कराहट का भाव ले आया । अन्त में प्रसन्नता-व्यञ्जक हँसी हँसता हुआ समीप आकर मयूख की ओर लक्ष्य करके वह बोला—यहाँ है आप लोग ? इधर मैं सारे घर में आप लोगों को खोज आया । आज फिर मैं एक बार भैया की खोज में निकलनेवाला हूँ । सोचता हूँ कि कहाँ-जहाँ भैया के मित्र हैं, वहाँ-वहाँ एक बार खोजकर मैं देख आऊँ ।

प्रमिता संदेहपूर्ण दृष्टि से वह्लि की ओर ताकती हुई चुपचाप रह गई । मयूख भी संदेह से आकुल होकर ज़रा देर तक तो कुछ सोचता रहा, बाद को उसने कहा—आपका यह विचार बहुत उत्तम है । मैं भी आपके साथ चलूँगा ।

“नहीं, नहीं, मैं कई जगह जाऊँगा । इससे मेरे साथ चलने में

आपको बड़ा क्लेश होगा। इसके सिवा एक ही दिशा में दो आदमियों को जाने से कोई लाभ भी न होगा।”

गम्भीरभाव से मयूख ने कहा—यह भी ठीक है। परन्तु उसके मन में यही बात आई कि वह्नि की इस यात्रा का घोड़े की चोरी से घनिष्ठ सम्बन्ध है, भाई को खोजने का तो यह बहाना भर कर रहा है।

तीनों आदमियों ने बगीचे से लौटकर देखा तो हुताशन जाँच के लिए आये हुए पुलिस के दारोगा तथा खुफ़िया-विभाग के एक बहुत ही नामी कर्मचारी से बातें कर रहे थे। पुत्र का पता लगाने के लिए खुफ़िया-विभाग के इस कर्मचारी को स्वयं हुताशन ने ही बम्बई से बुलाया था।

बारहवाँ परिच्छेद

मयूख को वल्लि तथा उसकी माता निपुणिका पर तो पहले से ही सन्देह था किन्तु पुलिस के आने पर उन माता-पुत्र की आकृति पर जो व्यग्रता का भाव परिलक्षित हुआ, उससे उसका सन्देह और भी दृढ़ हुआ । अब उसे एक प्रकार से पक्का विश्वास हो गया कि इन माता-पुत्र के षड्यंत्र से ही अग्नि इस प्रकार अदृश्य हुआ है । मयूख के मन में यह बात आई अब अधिक जाँच-पड़ताल करने के बाद पत्नी और पुत्र के दुष्कर्म का प्रमाण हुताशन के सामने उपस्थित करने का अर्थ होगा उनके हृदय पर एक दूसरा आघात पहुँचाना । इसलिए मुझे अब इस विषय में निश्चेष्ट हो जाना चाहिए । परन्तु बाद को उसके मन में आया कि मामले को जब पुलिस ने हाथ में ले लिया है तब रहस्य का उद्घाटन हुए बिना रह न सकेगा और उस अवस्था में इनका पारिवारिक विच्छेद होना अनिवार्य है । परन्तु मैं यदि किसी प्रकार पहले से ही वास्तविकता का पता लगाने में समर्थ हो सकूँ तो सम्भव है कि मामले को सँभालने का भी कोई उपाय निकाला जा सके । इसलिए मयूख ने कार्य में संलग्न रहने का निश्चय किया । इस विषय में उसने हुताशन की अनुमति भी ले ली ।

कुंजियों का एक बहुत बड़ा गुच्छा देकर हुताशन ने मयूख से कहा— बेटा, इन कुंजियों से तुरन्त घर के सभी दरवाजे, आलमारियाँ और द्वार खोल सकते हो । तुम्हें किसी भी विषय में सङ्कोच न करना चाहिए । घर में अग्नि को जितने भी अधिकार प्राप्त थे, वे सब अधिकार मैं तुम्हें भी दे रहा हूँ ।

गृह-स्वामी की अनुमति प्राप्त कर लेने के बाद मयूख गारे घर में चञ्चलभाव से घूमने लगा। एक कमरे का भिड़ा हुआ दरवाजा एकाएक ठेलकर उसने देखा तो निगुणिका अहल्या नामक नौकरानी से भयभीत-सी होकर फिस-फिस करके कुछ बातें कर रही थी। मयूख को देखते ही वे दोनों दूर-दूर हो गईं। इधर ताम्ब्रे नामक नौकर भी आज कुछ व्यग्र-सा होकर किसी न किसी बहाने से मयूख के ही पीछे-गोछे लगा रहने का प्रयत्न कर रहा था। उसके इस आवरण में मयूख के हृदय में एक साथ ही क्रोध और हँसी का उद्रेक हुआ। इसके सिवा वह यह भी अनुभव करने लगा कि मेरा उद्देश्य सफल होकर ही रहेगा।

छिपा महल नामक जो वह मकान था, उसमें सीढ़ियाँ बहुत-सी थीं। कोई-कोई सीढ़ियाँ घमावदार थीं, कोई एकदम खड़ी थीं, कोई अन्ध-कारपूर्ण थीं और कोई खोर-कोठरी में होकर नीचे की ओर गई थीं। किसी-किसी सीढ़ी के ऊपर जो ढक्कनदार दरवाजे लगे हुए थे वे जान पड़ते थे कि मानो ये साक्षात् राक्षस हैं, शिकार को उदरस्थ कर लेने के विचार से मुँह बाये और हाँठ फैलाये पड़े हैं। लोहे के एक सँकड़े से छूटते ही इन दरवाजों के दोनों पल्ले धड़ाम में आकर सीढ़ी का मुँह बन्द कर लेंगे।

मयूख उन्हीं सब सीढ़ियों से कभी नीचे से ऊपर और कभी ऊपर से नीचे आने-जाने लगा। यद्यपि उसे आशङ्का हो रही थी कि अन्धकार में पाकर कोई मेरे ऊपर भी सांघातिक प्रहार न कर बैठे।

रहस्य का उद्घाटन करने के लिए उस समय मयूख इतनी तन्मयता के साथ कार्य कर रहा था कि आहार-निद्रा की इच्छा तो एक प्रकार से उसके हृदय से निकल ही चुकी थी, साथ ही प्राण का भी मोह उसने

बहुत-कुछ छोड़ दिया था। मयूख ने निश्चय किया कि रात्रि में अग्नि के कमरे में रक्खी हुई वह सन्दूक खोलकर देखूंगा कि उसमें क्या रक्खा हुआ है ?

भोजन-आदि से निवृत्त होने पर घर के सभी लोगों ने जब अपने-अपने सोने के कमरे में आश्रय ग्रहण किया तब मयूख अपना कार्य आरम्भ करने के लिए उद्यत हुआ। उधर अग्नि का पता लगाने के लिए खुफिया-विभाग का जो कर्मचारी नियुक्त था, वह भी उम्मी समय कभी किसी उपयुक्त स्थान पर छिपकर और कभी दबे-पाँव से टहल-टहलकर घर के लोगों का भेद-भाव लेने का प्रयत्न कर रहा था। एकाएक मयूख का और उसका सामना हो गया। उक्त कर्मचारी को घर के भीतर सन्देहजनक रूप में इधर-उधर घूमने देखकर मयूख तेजी से उसकी ओर भपटा और अपने बाहुओं में उसे आवेष्टित करके बहुत धीमी आवाज़ से पूछने लगा—तुम कौन हो ?

मयूख ने देखा कि यह आदमी वैसे तो है नाटा-सा ही, परन्तु है बलवान्। एक झटके में ही उसने मयूख की बाहुओं के पाज से अपने आपको छुड़ा लिया और निमेष-मात्र में एक पिस्तौल सीधी करके उसके सामने खड़ा हो गया। उसने भी उम्मी प्रकार धीमे स्वर से पूछा—पहले मैं यह जानना चाहूँगा कि तुम कौन हो ?

“मैं इस घर का एक अनिधि हूँ। इन लोगों से मेरा सौहार्द है। परन्तु तुमको क्या अधिकार है यहाँ इस प्रकार छिपकर रहने और चलने-फिरने का ?”

“ओह; अब मैं आपको पहचान सका हूँ। आप मयूख मुस्तफ़ी हैं, अग्निबाबू के मित्र। अपना परिचय भी आपसे प्रकट कर देने में कोई हानि नहीं है, क्योंकि उद्देश्य हम दोनों का एक ही है और

हम दोनों ही एक दूसरे के सहायक हो सकते हैं। खुफिया-विभाग का मैं एक कर्मचारी हूँ। मुझे लोग चिपलूनकर कहते हैं।

परस्पर परिचित हो जाने के बाद मयूख और चिपलूनकर में बहुत-सी बातें हुईं। इस विषय पर वे दोनों ही सहमत थे कि वह्नि और निपुणिका के षड्यंत्र से ही अग्नि अदृश्य हुआ है और घोड़े की चोरी में भी यदि निपुणिका का नहीं तो वह्नि का हाथ अवश्य है। उन लोगों ने यह भी निश्चय कर लिया कि ताम्बे और अहल्या इन माता-पुत्र के षड्यंत्र में मुख्य रूप से सहायक हैं।

अब मयूख और चिपलूनकर ने तिमंजिले के गुप्त रास्ते से होकर अग्नि के पढ़नेवाले कमरे में जाने का निश्चय किया। टार्च के उजाले में उस गुप्त दरवाजे की साँकड़-आदि बड़ी कठिनाई से खोजकर उसे खोला और दोनों व्यक्तियों ने भीतर प्रवेश करके दरवाजे को बन्द कर दिया। अब टार्च हाथ में लिये हुए रास्ता देखते-देखते वे लोग आगे बढ़े।

उस ओर एक क्रतार में बने हुए कई कमरे देखकर चिपलूनकर ने कहा कि ये कमरे इस प्रकार उपेक्षितभाव से पड़े हैं कि इनमें मनुष्य का आना-जाना प्रायः नहीं होता है। इसलिए इन सबको खूब सावधानी से खोजकर देखना होगा, क्योंकि गोपनीय सामग्रियों को इनमें छिपा रखना अधिक सुविधाजनक है। इस निश्चय के अनुसार अग्नि के कमरे के पास के चार कमरों को गुच्छे की कुंजियों की सहायता से खोलकर उन दोनों ने देखा। उन सबमें घर की फ़ालतू चीजें रक्खी हुई थीं, कोई महत्त्व की वस्तु नहीं थी। परन्तु पाँचवें कमरे को जब उन्होंने खोलकर देखा तब वह बहुत कुछ साफ़-सुथरा था। एक ओर भूमि पर एक बिस्तर लगा हुआ था, उससे ज़रा-सा हटकर एक लालटेन रक्खी

हुई थी, शीशे का एक गिलास था और अँगरेजी का एक समाचार-पत्र भी पड़ा हुआ था।

चिपलूनकर ने टार्च का काश डालकर बिस्तरे को खूब ध्यान से देखा। बाद को उसने मयूख से कहा—इस बिस्तरे पर अभी-अभी कोई लेटा हुआ था.... लेटनेवाले दो आदमी थे। तकिया पर पास ही पास दो मस्तकों के दबाव का चिह्न बना हुआ है।... एक पुरुष था और एक स्त्री। एक बगल कुछ ऐसे बाल टूटकर पड़े हैं जो कि छोटे-छोटे और छँटे हुए हैं और एक बगल कुछ लम्बे-लम्बे बाल गिरे हैं। इसके सिवा वालों में लगाने का लोहे का एक काँटा भी पड़ा हुआ है।

कमरे के चारों ओर टार्च का प्रकाश फेंक-फेंककर चिपलूनकर ने जले हुए सिगरेट का एक नन्हा-सा टुकड़ा उठा लिया और टार्च के बिल्कुल सामने करके वह उसे देखने लगा। बाद को उसने कहा—पुरुष सिगरेट पीता है.... पान भी वह अधिक खाता है। सिगरेट के सिरे पर पान की गाढ़ी पीक लगी हुई है।.... उसका एक दाँत टूटा हुआ है। सिगरेट में एक ओर तो पूरे-पूरे दाँत के दबाव का चिह्न बना हुआ है, दूसरी ओर के चिह्न से जान पड़ता है कि उस ओर का दाँत कुछ छोटा है; परन्तु बीच में किसी प्रकार का चिह्न ही नहीं है। इससे स्पष्ट है कि वहाँ दाँत का दबाव नहीं पड़ सका है।

आग्रहपूर्ण स्वर में मयूख बोल उठा—तब तो यह वल्लि ही है। यहाँ सिगरेट पीनेवाला तथा मुँह में सदा पान का बीड़ा भरे रहनेवाला वही है। वल्लि का एक दाँत भी तिर्छा होकर कुछ टूट गया है।

समाचार-पत्र के नीचे से चिपलूनकर ने एक रुमाल निकाली, जिसके एक कोने में रेशम के सूत में अँगरेजी का 'बी' अक्षर बना हुआ था। यह देखकर मयूख बोल उठा कि इन कमरे में निस्सन्देह बहिणी ही था। परन्तु उसके पास लेटनेवाली स्त्री कौन थी ?

बिस्तरे पर जो लम्बे-लम्बे बाल और बालों में बाँधने का काँटा मिला था, उसे कागज के एक टुकड़े में लपेटकर जेब में रखते रखते चिपलूनकर ने कहा—यही तो एक समस्या है। वह सौभाग्यशालिनी कहीं अहल्या ही तो नहीं थी ? दिन में इन बालों और काँटे को उसके बालों और काँटे से मिलाकर देखने का प्रयत्न करेंगा।

उस कमरे से निकलकर वे दोनों आदमी उसके बगलवाले कमरे में गये। वह कमरा नहाने का था। उसके बाद पाखाना था। पाखाने के पास से ही नीचे की ओर एक जोना चला गया था; शायद वह मेहतर के आने-जाने के लिए बनाया गया था। इस स्नान-गृह और शौचालय के सामनेवाले कमरे भी खाली ही पड़े थे। इन सबको देखने के बाद वे लोग लौटकर अग्नि के कमरे के सामने आये। तब चिपलूनकर ने कहा कि ये दो कमरे देख लेना ही आज काफी होगा।

अग्नि के सोने के कमरे में ऐसी कोई वस्तु देखने में नहीं आई जो अनिष्ट का कारण समझी जा सके। अब अग्नि का पढ़ने का कमरा खोला गया। उस कमरे में प्रवेश करने पर मयूख ने कहा कि सबसे पहले इस टेबिल के नीचे का बड़ा-सा सन्दूक ही खोल कर देखना चाहिए। इससे दरवाजा भिड़ाकर उन दोनों आदमियों ने बड़े परिश्रम से उसे टेबिल के नीचे से निकाला।

सन्दूक की ओर मुंह करके ज़रा-सा ध्यानपूर्वक देखते ही उसमें से सड़े हुए शव की-सी गन्ध आने लगी। मयूख के पास कुंजियों का जो गुच्छा

था उसमें से कोई भी कुंजी उस सन्दूक के ताले में न लग सकी। तब बड़े प्रयत्न से चिपलूनकर ने उस सन्दूक को तोड़ा। एक ओर की चद्दर तोड़कर जैसे ही हटाई गई वैसे ही कम्बल से ढँकी हुई किसी चीज के ऊपर डाली हुई एक साड़ी दिखाई पड़ी। तब मयूख के मन में आया—मैं जो सोच रहा था, बात वही है। यह साड़ी वह्नि की मा की है।

चिपलूनकर ने कहा—साड़ी में रक्त लगा हुआ है।

यह बात सुनते ही मयूख व्यग्रभाव से बोल उठा—साड़ी के नीचे क्या है, ज़रा देखिए तो ! इस साड़ी के नीचे क्या है ?

चिपलूनकर ने साड़ी धीरे से उठा ली। उसे उठाते ही उसके नीचे से निकला एक ब्लाउज।

सावधानी के साथ साड़ी और ब्लाउज उठाकर एक कुर्सी पर रखने के बाद चिपलूनकर धीरे-धीरे खींचकर कम्बल हटाने लगा।

कम्बल जैसे-जैसे उठता जाता, वैसे ही वैसे मयूख का आतङ्क भी बढ़ता जा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि चक्कर खाकर में अभी ही गिरना चाहता हूँ। अभी-अभी रक्त से भीगा हुआ मेरे साथी का क्षत-विक्षत शरीर निकल आयेगा। उसे मैं किस तरह अपनी आँखों से देख सकूँगा ?

चिपलूनकर के कम्बल हटाकर फेंकते ही एक स्त्री का शव निकल आया। यह देखते ही वे दोनों भय और विस्मय से अभिभूत हो उठे। मयूख ने तो आँखें ही मूँद लीं।

मुँह पर से कम्बल का आवरण हटते ही चिपलूनकर ने टाच का प्रकाश फेंककर उस शव को देखा और कहा—यह शव तो किसी स्त्री का है।

मयूख इतने समय तक साँस बन्द किये हुए स्तम्भित होकर खड़ा था। चिपलूनकर की बात सुनकर उसने शान्ति की साँस ली। आँख खोलकर उसने देखा। जिस स्त्री का वह शव था वह किसी अच्छे घराने की मालूम पड़ रही थी। उसके वस्त्र आदि मूल्यवान् थे।

मयूख ने आज ही प्रमिता से लालिमा का हाल सुना था। इससे उसे सन्देह हुआ कि यह स्त्री सम्भवतः लालिमा ही है। परन्तु उसकी हत्या किसने की? तो क्या अग्नि उसकी हत्या करके फरार हुआ है? परन्तु लालिमा के सम्बन्ध में तो सुनने में यह आया था कि वह वल्लि के साथ यहाँ से गई थी। तो क्या वल्लि ही उसकी मृत्यु का कारण है? परन्तु वल्लि भला उसकी हत्या क्यों करेगा?

कुछ निर्णय करने में असमर्थ होकर मयूख इस विषय में चिपलूनकर का मत जानने के लिए उत्सुक हो उठा। इतने में किसी के पैरों की आहट पाकर चिपलूनकर ने चुपके से मयूख से कहा कि टार्च बुझाकर अब यहाँ से हट चलना चाहिए। चलो, आस-पास के किसी अन्ध-कारमय कमरे में चलकर छिप रहें।

दोनों ही आदमी उस कमरे से दबे-पाँव निकल पड़े। एक दूसरे के कमरे में जाकर वे लोग छिप गये। उस अन्धकारमय कमरे से झाँककर उन्होंने देखा कि एक पतली और लम्बी-सी स्त्री अपने शरीर को लचकाती हुई महामहिमा-सम्पन्न रानी के समान धीर गति से पैर बढ़ाती हुई इसी ओर बढ़ी आ रही है।

स्त्री सीधे अग्नि के पढ़नेवाले कमरे की ओर गई। द्वार खोलकर कमरे में उसने प्रवेश किया। अब मयूख और चिपलूनकर ने उत्कण्ठितभाव से उसकी ओर कान लगाया। वे दोनों सोच रहे

थे कि यह स्त्री कमरे में प्रवेश करके जब देखेगी कि यहाँ जो भयंकर पापकर्म किया गया था, उसका बीभत्स दृश्य उद्घाटित हो गया है, तब वह भय के मारे चिल्ला उठेगी और यदि न भी चिल्ला उठेगी तो किसी न किसी प्रकार से तो अपना विस्मय प्रकट करेगी ही।

काफ़ी देर तक पूर्ण निस्तब्धता थी। कमरे से किसी प्रकार की भी आहट न आई। इधर प्रतीक्षा का यह समय मयूख और चिपलून-कर के लिए अत्यन्त ही असह्य होता जा रहा था।

स्त्री जैसे आई थी, वैसे ही अग्नि के कमरे से निकल गड़ी। मुँह से किसी प्रकार का शब्द निकाले बिना ही वह वहाँ से चली गई। दबे-पाँव गली में आकर चिपलूनकर और मयूख उसे देखते रहे; परन्तु दूध के समान शुभ्र वस्त्र से आच्छादित उसका विशाल शरीर गली में प्रवेश करनेवाले द्वार के उस पार जाते ही इन दोनों के लिए अदृश्य हो गया; क्योंकि स्त्री ने कपाट बन्द कर दिया था।

स्त्री के चले जाने पर मयूख के मन में यह बात आई कि कल भी मैंने इसी रमणी-मूर्ति को अग्नि के कमरे की खिड़की के सामने खड़ी देखा था।

अन्धकार में छिपे रहकर वे दोनों आदमी इस ताक में थे कि देखें यह स्त्री लौटकर फिर आती है या नहीं। इस प्रकार छिपे-छिपे उन दोनों आदमियों ने बहुत-सा समय व्यतीत कर दिया। तौ भी गली के प्रवेश-द्वार में लगे हुए उस भारी-भरकम कपाट के खुलने की किसी प्रकार की आहट न मिली। तब चिपलूनकर ने कहा—चलो, ज़रा देखें तो कि वह स्त्री कमरे में जाकर क्या कर गई है ?

चिपलूनकर तथा मयूख ने अग्नि के कमरे में फिर प्रवेश किया। दरवाजा भिड़ाकर जब उन्होंने टार्च का प्रकाश किया तब उन्हें मालूम हुआ कि जो चीज़ हम लोग जहाँ जिस रूप में छोड़ गये थे, वह वहीं वैसी की वैसी पड़ी है। स्त्री ने कमरे में आकर किसी चीज़ में हाथ तक नहीं लगाया। यह देखकर चिपलूनकर से कहा—अभी-अभी जिनका शुभागमन हुआ था वे हमारी शुभचिन्तिका बहुत ही विज्ञ हैं! कमरे में आकर जैसे ही उन्होंने देखा कि हमारे दुष्कर्म का भण्डाफोड़ हो गया है, वैसे ही कोई चीज़ ज़रा भी इधर-उधर न करके वे चुपचाप खिसक पड़ी हैं। अब सनाख्त करना होगा कि वे थीं कौन? परन्तु इस समय कोलाहल करके लोगों की निद्रा भंग करने से तो कोई लाभ होगा नहीं, सबरा होने पर ही जो कुछ होगा वह किया जायगा। तब तक हमें समस्त वस्तुओं की एक सूची तैयार कर लेनी है, साथ ही उनमें से हर एक का वर्णन भी लिख लेना है। मैं अपने नोटबुक में झटपट लिखे लेता हूँ। उसे पढ़कर साक्षी के रूप में आप हस्ताक्षर कर दीजिए। बाद को समस्त वस्तुएँ पहले की ही तरह सन्दूक में बन्द करके मैं लाह से उस पर मुहर कर दूंगा। सबेरे पुलिस बुलाकर उसकी उपस्थिति में इसकी जाँच की जायगी। तब इस बात का पता लगाया जायगा कि यह शव किसका है और इसकी हत्या किसने की है?

हत्याकारी कौन हो सकता है, इस बात की ओर ध्यान जाते ही मयूख का हृदय काँप उठा।

तेरहवाँ परिच्छेद

सबेरा होने पर हुताशन चिन्तित्भाव से जाकर अपने बैठने के कमरे में उपस्थित हुए । उनकी आकृति से यह स्पष्ट रूप से मालूम पड़ रहा था कि रात्रि इनकी बहुत ही व्यग्रतापूर्वक व्यतीत हुई है । टेविल पर झुककर दोनों हाथों के सहारे माथा सँभाले हुए वे बैठे ही थे, कि मयूख और चिपलूनकर जाकर पहुँच गये ।

रात्रि में चिपलूनकर से मयूख की जिस प्रकार एकाएक मुलाकात हुई थी और वे दोनों जिस प्रकार परस्पर सहयोग के साथ अग्नि के कमरे को खोजकर देखने के लिए गये थे और अन्त में जिस प्रकार वे एक अद्भुत वस्तु का आविष्कार करने में समर्थ हुए थे, यह समस्त वृत्तान्त मयूख उन्हें आद्योपान्त बतला गया ।

मयूख की ये बातें मुनते ही हुताशन कुर्सी ठेलकर खड़े हो गये । कमरे से निकलकर उद्विग्नभाव से चलते-चलते उन्होंने कहा—चलो, मुझे बतलाओ कि तुमने किस अद्भुत रहस्य का आविष्कार किया है । मुझसे कुछ छिपाओ मत ।

मयूख जिस समय हुताशन से वह वृत्तान्त बतला रहा था उस समय निपुणिका कुछ आड़ में होकर फूलदानी में फूल रख रही थीं और चिपलूनकर उन्हें देख नहीं सका था । अब मयूख और चिपलूनकर के साथ में हुताशन जब अग्नि के कमरे की ओर जाने लगे तब वे भी उतावली के साथ उसी ओर बढ़ें ।

अग्नि के कमरे में पहुँचते ही मयूख ने सन्दूक खोल दी । उसने कहा—ताऊ जी, देखिए । यही आविष्कार किया है हम लोगों ने ।

चिपलूनकर ने कहा—सन्दूक में भरकर आदमी की लाश रक्खे हुए हैं आप घर में ! पुलिस के सामने आप क्या सफाई देंगे इसके लिए ?

भुक्कर देखते ही हुताशन ने कहा—किसी स्त्री की है यह लाश !

लाश एक स्त्री की है, यह जानकर हृदय में जो आशङ्का लिये हुए वे यहाँ आये थे, वह दूर हो गई । इस कारण उनके मुख-मण्डल पर एक सन्तोष-मिश्रित विस्मय का भाव उदित हो आया ।

हुताशन की बात दोहराती हुई निपुणिका बोलीं—स्त्री की लाश है ? कौन है वह स्त्री ?

आगे बढ़कर शव को देखते ही उनके हृदय में उत्पन्न हो आया भय का भाव । उस भाव को छिपा रखने के लिए प्रयत्नशील होने पर भी निपुणिका चिल्ला उठी—यह तो लालिमा है !

गृह-स्वामिनी का चीत्कार सुनकर नौकर-चाकर भी उत्कण्ठित भाव से दौड़ पड़े । उन सबके पीछे-पीछे आया वह्नि । चेहरा उसका फक हो गया था उस समय ।

नौकरों की भीड़ ठेलकर कमरे में प्रवेश करते-करते वह्नि ने पूछा—क्या हुआ है बाबू जी ?

हुताशन ने गम्भीर स्वर से कहा—देखो आकर जो कुछ हुआ है ।

सन्दूक में रक्खे हुए शव की ओर भाँककर वह्नि बहुत ही मन्द और स्पष्ट स्वर में बोल उठा—आश्चर्य है ! लालिमा यहाँ आई कैसे ?

वह्नि के मनोभाव की परीक्षा के लिए मयूख ने उससे कहा—लालिमा को सारदा-सदन में छोड़ आने के लिए तो आप ही गये थे न ?

क्रोध और भय के कारण वह्नि का मुँह काला हो गया । विशेषतः मयूख के ऊपर उसकी हड्डी-हड्डी जल उठी यह सोचकर कि मेरे सम्बन्ध की रत्ती-रत्ती बात एक बीराना आदमी होकर क्यों खोजता रहता है यह ? मेरी घरेलू बातों से इसका क्या मतलब ?

इस विषय में वह्नि का मौन-भाव मयूख और चिपलूनकर के सन्देह को और भी घनीभूत किये दे रहा था । किन्तु निपुणिका उसकी ओर से सफाई देती हुई उतावली के साथ बोल उठीं—वह्नि तो उसे महीना भर पहले ले गया था ।

“परन्तु इसका प्रमाण क्या है कि वे उसे सारदा-सदन तक पहुँचा आये थे ?”

कुछ उत्तेजित कण्ठ से निपुणिका ने कहा—सौभाग्यवश इसका प्रमाण भी सुरक्षित रख लिया गया है । लालिमा को वह्नि ने सारदा-सदन में जब फिर से भर्ती कराया था, तब वहाँ से उसे एक रसीद मिली थी । इसके सिवा वहाँ के सुपरिंटेंडेंट की एक चिट्ठी भी मेरे पास है, जिसके द्वारा मुझे सूचित किया गया है कि बंगाल से लालिमा के एक भाई आये थे और वे उसे ले गये हैं ।

निपुणिका की इस बात के उत्तर में मयूख ने बहुत ही नम्र स्वर में कहा—परन्तु इस घटना से तो यही प्रमाणित होता है कि लालिमा के उन कल्पित भाई का सम्बन्ध इसी घर से है । अब आविष्कार इस बात का करना है कि वे सज्जन हैं कौन ?

मयूख की इस बात का कोई उययुक्त उत्तर निपुणिका को न सूझ पड़ा । क्रोध के मारे उसका शरीर थर-थर काँप रहा था उस समय । इधर माता को निरन्तर देखकर वह्नि का मुँह बिलकुल ही सूख गया ।

हुताशन ने कहा—इस बीभत्स दृश्य के सामने खड़े-खड़े तर्क-वितर्क करते रहने में कोई लाभ नहीं है। आओ, अब इस कमरे को वन्द कर दें और पुलिस को इसकी सूचना दे दें, बाद को उचित व्यवस्था की जायगी।

हुताशन के इस प्रस्ताव के अनुसार सब लोग कमरे से निकल गये। मयूख ने उसमें ताला लगा दिया।

इतने में अहल्या नामक नौकरानी तेजी के साथ पैर बढ़ाती हुई आई और व्यस्तभाव से निपुणिका से बोली—प्रमिताबाई बहुत घबराई हुई हैं। वे आपको बुला रही हैं।

यह बात सुनते ही वह्नि उतावली के साथ वहाँ से चला गया।

चौदहवाँ परिच्छेद

हत्या के मामले की सूचना मिलने पर पुलिस के आने में विलम्ब नहीं हुआ। आते ही उसने लाश को सन्दूक से निकलवाया। देखने से मालूम हुआ कि मृतक के वस्त्रों में रक्त लगा है अवश्य किन्तु शरीर पर इसके कहीं चोट का कोई चिह्न तक नहीं है। स्वयं किसी प्रकार का भी अनुमान करने में असमर्थ होकर पुलिस ने लाश को पोस्ट-मार्टम के लिए बम्बई भेज दिया।

पुलिस जब छिपा महल से चली गई, तब विपलूनकर ने मयूख से कहा कि भाई, अब मैं भी चलता हूँ। बम्बई में पोस्टमार्टम के द्वारा जब मालूम हो जायगा कि लालिमा की मृत्यु किस प्रकार हुई है तब मैं पूना जाकर मारदा-सदन में पूछ-ताछ करूँगा। वहाँ से मुझे यह मालूम करना है कि लालिमा इस बार कब मारदा-सदन में प्रविष्ट हुई थी, कब वहाँ से वह निकली है और जिस व्यक्ति ने अपने आपको उसके भाई के रूप में परिचित किया था, उसकी रूप-रेखा कैसी है और अवस्था उसकी अनुमानतः कितनी होगी। ये सभी बातें मालूम करके जब तक मैं न आ सकूँ तब तक आप यहाँ के लोगों की गति-विधि का अवलोकन करते रहिएगा। आप इस कार्य को बहुत ही उत्तम ढंग से कर लेंगे, इस बात का मुझे विश्वास है। परन्तु जो कुछ देखिएगा, वह नोट कर रखिएगा अवश्य, जिससे कि मैं आपके परिश्रम से पूर्णरूप से लाभ उठा सकूँ।

आज सवेरे से ही इस तरह की सनसनी थी कि जलपान आदि की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया। निर्दिष्ट समय से काफी देर के

बाद नौकर-नौकरानी जब किसी प्रकार व्यवस्था कर सके, तब घंटी बजाकर जलपान के कमरे में एकत्र होने की सूचना सब लोगों को दी गई। आज जिस दुर्घटना का आविष्कार हुआ है, उसके प्रभाव से उस घर के निवासियों के समान ही अतिथि तक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके थे। इसलिए किसी ने उत्साहपूर्वक जलपान नहीं किया। जिसके सामने जो कुछ आया, उसे वह गले के नीचे उतार गया। किसी ने उससे कुछ और लेने के लिए न तो आग्रह किया और न उसने स्वयं इच्छा प्रकट की।

घर के भीतर का वायुमण्डल विषाद के भाव से इतना अधिक व्याप्त था कि वहाँ शान्ति की ज़रा भी आशा न देखकर हुताशन टहलने के लिए बाहर चले। साथ में उनके प्रमिता, बल्लि और मयूख भी चले।

हुताशन दरवाज़े की चौखट के बाहर भी पैर नहीं निकाल पाये थे कि तेज़ी से दौड़कर आते हुए ताराचन्द को उन्होंने देखा। हाँफते-हाँफते दूर से ही चिल्लाकर उसने कहा—हुज़ूर, लौट आया है !

ताराचन्द की यह बात सुनते ही हुताशन के हृदय में आशा का उदय हुआ। व्यग्रभाव से चिल्लाकर उन्होंने कहा—कौन लौट आया है रे ?

“राकेट घोड़ा, हुज़ूर ! राकेट घोड़ा।”

हुताशन के साथ ही साथ प्रमिता और मयूख के मन में भी आशा की एक झलक दिखाई पड़ी थी कि ताराचन्द अग्नि के लौट कर आ जाने की सूचना देने जा रहा है। परन्तु उसके मुँह से राकेट का नाम सुनते ही उन सबका उत्साह भङ्ग हो गया और उसकी बात की ओर किसी का ध्यान न रहा। इधर ताराचन्द अपनी धुन में

कहता ही गया—घोड़ा कसा-कसाया बगीचे में टहल रहा था हुजूर !
 बहुत दूर से शायद दौड़ता हुआ आया है । शरीर पसीने से तर था ।
 यहाँ पहुँचकर खूब जोर से हिनहिनाने लगा वह, तब मैं आकर उसे
 पकड़ ले गया । अस्तबल में बँधा है वह ।

वह्नि बोल उठा—आश्चर्य है !

इस बात के उत्तर में हुताशन ने गम्भीरभाव से कहा—अब यहाँ
 सभी कुछ सम्भव है ।

वे चुपचाप बगीचे में चले गये ।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

पोस्टमार्टम से प्रमाणित हुआ कि लालिमा की मृत्यु का कारण भ्रूण-हत्या का प्रयत्न है और उसके शरीर में जो रक्त लगा हुआ है वह गर्भाशय का रक्त है ।

उपर्युक्त निर्णय के साथ ही साथ रहस्य ने एक दूसरा रूप धारण कर लिया । तहकीकात से पुलिस इसी निर्णय पर पहुँची कि लालिमा का विशेष अनुराग अग्नि से ही था । गवाहियाँ भी इस आशय की मिल गई कि फ़रार होने से दो-चार दिन पहले एक लम्बी-सी रमणी के साथ वन में टहलता हुआ अग्नि दिखाई पड़ा था । इस प्रकार यह प्रमाणित हो गया कि अग्नि ही सारदा-सदन से लालिमा को ले आया था ; अपना दुष्कर्म छिपाने के लिए उसी ने उसका गर्भपात कराने का प्रयत्न किया और अन्त में जब उसकी मृत्यु हो गई तब लोक-लज्जा तथा पुलिस से आत्मरक्षा करने के लिए वह भाग निकला ।

पुलिस के इस निर्णय के कारण बल्लि उत्साहित हो उठा । उसके चरित्र के सम्बन्ध में पिता तथा प्रमिता को जो संदेह था ; उसके लिए उसने एक बार खूब कसकर उन्हें ताना देने में भी आना-कानी नहीं की । परन्तु निपुणिका के मुख की गम्भीरता और भी बढ़ गई । उनकी दृष्टि प्रखर और कठोर हो उठी ।

प्रमिता को एकान्त में देखते ही मयूख ने आग्रहपूर्वक पूछा—क्या पुलिस का यह निर्णय आपको विश्वासजनक मालूम पड़ रहा है ?

“बिलकुल नहीं ।”

प्रमिता ने यह बात कही तो अवश्य किन्तु उसके कंठ-स्वर में कुछ वैसा दृढ़ता का भाव नहीं दिखाई पड़ा। इससे मयूख ने निश्चय किया कि अग्नि के निर्दोष होने के सम्बन्ध में कदाचित् इन्हें भी कुछ संदेह है। परन्तु स्वयं उसका मन किसी प्रकार भी गवाही नहीं देता था कि अग्नि इस प्रकार के नीचतापूर्ण कार्य की ओर प्रवृत्त हो सकेगा, यद्यपि यह बात दूसरों से कहने के अनुकूल उसके पास कोई प्रमाण नहीं था। इधर इसके प्रतिकूल प्रमाणों की भरमार थी। इसलिए भविष्य में आनेवाले किसी शुभ अवसर की प्रतीक्षा में ही बैठा रहना मयूख ने श्रेयस्कर समझा।

चिपलूनकर लौटकर आगया। उसने कोई ऐसी नई बात नहीं बतलाई जो मयूख को न मालूम रही हो। उसने कहा—उस मकान में जो पतली-सी गली है, उसके अन्त में एक गुम्बज है। उसके पास ही एक ढक्कनदार दरवाजा लगा हुआ है। उस दरवाजे के नीचे अँधेरे में एक घुमावदार सीढ़ी है। उस सीढ़ी से आदमी अनायास ही गुप्तरूप से घर के भीतर प्रवेश कर सकता है। यह बात ताम्ब्रे-जैसे पुराने नौकर को मालूम होनी चाहिए, यद्यपि वह पुलिस के सामने इस विषय में केवल आश्चर्य प्रकट करने के अतिरिक्त कुछ कह नहीं सका।

उपर्युक्त गली के आस-पास के कमरों को एक बार फिर से देखने का उन दोनों ने निश्चय किया और उपर्युक्त अवसर देखकर तंगे पैर बहुत धीरे-धीरे चलकर वे उस कमरे के पास पहुँचे, जिसमें भूमि पर लगी हुई शय्या आदि वे देख आये थे। कमरे के द्वार के पास पहुँचते ही चिपलूनकर एकाएक खड़ा हो गया और उसने संकेत से मयूख को भी आगे बढ़ने से रोक दिया। कान लगाकर जरा देर तक

खड़ा रहने के बाद, एकाएक वह भीतर घुस पड़ा। मयूख ने भी उसका अनुसरण किया।

उस कमरे में थी अहल्या नामक नौकरानी। एक बाल्टी में आग धधकाये हुए वह एक रेशमी साड़ी जला रही थी। आधी साड़ी तो जल गई थी और आधी बाल्टी के बाहर भूल रही थी। साड़ी जैसे-जैसे जलती जाती वैसे ही वैसे अहल्या उसे बाल्टी में बढ़ाती जाती। इसी उद्देश्य से वह साड़ी का वह अंश पकड़े हुए थी जो अभी जलने को बाक़ी था।

चील की तरह झपट्टा मारकर चिपलूनकर ने जलती हुई साड़ी को आग से निकाल लिया और उसके जलते हुए छोर को हाथ से मलकर उसने बुझा दिया। बाद को अहल्या के भय से विह्वल हो उठे मुख की ओर ताककर उसने पूछा—यह साड़ी किसकी है ?

अहल्या ने अपने सूखे हुए कंठ से किसी प्रकार यह वाक्य निकाला—मेरी है, हज़ूर !

“तुम्हारी है ? इस तरह की कीमती रेशमी साड़ी तुम पहनती हो ?”

“मालिकिन ने मुझे बख़शीश में दी थी यह।”

“परन्तु यह साड़ी तुम जला क्यों रही हो ?”

“पुरानी हो गई है। बहुत दिन पहन चुकी हूँ इसे।”

“पुरानी-जैसी तो अभी यह नहीं मालूम पड़ती ! तुम जब इतनी हिम्मत रखती हो कि रेशमी साड़ी आग पर रख दो तब इस तरह दूसरे की दासी बनकर क्यों रहती हो ?”

चिपलूनकर की इस बात के कारण अहल्या पहले तो निश्चर हो गई, किन्तु उसके बाद ही अपना बुद्धि-कौशल दिखाये बिना वह

न रह सकी। उसने कहा—मैं दासी का कार्य करती हूँ अवश्य, किन्तु एक बहुत बड़े दानी और धनवान् के यहाँ की दासी हूँ मैं। किसी ऐरे-गैरे की दासी नहीं हूँ।

अहल्या की बुद्धि के सामने पराजित होकर चिपलूनकर सुखी भी हुआ और साथ ही उसने कुछ दुःख का भी अनुभव किया। अब उसे स्पष्ट रूप से मालूम हो गया कि अहल्या से रहस्य मालूम कर लेना मैंने जितना आसान काम समझ रक्खा था उतना वह है नहीं। इसलिए उसने अपना कंठ-स्वर बदल दिया। उसने कहा—बुरा न मानना, मेरे मन में तुम्हारे प्रति कोई सदेह का भाव नहीं है। परन्तु तुम्हें शायद यह मालूम भी हो गया होगा कि छिपा महल में इधर जो दुर्घटनायें हुई हैं, उनके सम्बन्ध में आवश्यक जाँच-पड़ताल करने के लिए मैं आया हूँ। इससे मुझे सभी प्रकार की बातों का पता लगाना पड़ता है। पुलिस आ रही है इन कमरों की तलाशी लेकर इनमें ताला लगाकर मुहर कर देने के लिए। इसी लिए मैंने इन्हें पहले से एक बार देख लेना आवश्यक समझा। परन्तु तुम यदि इस रूप में पुलिस की निगाह में पड़ गईं तो ठीक न होगा। इसलिए जितनी शीघ्रता से हो सके, तुम यहाँ से खिसक जाओ, यह साड़ी तुम्हारी ओर से मैं जलाये देता हूँ।

चिपलूनकर साड़ी के टुकड़े को बाल्टी में जलती हुई आग में फेंकने को उद्यत हुआ, मानो अब उसके सम्बन्ध में उसे किसी प्रकार का कौतूहल रह ही नहीं गया था। इधर पुलिस का नाम सुनते ही अहल्या भयभीत होकर वहाँ से चल खड़ी हुई। चिपलूनकर की भाव-भंगी से उसे विश्वास हो गया कि साड़ी अब जला ही दी जायगी। इधर कमरे से उसके निकलते ही चिपलूनकर ने संकेत से मयूख को द्वार बन्दकर लेने का आदेश किया। बाद को साड़ी के टुकड़े को उसने भाड़कर

तहाया और उसे एक कागज़ में लपेटकर रख लिया । उसके बाद अहल्या ने साड़ी को जलाने के लिए जो कुछ रद्दी कागज़ वहाँ रख छोड़ा था, वह सब बाल्टी में रखकर उसने उसमें दियासलाई लगा दी ।

कमरे से निकलकर जाते-जाते चिपलूनकर बोला—देखो मयूख, अहल्या अभी फिर लौटकर आवेगी । आने पर वह यह भली भाँति समझ लेगी कि साड़ी जला दी गई है । परन्तु यह साड़ी अवश्य लालिमा की ही है । अहल्या के पास उसकी और भी चीज़ें होंगी । जब यह भोजन के लिए जाय तब इसके कमरे की तलाशी लेनी चाहिए । आप ज़रा उस ओर ध्यान रखिए और अहल्या स कमरे की ओर यदि आये तो कुछ समय तक उसे बातों में भिड़ा रखिए ।

सोलहवाँ परिच्छेद

छिपा महल के बगीचे की चहारदीवारी से बाहर वन में बसे हुए गाँव से ज़रा-सा हटकर एकान्त में एक गृहस्थ का निवास था। घर उसका एक दरिद्र गृहस्थ के समान ही फूस का था; परन्तु सफ़ाई और सजावट उसमें काफ़ी थी। मकान के चारों ओर बहुत ही सुशुचि-पूर्ण ढंग से सजाकर विभिन्न प्रकार के फूल तथा लतायें लगी हुई थीं। उस स्थान की शोभा देखकर एकाएक यह नहीं कहा जा सकता था कि यह किसी साधन-सम्पन्न व्यक्ति का स्थान नहीं है। वह मकान छिपा महल के प्रधान माली गणपति बाजीपुरकर का था।

उस मकान के बगीचे में एक किशोरी बालिका अपने अंचल में कुन्द के फूल उतार रही थी। अवस्था उसकी पन्द्रह वर्ष की रही होगी। भौरे के समान काली-काली उसकी आँखें थीं। दृष्टि उसकी निर्भिकता की व्यञ्जक थी। मुख उसका अधखिले गुलाब के फूल के समान कोमल, मनोरम और भाव-व्यंजक था। होंठ उसके मानो उसकी मानसिक दृढ़ता के दर्पण थे। किशोरी के उभड़े हुए उरोज और उसकी क्षीण कटि इस बात की साक्षी दे रहे थे कि यौवन ने नियमित समय से पहले ही इसके ऊपर अधिकार करने का उद्योग किया है। वह किशोरी गणपति बाजीपुरकर की कन्या थी, नाम था उसका पार्वती। छुटपन में अग्नि ने प्यार करके उसका नाम रख दिया था वन-ज्योत्स्ना। इसलिए पिता के रक्खे हुए नाम की अपेक्षा पिता के स्वामी के पुत्र का ही रक्खा हुआ नाम वह अधिक पसंद करती थी। जान-पहचान के लोगों में ज्योत्स्ना के ही नाम से वह पुकारी भी जाती थी।

छुटपन में अग्नि पार्वती को कन्धे पर बैठाकर बगीचे भर में दौड़ा करता, उसे प्यार करता, उसे तितलियाँ पकड़ देने का लोभ दिखाकर बगीचे के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक दौड़ता। इसके विपरीत वह उमे बराबर चिढ़ाता रहता, समय-समय पर डाँटकर रुला देने में भी वह संकोचन करता। परन्तु वयोवृद्धि के साथ ही साथ ज्योत्स्ना यह अनुभव करती जा रही थी कि अग्नि की अपेक्षा वह उमे के ही प्रति मेरे हृदय में अधिक अनुराग है, अधिक श्रद्धा का भाव है। अग्नि से वह एक साथी की तरह खुलकर मिला करती; किन्तु वह उमे के समीप वह इस प्रकार जानी, मानो किमी राजराजेश्वर के समीप उसकी एक तुच्छ दासी जा रही है। उसकी आज्ञाओं का बहुत ही विनयपूर्वक पालन करके वह अपने आपको कृतार्थ समझती थी। इस प्रकार शैशव काल में वह उमे के प्रति ज्योत्स्ना या पार्वती के हृदय में जो भय-मिश्रित सम्मान का भाव था, वही अब तरुण हो जाने पर प्रेम के रूप में परिणत होता जा रहा था।

वन-ज्योत्स्ना के सौन्दर्य की ख्याति सघन वन को फाड़कर गाँव-गाँव में फैलती जा रही थी। इससे उसे अपनी पुत्र-वधू बनाने की लालसा से पैगाम लगाने के लिए कितने ही माता-पिता तरह-तरह के उपाय सोच रहे थे। उसके हृदय का अपहरण करने की दुराशा हृदय में छिपाये हुए कितने युवक तरह-तरह के बहाने निकालकर इस सघन वन में चक्कर लगाया करते थे।

पार्वती का पालन-पोषण उसके पिता के स्वामी हुताशन बाबू के ऐश्वर्य के वायुमंडल में हुआ था। हुताशन बाबू जहाँ कहीं भी किसी पद पर नियुक्त होकर गये हैं, वहाँ सर्वत्र ही उनका माली गणपति परिवार-सहित उनके साथ-साथ गया है। ऐसे वायुमंडल में बड़ी होने

के कारण पार्वती की दृष्टि में समस्त पुरुष-समाज दो भागों में बँट गया था। एक भाग में बड़े लोग थे, जैसे हुताशन बाबू, अग्नि और वह्नि आदि; दूसरे भाग में थे उनसे निम्नकोटि के सब लोग। उसे मन में यह बात लाने तक में भी क्लेश होता था कि दुर्भाग्यवश मेरे पिता जी भी इस दूसरी ही कोटि में हैं और मैं एक छोटे आदमी की कन्या हूँ। छोटे आदमियों के प्रति उसे इतनी विरक्ति हो उठी थी कि वह उनसे दूर ही दूर रहा करती थी।

पिता के मालिक के यहाँ जितने भी आनन्द-उत्सव होते, जितने भी समारोह होते, उन सबसे पार्वती को दूर ही दूर रहना पड़ता। उन सबमें योगदान करते समय बड़े आदमियों के बीच में उसे स्थान नहीं मिल पाता था और नौकर-नौकरानियों के बीच में बैठना उसे सह्य नहीं था। इससे वह स्वभावतः सबसे दूर रहकर एकान्त जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य थी। इसके परिणाम-स्वरूप दूसरों से वह उत्तरोत्तर उदासीन होती जा रही थी। इसके सिवा उसके स्वभाव में रूखापन और अहंकार का भी भाव उत्तरोत्तर आता जा रहा था।

पार्वती के अहंकार का एक कारण और था। एक तो लोगों ने उसके सौंदर्य की प्रशंसा बहुत अधिक कर रखी थी, दूसरे वह स्वयं भी यह अनुभव किया करती थी कि मेरी जैसी अपार सौंदर्य-राशि इस अंचल की किसी और तरुणी के भाग्य में नहीं है। अपनी इस निधि को सुरक्षित रखने के लिए सावधान भी वह खूब रहा करती थी। कभी वह बर्तन नहीं मलती थी, हाथ में कभी झाड़ू नहीं उठाती थी। वह सोचती थी कि हाथों की कोमलता में कहीं कमी न आये, मेरी रेशम के समान चमकीली लटों पर कहीं गर्द न पड़ जाय।

पार्वती माता-पिता की अकेली लड़की थी, उनकी आँखों की तारा थी। उसके एक भाई था अवश्य, किन्तु घर में आजकल उसका कोई नाम तक नहीं लेता था। कुल का कलंक था वह। चोरी करके वह सजा काट रहा था। इससे पार्वती अकेली ही माता-पिता के पूर्ण स्नेह की अधिकारिणी थी। पिता उसका शौकीन और धनवान् आदमी का, आदर का, माली था। मासिक वेतन के अतिरिक्त समय-समय पर पारितोषिक भी वह उदार भाव से प्राप्त करता रहता, इससे पार्वती के सामने प्रायः किसी प्रकार के अभाव का अनुभव करने का अवसर वह नहीं आने देता था। इससे खूब ठाट-वाट बनाकर वह आलस्य में ही दिन व्यतीत किया करती थी।

पार्वती जब आलस्य का जीवन व्यतीत करते-करते ऊब जाती, तब फूल चुनकर कभी माला गूँथती, कभी फूलों का तोड़ा बनाती और किसी-किसी दिन वह माला और तोड़ा लेकर मालिकिन को उपहार देने जाती। किसी दिन घूमते-घूमते अग्नि जब उसके स्थान पर आ जाता तब अपनी गूँथी हुई माला उपहार के रूप में मुस्कराती हुई वह उसे ही दे देती। परन्तु मालिकिन निपुणिका को देने के लिए जाते समय जिस दिन वह उसके हाथ से माला छीन लेता था, बगीचे में फूल चुनते समय पहुँचकर वह उसके कोँछ के फूल छीनकर भूमि पर फेंक देता था; उस दिन पार्वती को यह अनुभव होता कि मेरा माला गूँथना आज सार्थक हो गया है, इन फूलों के साथ ही साथ मेरा भी जीवन चरितार्थ हो गया है। इस प्रकार छिपा महल में फूल और माला लेकर उपहार देने जाया करती थी वह निपुणिका को, किन्तु हृदय में उसके यह लालसा बराबर छिपी रहा करती थी कि वह वृद्धि आवे, और यह फूल और माला मुझसे छीन ले। इस प्रकार अवस्था-वृद्धि

के साथ ही साथ पार्वती के हृदय पर वल्लि के अनुराग का रंग उत्तरोत्तर गाढ़ा ही होता जा रहा था।

पार्वती के हृदय में वल्लि के प्रति आशक्ति बढ़ ही रही थी, इतने में विभीषण प्रधान नामक एक युवक ने उसके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट करके उसका हृदय अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तत्परतापूर्वक प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया। सितारा से आकर आजकल वह नाहिपुर में रहने लगा था। क्षत्रपति शिवाजी के किसी सम्मानित सरदार का वह वंशधर था। महाराष्ट्र देश के वीर-पुंगव भास्कर पंडित के साथ कर वसूल करने के लिए उसके पूर्वजों में से भी कोई गया था। परन्तु अपने इस वंशगत गौरव के साथ ही साथ विभीषण स्वयं भी कितनी ही विशेषताओं का आधार था। वह बलवान् था, कार्य-कुशल था और मेधावी था। घोड़े की तरह की तेज़ी के साथ वह दौड़ सकता था, बाँस के सहारे से कूदकर वह ऊँची से ऊँची चहारदीवारी को पार कर सकता था। दौड़ते-दौड़ते तीन-चार हाथ ऊँची दीवार या तीन-चार हाथ चौड़ा नाला डाँक जाता विभीषण के लिए साधारण बात थी। पाँच-पाँच, मान-सात मील तक एक साँस में दौड़ जाने की उसके शरीर में शक्ति थी। इसके सिवा उसके शरीर में इतनी अपार शक्ति एवं स्फूर्ति थी, इतनी अद्भुत उसमें मेधा थी, जिसके बल पर वह ऐसी कितनी ही करामातें दिखा सकता था, जिनसे चमत्कृत हुए बिना साधारण श्रेणी का आदमी नहीं रह सकता था।

घुड़-दौड़ तथा सर्कस में विभीषण प्रधान को विशेष सम्मान प्राप्त हुआ करता था। एक उच्च कोटि के सवार के रूप में वह विख्यात था। जिस घोड़े पर वह सवारी करता, दौड़ में वह अवश्य

ही सबसे आगे होता । इसलिए बाज़ी लगाकर घुड़-दौड़ में घोड़ा भेजनेवाले लोग प्रायः अपने घोड़े पर सवारी करने के लिए विभीषण से आग्रह किया करते थे । इसके अतिरिक्त उस अञ्चल में जैसे ही कोई सर्कस का दल आता, विभीषण भटपट उसमें सम्मिलित होकर अपनी व्यायाम-कुशलता तथा स्फूर्ति-व्यञ्जक चमत्कार का प्रदर्शन करके दर्शक-मण्डली को मुग्ध करने लगता ।

विभीषण जहाँ इतना शक्तिशाली और कितने ही प्रकार के कार्यों में दक्ष था, वहीं वह बहुत ही अहङ्कारी और अत्याचारी भी था । इधर आस-पास के पाँच-सात गाँवों के युवकों को मज्ज्ठित करके वह उनका सरदार बन बैठा था । अपने विभीषण अर्थात् अत्यन्त ही भयोत्पादक कर्मों की बदौलत विभीषण ने उस जवार में अपनी इस तरह की धाक जमा ली थी कि उसकी इच्छा के विरुद्ध जबान तक हिलाने का साहस किसी को न होता । बालक से लेकर वृद्ध तक सदा ही उससे डर-डरकर हर एक कार्य किया करते थे ।

विभीषण वह्नि को भी बहुत ही अधिक प्रिय था । उसी की बदौलत घुड़दौड़ में बाज़ी मारकर वह अपव्यय के लिए रुपये प्राप्त किया करता था । इससे अपने दत्तने बड़े सहायक के प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित करना वह्नि के लिए आवश्यक ही था । इधर वह्नि की छाया के कारण विभीषण की धाक और भी बढ़ गई थी और वह स्वयं भी अपने आपको एक बहुत ही महत्त्व का आदमी समझने लग पड़ा था ।

स्त्रियाँ स्वभाव से ही वीरता की पक्षपातिनी हुआ करती हैं । इससे आस-पास की कितनी ही तरुणियाँ विभीषण का प्रेम प्राप्त करने के लिए उत्सुक थीं । कितनी ही कुमारियों के माता-पिता विभीषण-जैसे

प्रभावशाली युवक को अपना जामाता बनाने के लिए लालायित थे। वास्तव में उसे एक आत्मीय के रूप में परिवर्तित करके गाँव के और लोगों के ऊपर आतङ्क जमा रखने की आकांक्षा से उस ओर के कितने ही लोग अपनी कुमारी पुत्री की ओर विभीषण का चित्त आकर्षित करने के लिए कितने प्रकार के प्रयत्न कर रहे थे। परन्तु विभीषण का मन लगा हुआ था केवल पार्वती की ओर, जो उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखती थी। पिता भी उसका विभीषण के प्रति उदासीन ही था।

विभीषण जब कभी भी पार्वती के प्रति घनिष्ठता प्रदर्शित करने का प्रयत्न करता, वह मुँह मटका देती, हँसी-मजाक करने पर गालियाँ दे बैठती। पार्वती के शरीर का स्पर्श करने का प्रयत्न करने पर एक बार विभीषण को उसके कोमल हाथ की एक चपत भी खानी पड़ी थी। इससे उस जवार के सभी लोगों पर आतङ्क जमा रखने-वाले विभीषण का क्रूर हृदय पार्वती के प्रति और भी क्रूर हो उठा था। मन ही मन उसने स्थिर कर लिया था कि कर, बल, छल से, जिस किसी प्रकार भी हो सकेगा, पार्वती को अपने अधिकार में ले आकर उसका अहङ्कार चूर्ण करके ही में रहूँगा।

एक दिन पार्वती को घर में अकेली देखकर उससे छेड़-छाड़ करने के विचार से विभीषण उसके पास पहुँचा। पार्वती बशीचे में टहल रही थी। उसके समीप पहुँचकर विभीषण ने कहा—संध्या के ऐसे सुखद समय में तुम्हारी-जैसी सुन्दरी के साथ ज़रा-सा प्रेमालाप करने का यह बहुत अनुकूल समय मालूम पड़ा मुझे।

पार्वती ने विभीषण को डाँट दिया। उसने कहा—तुम चले जाओ यहाँ से। उसके उत्तर में आँखें मटकाकर विभीषण ने

कहा—चला जाऊंगा, प्यारी, तुम घबराओ मत । किसी की दृष्टि पड़ने से पहले ही एक छलाँग मारकर मैं बेड़े से बाहर निकल जाऊंगा ।

पार्वती के हृदय में भय का सञ्चार हुआ अवश्य, किन्तु साहस का भाव प्रदर्शित करती हुई वह बोली—यदि तुम स्वयं नहीं जाते हो तो मैं तुम्हें मारकर भगाऊँगी यहाँ से ।

विभीषण ने दर्पपूर्ण स्वर में कहा—इस नाहिपुर में तुम अकेली ऐसी हो, जिसे मुझे मारने का साहस हो सकता है । अन्यथा मेरी ओर सीधे मुँह ताकनेवाला कौन है यहाँ ?

एकाएक कोड़े की चोट खाकर विभीषण चौंक पड़ा । साथ ही साथ उसके कान में एक पुरुष के कण्ठ से निकली हुई फटकार पहुँची—“और नाहिपुर में बेअदब की पीठ पर कोड़ा लगाने की शक्ति मुझमें है ।”

विभीषण और पार्वती ने एक साथ ही घूमकर पीछे की ओर देखा तो वह्नि खड़ा था । हाथ में उसके एक कोड़ा था ।

विभीषण को डाँटते हुए वह्नि ने कहा—निकलो यहाँ से । खबरदार ! बाद को यदि कभी तुमने इस मकान के आस-पास भी पैर रक्खा तो तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ दूँगा मैं !

सारा क्रोध मन ही मन दबाकर अपमानित भाव से विभीषण चला गया । उससे छुटकारा पाकर पार्वती ने भी कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से वह्नि की ओर ताककर हँस दिया ।

इधर विभीषण की भ्रुकुटि अब वह्नि की ओर टेढ़ी हुई । प्रकट रूप से यद्यपि वह वह्नि का अनुगत बनकर ही रहता था, किन्तु इस ताक में वह बराबर रहा करता कि कौन-से ऐसे विशेष अवसर पर

उसे नीचा दिखाया जाय, जिससे वह अधिक हानि का अनुभव कर सके।

वह्नि ने एक कार्य के लिए विभीषण को बहुत अधिक पुरस्कार देने का वचन दे रखा था। वह पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उस विषय की सभी बातें हुताशन से छिपा रखनी थीं। विभीषण को कभी-कभी यह इच्छा होती थी अवश्य कि उसका रहस्य प्रकट करके सारा बदला चुका लूँ, परन्तु पुरस्कार का लोभ उसकी इस प्रवृत्ति का बाधक हो रहा था।

जिस दिन अग्नि लापता हुआ था, उसी दिन विभीषण भी गाँव छोड़कर कहीं चला गया था। इससे लगातार तीन सप्ताह तक विभीषण की बिभीषिकामयी मूर्ति देखने का अवसर न पाकर पार्वती बहुत प्रसन्न हो रही थी। जिस दिन हुताशन बाबू का घुड़दौड़ का राकेट घोड़ा चोरी गया था, उसी दिन विभीषण को पार्वती ने वन में छिपकर टहलते हुए देखा था और पार्वती का ध्यान इस ओर भी गया था कि उसे देखते ही वह उतावली के साथ खिसक गया था। इससे पार्वती को ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। बाद को फिर से मिलने के दिन वह राकेट जिस पेड़ की डाली में बँधा हुआ पाया गया था, उसी पेड़ के नीचे पार्वती ने विभीषण को देखा था, यह उसे स्मरण हो आया। इससे पार्वती के हृदय में रह-रहकर इस बात का संदेह होने लगा कि इस वृक्ष के नीचे विभीषण के छिपे रहने, राकेट के गायब हो जाने और उसके फिर से मिल जाने आदि की घटनाओं में परस्पर बहुत घनिष्ठ सम्पर्क है।

राकेट के मिलते ही विभीषण भी गाँव में आगया। वह्नि के कारण पार्वती के मकान के इर्द-गिर्द तक पहुँचने का माहस

वह नहीं कर सका। परन्तु उसे देखने की लालसा तो सदा ही विभीषण के मन में अवीरता उत्पन्न करती रहती थी।

एक दिन विभीषण को मालूम हुआ कि आज वल्लि अपने भाई की खोज में कहीं बाहर गया है। इसलिए साहस करके वह पार्वती के घर के समीप गया और एक भुरमुट की आड़ में इस विचार से छिप रहा कि पार्वती जब घर से निकले तब मैं एकाएक पहुँचकर उसके साथ में हो लूँ, जिससे यह मित्र हो कि रास्ते में चलते-चलते अनायास हमारी-उसकी मुलाकात हो गई है।

साँभ होने से ज़रा देर पहले पार्वती ठाट-बाट बनाकर फूलों से भरी हुई भाबी हाथ में लटकाये हुए घर से निकली। विभीषण का अनुमान था कि पार्वती फूल लेकर छिपा महल में जा रही होगी। परन्तु बगीचे का बेड़ा पार करने के बाद फाटक बन्द करके जब वह विपरीत दिशा की ओर चली तब विभीषण के मन में यह बात आई कि वह जा रही है देवी जी के मन्दिर में फूल देने के लिए।

पार्वती जब आगे की ओर बढ़ने लगी तब विभीषण उस भुरमुट की आड़ से निकला और वह एक दूसरे रास्ते से इस विचार से खूब तेज़ी के साथ चला कि घूमकर आगे से पार्वती से मिलूँ। परन्तु काफ़ी दूर तक जाने के बाद घूमकर जब वह उस रास्ते पर आया, जिस पर से होकर पार्वती जा रही थी और उससे मिलने के विचार से पीछे की ओर लौटा तब एकाएक क्रोध और क्षोभ के कारण उसका शरीर थरथर काँपने लगा। विभीषण ने देखा कि मेरा सारा सङ्कल्प व्यर्थ करके वल्लि पहले से ही पार्वती को दखल किये हुए है। तो क्या ये दोनों इस प्रकार एकान्त में मिलने के लिए पहले से ही निश्चय कर चुके थे और उसका भाई को खोजने के लिए बाहर

जाना तथा इसका देवी जी के मन्दिर में फूल ले जाना केवल बहाना था ?

विभीषण वन में छिपकर वृक्षों की आड़ से होकर चलते-चलते देखने लगा कि आज वह्नि का चित्त काफ़ी प्रसन्न नहीं है। सुन्दरी युवती का मधुर संग पाकर भी उसका चित्त प्रफुल्लित नहीं हो सका है। दाहिने हाथ की मुट्ठी में बाईं हथेली ठोंक-ठोंककर मानो वह पार्वती से कुछ प्रस्ताव कर रहा है और उसे स्वीकार करने के लिए उसके ऊपर दबाव डाल रहा है अथवा उसे वह भय प्रदर्शित कर रहा है। और समीप जाकर विभीषण ने देखा तो पार्वती के नेत्रों में जल था। वह्नि पता नहीं कौन-सा ऐसा एक प्रश्न या प्रस्ताव पार्वती के सम्मुख बार-बार उपस्थित कर रहा था, जिसे स्वीकार करने की प्रवृत्ति उसे नहीं हो रही थी। अन्त में आँसुओं से भीगा हुआ अपना मुँह ऊपर करके पार्वती ने अपनी सहमति प्रकट की, जिससे संतुष्ट होकर वह्नि प्रसन्न हो उठा। पार्वती के कन्धे पर हाथ रखकर प्यार से उसके नेत्रों का जल पोंछते-पोंछते उसने कुछ कहा, बाद को भटपट सघन वन में प्रविष्ट होकर वह अदृश्य हो गया।

चुपचाप आगे बढ़ते-बढ़ते विभीषण पार्वती के बिलकुल समीप पहुँच गया और उसके सामने वह खड़ा हो गया। पार्वती अभी तक चिन्ता में निमग्न होकर अन्यमनस्क भाव से चली जा रही थी, किन्तु एकाएक विभीषण का आविर्भाव हो जाने के कारण चकित होकर भय के मारे चिल्लाती हुई वह दो पग पीछे हट गई। क्षण भर के बाद ही स्वाभाविक अवस्था में आकर उसने कहा—ओह, किस तरह का भय उत्पन्न कर दिया तुमने मेरे हृदय में ! कितने दुस्साहसी हो तुम !

उस दिन चाबुक खाकर भी तुमने ज़रा-सा ग्लानि का अनुभव नहीं किया ? छोटे आदमी हो न !

पार्वती की इन बातों के कारण विभीषण इतना अधिक चिढ़ गया कि उसने लट्ठ सीधी कर ली, परन्तु पार्वती डरी नहीं। व्यंग्य के स्वर में उमने कहा—बड़े वीर हो न तुम जो एक छोटी-सी बालिका के ऊपर हाथ छोड़कर बांह पुजाना चाहते हो ! राह चलती हुई एक स्त्री के पीछे-पीछे चोर की तरह चलने और उससे छेड़-छाड़ करने में तुम्हें लज्जा नहीं आ रही है ? क्या करने आये हो तुम यहाँ ?

विभीषण ने भी व्यंग्य के ही स्वर में कहा—अभी तक तो तुम नाहिपुर के ज़मींदार की पुत्र-वधू हो नहीं पाई हो जो तुम्हारी आज्ञा लेकर ही चलना-फिरना होगा ! तुम्हारी तरह का मैं नहीं हूँ जो दूसरे की आँखों की लालिमा देखते ही अपनी आँखें आँसुओं से डुबो दूँगा ?

विभीषण की इस बात से पार्वती कुछ चकित तो अवश्य हुई, किन्तु दर्पमय स्वर में बोली—तुम्हारे भय में आँसुओं की झड़ी लगा दूँ, ऐसी लड़की मैं नहीं हूँ !

“यह तो ठीक है, परन्तु वह्नि बाबू के भय से तो अभी ही तुम छाती तक धो चुकी हो !

पार्वती का मुँह सूख गया। फिर भी कण्ठ-स्वर ऊँचा करके वह बोली—भूठ बोलने में तुम्हें लज्जा नहीं आती ?

“भूठ बोल रहा हूँ मैं ? वह्नि ही तो था जो अभी कान पकड़े हुए तुम्हें टहला रहा था।”

पार्वती गरज उठी—इतना साहस हो गया है तुम्हें ? तुम मेरा अपमान करते हो ? किसी दिन वह्नि बाबू से कहकर तुम्हारी पीठ पर फिर कोड़े लगवाये जायँ तब तुम दुश्स्त हो जाओगे ।

विभीषण ने कहा—वह्नि बाबू ने ही तो तुम्हारा दिमाग आसमान पर चढ़ा रक्खा है। जमींदार की पुत्र-वधू बनाने की मृग-तृष्णा दिखाकर उसने तुम्हारी मति भ्रष्ट कर दी है और अपने पाप कर्म की सहकारिणी बना रक्खा है तुम्हें। अभी-अभी अपने अनुचित प्रस्ताव पर तुम्हें सहमत करके, तुम्हारे आँसुओं की उपेक्षा करके, वह चला गया है।

पार्वती के मुख पर भय की छाया उदित हो आई। परन्तु उसकी आकृति पर गर्व का जो अदम्य भाव था उसे वह विभीषण के सामने ज्यों का त्यों बनाये रखने का प्रयत्न करने लगी। रूखे स्वर में उसने कहा—लो, अब रास्ता छोड़ दो, जिससे घर पर जाकर मैं निश्चिन्त हो सकूँ।

“तुम यदि न निश्चिन्त हो सकोगी तो नाहिपुर में ऐसा और कौन है जो चिन्तारहित जीवन व्यतीत करेगा। बहुत ही घने और एकान्त वन में तुम्हारा घर है। यहाँ यदि खून-खच्चर हो जाय, तो भी किसी को पता नहीं चल सकता; यह बात तुम्हें बहुत अच्छी तरह मालूम है।”

विभीषण की इस बात ने पार्वती के कंठ-स्वर को मानो दबा दिया। दबी ज़बान से वह बोली—इन सब बातों का मतलब ?

“मतलब यही है कि यदि मैं चाहूँ तो ऐसी कितनी बातें प्रकट कर सकता हूँ, जिन्हें प्रकाश में आने देना तुम्हें अभीष्ट नहीं है।”

पार्वती के पैरों को मानो किसी ने कहीं पर बाँध दिया। सतर्क भाव से उसने कहा—ऐसी कौन-सी बात है, जिसे प्रकट कर सकते हो तुम ?

पार्वती को एक तो यह जानने का कौतूहल था कि कौन-सी गुप्त बात इस आदमी ने जान रखी है, दूसरे वह डर भी रही थी कि पता नहीं, कौन-सी ऐसी बात प्रकट कर देगा यह जो मेरे अनिष्ट का कारण हो सकती है। इधर पार्वती के ऊपर व्यंग्य कसते हुए विभीषण ने कहा—तुम्हें भय किम बात का है? मकान तुम्हारा है सघन वन में, निस पर जमींदार के लड़के का बहुत ही गुप्त रूप से किया गया दुष्कर्म है। पेड़ पर चढ़कर भाँकते हुए यदि किसी ने उस दुष्कर्म को देख भी लिया है तो उसकी बात पर विश्वास ही कौन करने लगा?

पार्वती ने हाँफते-हाँफते कहा—इसका मतलब यह है कि शायद तुम चोर की तरह दूसरों का घर भाँकते फिरते हो?

अपना कंठ-स्वर प्रणय से गद्गद करके विभीषण ने कहा—मैं तुम्हें चाहता हूँ पार्वती! मेरे द्वारा तुम्हारा किसी प्रकार का भी अनिष्ट होना सम्भव नहीं है। तुम्हारे घर में एक नवयुवती को चाय की तरह की कोई चीज पिलाई गई थी, बाद को उसी चीज के प्रभाव से उसकी मृत्यु हो गई है। ठीक है न?

पार्वती को मानो मूर्च्छा-मी आ रही थी। असमर्थ भाव से हाँफते-हाँफते उसने कहा—रास्ता छोड़ो, मुझे घर जाने दो।

“जरा देर तक और धैर्य धारण किये रहो, मुझसे तुम डर क्यों रही हो इतना? तुम्हें यदि यह मालूम होता कि तुम्हारी चिन्ता से जाग-जागकर कितनी रात्रियाँ व्यतीत कर दी हैं मैंने, तब तुम मुझसे इस तरह का निष्ठुरता का व्यवहार न कर सकतीं। तुम्हारे उपेक्षापूर्ण व्यवहार का उत्तर उपेक्षा के ही साथ देने का मैंने प्रयत्न किया है। मुझे प्राप्त करके जो अन्य कितनी ही युवतियाँ अपने आपको कृतार्थ समझेंगी, उनकी ओर अपने मन को ले जाने का प्रयत्न मैंने

किया है; परन्तु सफलता मुझे नहीं मिल सकी। तुम्हारे लिए मैं पागल हो रहा हूँ। तुम्हें प्राप्त करने के लिए मैं चोरी, डकैती तथा हत्या आदि सभी कुछ करने को तैयार हूँ। यदि तुम मेरे साथ विवाह करने पर सहमत न होओगी तो पता नहीं मैं कैसा अनर्थ कर बैठूँ। समझ रखो, मेरा नाम है विभीषण !

विभीषण की यह बात सुनते ही पार्वती का मुँह सूख गया। उसकी उग्रता शान्त करने के विचार से वह बोली—अच्छा, अच्छा, मैं सोचकर देखूँगी। इस समय मुझे जाने दो, रागना छोड़ो।

“चलो चलो, मैं भी तुम्हारे साथ-साथ चलूँ; लोग देखें कि मैं तुम्हारा कृपा-पात्र हूँ, भावी स्वामी हूँ।”

और कोई उपाय न देखकर पार्वती ने विभीषण की आज्ञा का पालन किया। अन्त में अपनी फुलवाड़ी के फाटक के पास पहुँचकर वह बोली—अच्छा, अब मैं चलती हूँ, तुम भी चलो।

“अच्छी बात है। परन्तु जब दोनों हाथ एक हो जायँगे तब तुम इस तरह फाटक के बाहर से ही मुझे न खदेड़ सकोगी।”

पार्वती भीतर की ओर चली। विभीषण वहीं खड़ा-खड़ा लोलुप दृष्टि से उसकी ओर ताकता रहा। कुछ ही कदम आगे बढ़ने के बाद पार्वती फिर लौटी। विभीषण के पास आकर उसने कहा—तुम जो दवा आदि पिलाने की बातें कह रहे थे, वे सब निस्सार हैं। लालिमा बाई यहाँ आई थीं और उन्हें मैंने चाय पिलाई थी। चाय पीकर वे चली गईं। बाद को क्या हुआ, यह सब मैं नहीं जानती। तुम झूठी बात मत बकते फिरो भाई, इससे दूसरे पर संकट आ सकता है।

“अच्छा, अच्छा, मैं बहुत ही शान्त और शिष्ट आदमी की ही तरह मुँह बन्द किये रहूँगा। परन्तु यदि तुम मेरा मुँह बन्द कर दो तब।

“इसका मतलब ?”

लोलुपतामयी दृष्टि से एक बार पार्वती की ओर ताककर विभीषण ने एक बार दाँतों से अपना ओंठ दबाया, बाद को उसने जीभ निकाल-कर ओंठ चाट लिया।

पार्वती का सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा। विभीषण के संकेत को हृदयङ्गम तक करने में वह घृणा का अनुभव करने लगी। कातर स्वर में वह बोली—“नहीं, नहीं, यह सब अभी रहने दो।

“तब भला मेरा मुँह किस तरह बन्द होगा ?”

हताश होकर पार्वती ने बड़े के भीतर से मुँह बढ़ा दिया। विभीषण ने झुककर उसका चुम्बन किया। बाद को अत्यन्त ही तृप्ति का अनुभव करते हुए उसने कहा—“आह ! कितना मधुर है यह चुम्बन, मानो मधु है ! यह मधुर स्वाद प्राप्त करने के लोभ से बीच-बीच में बन्द मुँह खोलने का प्रलोभन हो सकता है। परन्तु तुम्हें प्राप्त कर लेने पर यह मुँह खोलने का तो फिर अवसर ही न रहेगा।

विभीषण की ये रसिकतामयी बातें सुनने के लिए खड़ी न रहकर पार्वती भीतर की ओर बढ़ी। उसकी ओर ताकते हुए विभीषण ने कहा—“पार्वती, क्या तुम कल भवानी का श्रृंगार देखने चलोगी।

ज़रा पीछे की ओर ताकती हुई पार्वती बोली—“हाँ, जाऊँगी। साथ में मा भी जायँगी।

“नहीं, मेरे साथ चलना होगा। रास्ते में जो पलास का वृक्ष है, उसके नीचे खड़े-खड़े दस बजे मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहूँगा।

पार्वती ने सोचा कि इनकार करने पर यह पिंड छोड़नेवाला है नहीं, इससे बोली—अच्छी बात है, उस समय तक मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी।

भय, क्रोध और घृणा के मारे पार्वती का मुख बिल्कुल ही प्रभाहीन हो गया था। उधर विभीषण बहुत ही संतोषमयी दृष्टि से उसकी आगे की ओर बढ़ती हुई मूर्ति को मुग्धभाव से देखता रहा।

सत्रहवाँ परिच्छेद

एक दिन समस्त नौकरों और नौकरानियों को बुलाकर हुताशन ने कहा—अग्नि के अदृश्य होने तथा लालिमा की मृत्यु के सम्बन्ध का रहस्य तुममें से यदि कोई प्रकट कर सके, तो इस कार्य के लिए घोषित किये पुरस्कार का दुगुना पुरस्कार उसे मैं दूँगा ।

मालिक की शोक से भरी हुई ये आग्रहपूर्ण बातें सुनकर सभी नौकरों तथा नौकरानियों को बड़ा दुःख हुआ । किसी का मस्तक ऊपर नहीं उठा, किसी के भी मुँह से कोई बात नहीं निकली । केवल अहल्या ने आँसू पोँछे और ताम्बे ने कहा—हम लोगों को किसी प्रकार का पुरस्कार न चाहिए, हुजूर ! बड़े भैया का लौटकर आ जाना ही मेरे लिए बहुत बड़ा पुरस्कार होगा ।

हुताशन सभी नौकरों और नौकरानियों को ऊपर बुलाकर उनसे इस तरह की बातें कर रहे थे, उधर चिपलूनकर नीचे उन सबके कमरों की तलाशी ले रहा था । सीढ़ी के पास खड़े-खड़े मयूख पहरा दे रहा था, इसलिए कि यदि कोई नीचे की ओर जाता हुआ दिखाई दे तो सीटी बजाकर वह चिपलूनकर को सावधान कर दे । परन्तु किसी नौकर के लौटने से पहले ही कागज़ में कोई चीज़ लपेटते-लपेटते एक कमरे से निकलकर चिपलूनकर मयूख के पास लौट आया । तब वे दोनों दर से निकलकर बगीचे की ओर चले ।

कागज़ में लपेटी हुई चीज़ को कोट की भीतरवाली जेब में छुकर बटन लगाते-लगाते चिपलूनकर ने कहा—जली हुई साड़ी 'मेल' का ही एक ब्लाउज़ भी मिला है । अहल्या के बक्स में

रक्खा हुआ था वह। इससे यह बात भली भाँति प्रमाणित हो जाती है कि लालिमा की मृत्यु से अहल्या का सम्पर्क अवश्य है। यह हो सकता है कि उसे मारने के लिए स्वयं अहल्या ने किसी प्रकार का प्रयत्न न किया हो, परन्तु इतना तो उसे अवश्य ही मालूम होना चाहिए कि लालिमा किस प्रकार मरी है और किस प्रकार उसे यहाँ लाया गया है। उसके कपड़ों को जला देने का भी भार अहल्या पर ही छोड़ा गया था।

“परन्तु यह सब अहल्या को दिया किमने होगा, क्या कुछ अनुमान होता है तुम्हें?”

“लालिमा की लाश तो अग्नि के ही कमरे में, उसके सन्दूक में भरकर उमी के कम्बल से ढँकी हुई पाई गई है। इसके सिवा घर के सभी लोगों, विशेषतः प्रमिता तक से यही सुनने में आया है कि अग्नि लालिमा के प्रति विशेषरूप से अनुरक्त था। लालिमा की मृत्यु के साथ ही साथ अग्नि अदृश्य भी हुआ है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि अग्नि लालिमा के प्रेम-पाश में बँधा हुआ था, किन्तु भंडाफोड़ होने की आशंका देखकर वह इस प्रकार का दुष्कर्म कर बैठा है। मैं तो उसके स्वभाव से परिचित हूँ नहीं, इससे निश्चित रूप से कुछ कह नहीं सकता।”

मयूख ने कहा—अग्नि के द्वारा इस तरह का घृणित कार्य होना सम्भव नहीं है। वह बहुत ही लज्जाशील और शान्त प्रकृति का मनुष्य है। किसी स्त्री को छेड़कर उससे बातें करना या उसका प्रेम प्राप्त करने के लिए अपनी ओर से प्रयत्न करना उसके स्वभाव के विपरीत है।

चिपलूनकर ने कहा—ठीक इसी प्रकार के ही लोग तो चालबाज़ औरतों के फेर में पड़कर बिल्कुल सत्यानाश हो जाते हैं। प्रलोभन

में पड़कर एक बार जब वे कोई दुष्कर्म कर डालते हैं तब घबराहट के मारे एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा भी करते जाते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि आपके मित्र का स्वभाव परिवर्तित हो गया हो।

मयूख बोल उठा—ये सारी बातें बहुत ही जटिल रहस्य के दृढ़ आवरण में ढँकी हुई हैं। केवल इतनी ही बात अभी तक स्पष्ट हो सकी है कि अहल्या को ऐसी बहुत-सी बातें मालूम हैं, जिन्हें हम नहीं जानते। अच्छा होगा कि अब उसे पुलिस के हवाले कर दिया जाय और प्रकट रूप से उस पर मामला चलाया जाय।

चिपलूनकर ने कहा—इतनी उतावली न करनी चाहिए भाई ! एकाएक कोई काम कर बैठना अच्छा नहीं है। आप यह भूल रहे हैं कि अहल्या निपुणिका देवी की एक विश्वासपात्र भृत्या है। कोई आश्चर्य नहीं कि उसने केवल अपनी स्वामिनी की आज्ञा का ही पालन किया हो। निपुणिका देवी अग्नि का विवाह प्रमिता के साथ किसी प्रकार भी न होने देने की प्रतिज्ञा तो कर ही चुकी थीं।

“यह सारी दुर्घटना बल्लि और उसकी माता के कुचक्र का ही फल है। बल्लि अपने भाई की वाग्दत्ता वधू पर लोलुप दृष्टि लगाये हुए है, रुपये उसे खर्च भर के लिए कभी जुटते नहीं, पिता के रुपये वह बराबर चुराता रहता है.....।”

मयूख ये बातें बड़ी गर्माहट के साथ कह रहा था। ठीक उसी समय निपुणिका वहाँ आ पहुँचीं। उसे उत्तेजित भाव से बोलते हुए देखकर उन्होंने पूछा—क्या बात है मयूख ? क्या रहस्य का कोई सूत्र कहीं से मिल गया है ?

निपुणिका के इस प्रश्न ने मयूख की क्रोधाग्नि पर घृत की आहुति का काम किया। अधीर होकर कर्कश स्वर में वह बोल उठा—किस तरह से मिल सकेगा? माता-पुत्र ने मिलकर सारा कुचक्र चलाने के बाद मुझसे पूछने आई हो कि कुछ पता चल सका है या नहीं?

निपुणिका ने आँखें निकालकर चकितभाव से मयूख की ओर देखा। वे बोलीं—यह क्या कह रहे हो मयूख?

पहले की ही तरह कर्कश स्वर में मयूख ने कहा—मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह आपको भली भाँति मालूम है। हमें ऐसे प्रमाण मिल गये हैं जिनके कारण अब आपका इस प्रकार बनना काम न दे सकेगा।

मयूख की इस बात से निपुणिका का हृदय व्यथित हो उठा। साथ ही उन्होंने अपने आपको कुछ अपमानित भी अनुभव किया। दर्पमय स्वर में वे बोलीं—तुम मुझ पर संदेह करते हो? अच्छी बात है। मालिक के सामने अपने प्रमाण उपस्थित करना, वे विचार करेंगे मामले पर। अन्त में तैश में आकर वहाँ से वे चली गईं। एकाएक इस प्रकार की घटना हो जाने के कारण मयूख और चिपलूनकर भी चिन्ता से अभिभूत हो उठे।

जरा देर के बाद मयूख के कन्धे पर हाथ रखकर चिपलूनकर ने कहा—काम तो अच्छा नहीं हुआ दोस्त! बहुत धीरभाव से अनुसन्धान करने पर रहस्य का उद्घाटन किया जा सकता है। इस मामले में यदि कहीं किसी प्रकार की उतावली की गई तो सारा परिश्रम ही निरर्थक हो जाता है। अपराधी को जब तक भली भाँति मुट्ठी में न कर लिया जाय तब तक संदेह न प्रकट करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से वह सावधान हो जाता है।

मयूख स्वयं भी इस बात का अनुभव कर रहा था। चिपलूनकर की बात का कोई उत्तर न देकर वह मौनभाव से यही सोच रहा था कि आगे मेरा कर्तव्य क्या होना चाहिए।

मयूख और चिपलूनकर दोनों ही चुपचाप बगीचे में टहलने गये। ज़रा ही देर के बाद फूलचन्द नामक नौकर ने आकर कहा कि मालिक आपको बुला रहे हैं।

फूलचन्द के साथ घर में जाकर मयूख ने देखा तो हुताशन क्रुद्धभाव से कुछ कठोर-से होकर खड़े थे। उनके पास ही निपुणिका भी उद्धत-भाव से खड़ी थीं।

मयूख के समीप पहुँचते ही हुताशन ने ज़रा-सा रूखे स्वर में कहा—
मयूख, मित्र के प्रति तुम्हारे हृदय में अधिक प्रीति तथा मित्र के वियोग के कारण अधिक दुःख होने के कारण उतावले होकर तुम बहुत बड़ी भूल कर बैठे हो। वह्नि का स्वभाव कुछ सलोह है अवश्य, परन्तु अभी वह इस तरह का नीच नहीं हो गया है कि अपने भाई तथा एक निरपराध स्त्री की, जिससे कि उसका कोई सम्पर्क नहीं है, हत्या कर डालेगा। इसके सिवा उसकी मा के सम्बन्ध में इस प्रकार की कल्पना करना कि ऐसे दुष्कर्म में उनका हाथ हो सकता है, नितान्त ही असंगत है।

मयूख दोषी सिद्ध करने जा रहा था दूसरे को, किन्तु एक प्रकार का दोष उसी पर आरोपित कर दिया गया। इससे उसे कुछ तो लज्जा आई, कुछ क्रोध आया और कुछ वह उतावला भी हो उठा और बोला—मुझे जो-जो प्रमाण

मयूख की बात काटकर हुताशन ने कहा—आकाश-पाताल एक करके भी अभी तक पुलिस और जासूस किसी प्रकार के सूत्र का अनुसंधान

नहीं कर सके हैं, यद्यपि उनका यह प्रतिदिन का कार्य है। ऐसी परिस्थिति में तुम-जैसे व्यक्ति का, जिसे इस प्रकार के कार्य का कोई अनुभव नहीं है, यह समझना कि हमने प्रमाण प्राप्त किये हैं, केवल भ्रम है। परन्तु यदि वैसी कोई बात हो तो पुलिस को।

पुलिस का नाम सुनते ही निपुणिका का मुँह सूख गया। व्यस्त होकर वे बोल उठीं—पुलिस से पहले तुम्हीं क्यों नहीं उन प्रमाणों पर विचार करते ?

हुताशन ने कहा—यदि तुम लोगों का कुछ अपराध होगा तो उसके कारण मैं भी अपराधी हूँगा। हमारे अपराध के सम्बन्ध में विचार करनेवाले दूसरे लोग होंगे, हम स्वयं कैसे उनके सम्बन्ध में विचार करने के अधिकारी हो सकते हैं ?

इस घटना के बाद उस घर में रहने में मयूख बहुत ही संकोच का अनुभव करने लगा। इससे हुताशन से बिदा लेकर भवानी-मंदिर से मिली हुई धर्मशाला में जाकर उसने अड्डा जमाया।

अठारहवाँ परिच्छेद

भवानी-मंदिर के पुजारी मोरोपन्त दीक्षित ने मयूख को छिपा महल के सम्बन्ध की बहुत-सी बातें बतलाईं। उन्होंने कहा—निस्सन्देह वहाँ कई सुरंगें हैं जो दूर-दूर तक चली गई हैं। एक सुरंग इस मंदिर तक भी आई है। उसका द्वार तथा उसमें प्रवेश करने की सीढ़ी अभी तक बनी हुई है। प्राचीन काल में दुर्ग पर चढ़ाई होने पर दुर्ग के निवासी इससे होकर बाहर चले आते और रसद आदि का संग्रह कर ले जाते। जब उन्हें इस बात की आशंका होती कि दुर्ग की रक्षा करना असम्भव है, तब वे इससे होकर आत्मरक्षा के लिए भाग निकला करते थे। शान्ति के समय इस सुरंग से होकर दुर्ग की स्त्रियाँ देवी जी के दर्शन के लिए आया करती थीं। इसमें कुछ ऐसी भी सुरंगें हैं जिनसे होकर पर्वत के भरणों का जल प्रवाहित होता रहता है। इस छिपा महल में चोर-कोठरियों, सुरंगों तथा गुप्त दरवाजों और सीढ़ियों की भरमार है। परन्तु इस छिपा महल का विस्तृत इतिहास और विवरण मंदिर के वृद्ध प्रबन्धक गंगाधर जोशी से मालूम हो सकता है।

मन्दिर का विस्तृत प्राङ्गण पत्थर की ऊँची चहारदीवारी से घिरा हुआ था। मन्दिर के पीछे की ओर चहारदीवारी से भिड़ाकर कुछ मकान बनाये गये थे। उनमें से किसी में देवी को अर्पित करने के लिए प्रसाद बनाया जाता था, किसी में पूजा की सामग्रियाँ रक्खी जाती थीं और किसी-किसी में पुजारी, प्रबन्धक तथा देवी की सेवा-पूजा के कार्य में संलग्न रहनेवाले अन्य कार्यकर्त्ता सपरिवार रहा करते थे। मोरोपन्त से बातें करके मयूख जोशी जी की खोज में मन्दिर

के पीछे बने हुए उन मकानों की ओर गया। वहाँ उसने एक मकान के सामने पलाश के दो वृक्ष लगे हुए देखे। उनके ऊपर चढ़कर माधवीलना इस तरह फैल गई थी कि उन दोनों वृक्षों के बीच का जो स्थान था, वह आच्छादित हो उठा था। वसंत के समागम के कारण वे दोनों ही वृक्ष-लतायें सघन पल्लवों तथा पुष्प-मञ्जरियों से विभूषित होकर इस प्रकार सुशोभित हो रही थीं, मानो द्वार पर कोई हरे रंग का कामदार पर्दा टँगा हुआ था। ज़रा-सा और आगे बढ़कर मयूख ने देखा तो उस लता की आड़ में बैठी हुई एक अत्यन्त सौन्दर्यशालिनी तरुणी लता के फूल ले-लेकर उन्हें बालों में लगा रही थी।

वैसी अवस्था में एकाएक तरुणी के समीप जाकर मयूख कुछ संकुचित-सा हो उठा, किन्तु बाद को अपने आपको किसी प्रकार सँभालकर वह बोला—जोशी जी कहाँ हैं ? मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।

एक अपरिचित युवक को देखकर तरुणी भी कुछ संकुचित हो उठी और यह कहकर कि आप ज़रा-सा ठहर जाइए, मैं बुलाये देती हूँ, अपना फूलों का शृंगार समाप्त किये बिना ही वह उठ पड़ी और भीतर की ओर चली। उसके उठने के क्षण भर बाद ही एक वृद्ध निकल आये। अवस्था उनकी नब्बे वर्ष से अधिक हो उठी थी। वे मयूख की ओर बढ़े आ रहे थे।

वृद्ध को देखते ही मयूख ने अनुमान किया कि ये ही गंगाधर जोशी हैं और तरुणी इनकी कन्या है। समीप आते ही मयूख ने बहुत ही सम्मानपूर्वक उन्हें नमस्कार किया और कहा—शायद आप जोशी जी हैं। छिपा महल की सुरंगों के सम्बन्ध में मैं अनुसंधान कर

रहा था। दीक्षित जी से मालूम हुआ कि आपकी जानकारी इस विषय में अधिक है, इसी लिए आपकी शरण ली है मैंने।

मयूख यह बात वृद्ध से कह तो रहा था, किन्तु दृष्टि उसकी लगी हुई थी पीछे खड़ी हुई तरुणी के लज्जा से मंकुचित तथा कौतूहल से व्यग्र मुँह की ओर।

जोशी जी ने कहा—हमारे छुटपन में ये सब सुरंगें बहुत ही अच्छी दशा में थीं। उस समय हम लोग इनमें से होकर लुका-छिपी का खेल खेला करते थे। कौन-सी सुरंग कहाँ को गई है और किसका मुख कहाँ पर है, यह हमें भली भाँति मालूम था। अब काल-क्रम से कई सुरंगें पट गई हैं, कुछ उस बार के भूकम्प में बैठ गई हैं। एक सुरंग वन में जाकर समाप्त हुई है, एक नदी के तट तक चली गई है, एक भवानी-मंदिर तक आई है और एक कहाँ को गई है, यह बात हम लोगों को भी नहीं मालूम है।

इतनी बातें कहते-कहते वृद्ध हाँफने लगे थे। इससे वे दम लेने लगे। इधर मयूख का जितना ध्यान उनकी बातों की ओर था, उससे कहीं अधिक था उस सुन्दरी तरुणी की ओर। ज़रा देर तक दम लेने के बाद वृद्ध फिर बोले—मुझमें तो अब इतनी शक्ति है नहीं कि मैं आपके साथ चल सकूँ; परन्तु यह मेरी कन्या साथ में जाकर आपकी सभी सुरंगें दिखा लायेगी।

मयूख से यह बात कहकर वृद्ध ने कन्या की ओर मुँह फेरा। मरहठी भाषा में उन्होंने उससे कुछ कहा, जिसे सुनकर लज्जा के कारण तरुणी का मुख लाल हो उठा। इधर मयूख के मन में सुरंग देखने की जो आकांक्षा थी, वह बढ़कर द्विगुणित हो उठी।

तरुणी का नाम अर्च्चा था। लज्जा से मुँह लाल किये हुए

मंथर गति से वह आगे की ओर बढ़ी । कुछ कदम चलने के बाद ही मुँह फेरकर उसने देखा कि मयूख साथ में आ रहा है या नहीं ? इधर मयूख खड़े-खड़े यह संकल्प-विकल्प कर रहा था कि इस तरुणी के साथ मैं अकेला जाऊँ या नहीं ?

मयूख को आगे न बढ़ते देखकर अर्च्चा ठमक कर खड़ी हो गई । जोशी जी ने भी उससे कहा—आप मेरी कन्या के साथ जाइए, उसे सभी सुरंगें मालूम हैं ।

अब मन ही मन प्रसन्न होकर मयूख ने अर्च्चा का अनुसरण किया । मंदिर के प्राङ्गण को पार करके उन दोनों आदमियों ने बाहर वन में प्रवेश किया । कई कदम आगे बढ़ने के बाद ही अर्च्चा ने घास से ढँका हुआ एक ऊँचा-सा ढूहा दिखाकर मयूख से कहा—पिता जी से मैंने सुना था कि यहाँ पर एक सुरंग का मुँह था ; किन्तु मिट्टी गिरने के कारण आजकल वह पट गया है ।

ढूहे के पास से चलकर मयूख और अर्च्चा कुछ और आगे बढ़े । वहाँ मंदिर के आकार के एक मकान का खँडहर दिखाई पड़ा । उस मंदिर से मोरी के आकार की पत्थर से बँधी हुई एक नहरी वन की ओर चली गई थी । उसे दिखलाकर अर्च्चा ने कहा—पिता जी कह रहे थे कि एक सुरंग यह भी थी, भूकम्प में इसकी छत टूटकर गिर पड़ी थी ।

यह सुरंग छिपा महल से मिली हुई है या नहीं, यह बात जानने के लिए मयूख को बहुत ही प्रबल कौतूहल हो रहा था । इससे उसने अर्च्चा से कहा—आप ज़रा देर तक ठहरिए, मैं भट से देख आता हूँ कि यह सुरंग कहाँ तक गई हुई है ।

अर्च्चा ने कहा—इस नाले के पास से होकर चलते-चलते आप

सीधे बीच वन में बने हुए गणपति बीजापुरकर के मकान के पास पहुँचेंगे। वहीं एक कूप में जाकर यह सुरंग समाप्त हुई है।

मयूख का कौतूहल निवृत्त करने के लिए अर्च्चा ने गणपति तथा उसकी कन्या पार्वती, उपनाम वन-ज्योत्स्ना का परिचय विस्तार-पूर्वक दिया और कहने लगी—पार्वती के सौंदर्य की ओर जिस युवक की दृष्टि जाती है, उसी के दिमाग में चक्कर आ जाता है। देश-विदेश के कितने युवक आ-आकर पार्वती का अनुग्रह प्राप्त करने की लालसा से उसके द्वार पर धरना देते रहते हैं।

ज़रा-सा अर्थपूर्ण भाव से मयूख की ओर ताककर अर्च्चा ने मुस्करा दिया।

पार्वती के सौंदर्य की ख्याति तथा उसके प्रति अग्नि और वह्नि के अनुराग का हाल सुनकर मयूख का आकर्षण और भी अधिक प्रबल हो उठा। वह सोचने लगा—आश्चर्य नहीं कि पार्वती को भी अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अग्नि और वह्नि में प्रतियोगिता हुई हो। इसलिए अग्नि के अन्तर्धान होने का कोई सूत्र पार्वती से भी प्राप्त किया जा सकता है। यह अनुमान करके मुस्कराते हुए मयूख ने कहा—मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि नाहिपुर सुन्दरियों के लिए विख्यात है; परन्तु भवानी-मंदिर में जिस सौंदर्य की अर्चना देख आया हूँ मैं, उसे पराजित कर सकने योग्य सौंदर्य नाहिपुर की ओर किसी तरुणी में है, इस बात का विश्वास मुझे नहीं होता।

मयूख की इस बात के उत्तर में कृत्रिम रोष प्रकट करती हुई अर्च्चा बोली—बे-अदब कहीं के ! ज़रा सँभालकर मुँह से बातें निकालिए !

अर्च्चा ने मयूख को जो इस प्रकार खुलकर डाँटा, इसके कारण मयूख ने इतने अधिक आनन्द का अनुभव किया कि मानो उसे स्वर्ग

का राज्य मिल गया। आनन्दित भाव से आगे की ओर पैर बढ़ाते-बढ़ाते मुँह फेरकर मुस्करा देने के अतिरिक्त अर्च्चा की फटकार के उत्तर में मयूख कुछ बोल नहीं सका।

मयूख प्रसन्नभाव से नाले के पास-पास चलने लगा। कितने झाड़-भंखाड़ पार करने के बाद वह एकाएक एक स्वच्छ स्थान पर पहुँचा। वृक्षों की डालियाँ गाड़-गाड़कर तथा उन पर लतायें आदि चढ़ाकर किसी ने उस स्थान को बिल्कुल एक कुंज-सा बना दिया था। मयूख भाँक कर देखने का उद्योग कर रहा था कि इस प्रकार घेर कर बनाया गया स्थान क्या है, इतने में कोई उसे पकड़कर बैठ गया और एक विचित्र प्रकार की दुर्बोध्य भाषा में कुछ बिड़बिड़ करने के बाद एक निमेषमात्र में ही उसे पटककर वह उसकी छाती पर सवार होगया। अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करके भी आक्रमणकारी की वज्रके समान दृढ़ मुट्ठी से अपने आपको छुड़ाने में मयूख समर्थ न हो सका। कुछ क्षण तक छटपटाने के बाद उसने अनुभव किया कि मैं मस्तक नीचे और पैर ऊपर की ओर किये हुए एक अन्धकारमय कूप में पड़ा हुआ हूँ।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

वन में मयूख की प्रतीक्षा करते-करते अर्च्चा उद्विग्न हो उठी। इतने ही अल्प काल के सम्पर्क के कारण मयूख के सम्बन्ध में उसे यह धारणा हो गई थी कि यह काफ़ी निष्कपट तथा सभ्य आदमी है। इससे वह इस बात की कल्पना तक नहीं कर सकती थी कि मुझे वन में अकेली छोड़कर वह कहीं चला जायगा। मन ही मन शंकित होकर धीरे, मन्थर गति से वह घर की ओर चली। घर पहुँचने पर जब अर्च्चा ने देखा कि मयूख अभी तक लौटकर नहीं आया है, तब उसकी चिन्ता बहुत ही अधिक बढ़ गई। अर्च्चा ने अपने पिता तथा मंदिर के पुजारी से अपने हृदय की आशंका का कारण बतलाया। चिन्तित होकर उन लोगों ने मंदिर तथा धर्मशाला के कई आदमियों को मयूख को खोजने के लिए भेजा।

खोज करने के लिए निकले हुए आदमियों का दल अर्च्चा के निर्देश के अनुसार सुरंग के पास से होता हुआ कुएँ के पास पहुँचा। भीतर से किसी के कराहने की आहट पाकर उस दल के लोगों ने निश्चय किया कि अवश्य मयूख कुएँ में ही गिरा हुआ है। अन्त में दो-तीन आदमियों ने कुएँ में उतरकर बड़े प्रयत्न से उसे निकाला। मयूख उस समय प्रायः अचेत हो उठा था। लोग उसे उठाकर अर्च्चा के स्थान पर ले गये। शुद्ध वायु का संसर्ग पाकर जब उसने धीरे-धीरे थोड़ी-बहुत चेतनता प्राप्त की, तब अर्च्चा ने बहुत ही सावधानी के साथ उसके शरीर का सारा कीचड़ धोया, उसने उसके कपड़े बदले और एक गुलगुले बिस्तरे पर उसे लिटा दिया।

मयूख मुग्ध-दृष्टि से अर्च्चा की ओर ताक रहा था। किन्तु एकाएक वृद्ध जोशी के प्रश्न के कारण उसका ध्यान भंग हुआ। जोशी के प्रश्न के उत्तर में दुर्घटना का सारा हाल वह बतला गया, जिसे सुनकर अर्च्चा चमत्कृत हो उठी। उसके मुख का भाव देखकर मयूख ने अनुभव किया कि अर्च्चा के हृदय में मेरे प्रति ममता का भाव है। इससे वह आनन्दित हो उठा। अन्त में एक साथ ही कई आदमियों ने उत्कंठित भाव से पूछा—उस बदमाश ने आपको कुँएँ में क्यों डाल दिया था ? वह है कौन और उसके ऐसा करने का उद्देश्य क्या था ?

मयूख ने कहा—मुझे यह कुछ नहीं मालूम है। यहाँ तो अभी हाल में आया हूँ मैं, इससे किसी से मेरा परिचय नहीं है। किसी से मेरा जब किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं है तब मुझमें शत्रुता ही किसकी हो सकती है ? उसकी यह बात सुनकर अर्च्चा बहुत ही संशय में पड़ गई।

साँझ होने से ज़रा देर बाद अर्च्चा गाय दुहकर एक कटोरा गरम-गरम दूध ले आई और मयूख की ओर बढ़ाकर बोली—यह दूध पी लीजिए। रात को और कुछ खाइएगा नहीं। आज रात्रि में निद्रा में भी किसी प्रकार का व्याघात न होने दीजिएगा।

एक अपरिचित स्त्री को बार-बार इस प्रकार ममता प्रदर्शित करते देखकर मयूख अवाक् हो उठा था। मुँह से कोई बात निकाले बिना ही उसने दूध का कटोरा ले लिया और उसे वह चुपचाप पी गया। अन्त में अर्च्चा जब वहाँ से चली गई तब बिस्तरे पर पड़े-पड़े मयूख अनुमान करने लगा कि यहाँ कौन-सा ऐसा व्यक्ति हो सकता है, जिसके मन में मेरे प्रति शत्रुता का भाव हो सकता है। पहले-पहल उसका ध्यान गया वज्र की ओर। परन्तु उसके बाद ही उसके मन में यह बात आई

कि जहाँ तक आक्रमणकारी की रूप-रेखा का मुझे स्मरण है वह वल्लि नहीं था। सम्भव है कि वल्लि ने कोई गुप्तचर नियत कर रक्खा हो और मैं जो अग्नि के अदृश्य होने के कारण का अनुसंधान कर रहा हूँ, इससे मुझे गुप्तरूप से मरवाकर वह निष्कण्टक होना चाहता हो।

उपर्युक्त प्रकार की बातें सोचते-सोचते मयूख का मस्तिष्क जब बहुत ही क्लान्त हो उठा और गम्भीर समस्या पर विचार करने की शक्ति उसमें न रह गई, तब वह अर्च्चा के ही सम्बन्ध की बातों पर विचार करने लगा। वह सोचने लगा—कितना मधुर और स्नेहपूर्ण है अर्च्चा का व्यवहार ! कितना मधुर कंठ-स्वर है इसका ! रूपवती भी यह साधारण नहीं है। फूल की पँखुरियों के समान सुन्दर-सुन्दर और कोमल अधरों पर कितनी मनोहर मालूम पड़ती है इसकी मुस्कराहट ! आचरण भी उसका कितना संयमपूर्ण है। इस प्रकार मयूख को अर्च्चा की एक-एक बात बहुत ही सुन्दर, बहुत ही मनोरम मालूम पड़ रही थी। उसके हृदय में प्रारम्भिक प्रणय की मधुरता का संचार हो रहा था।

अर्च्चा के ही सम्बन्ध की बातें सोचते-सोचते मयूख निद्रित हो उठा। प्रातःकाल निद्रा भंग होने पर उसने अनुभव किया कि मेरे सारे शरीर में पीड़ा हो रही है। मस्तक भी बहुत ही भारी हो उठा है। वेदना के कारण उस समय अर्च्चा की स्मृति उसके हृदय से जाती रही। उद्विग्न-भाव से वह यही सोचने लगा कि वह आततायी कौन था, और मेरे ऊपर उसने जो इस प्रकार का सांघातिक आक्रमण किया था, उसका कारण क्या हो सकता है ? इसके सिवा इस दुष्कर्म का फल ही उसे किस प्रकार दिया जाय ?

प्रातःकृत्य से निवृत्त होकर मयूख उसी स्थान पर जाने के लिए तैयार हो रहा था, जहाँ उस पर कल इस प्रकार का मांघातिक आक्रमण किया गया था। ठीक उसी समय एक कटोरे में गरम दूध और दूसरे कटोरे में हलुआ लिये हुए अर्च्चा पहुँची। उसने मुस्कराकर कहा—कहिए कैसी तबीअत है ?

मयूख ने भी मुस्कराहट के ही साथ जवाब दिया—इस प्रकार की स्नेहपरायणा सुन्दरी जिसकी शुश्रूषाकारिणी हो, उसकी तबीअत अधिक समय तक खराब रह ही नहीं सकती। परन्तु यदि तबीअत खराब रह सकती, लाभ तभी था।

आनन्द-मिश्रित लज्जा का भाव मुखमंडल पर विकसित किये हुए अर्च्चा कहने लगी—बातों में आपसे पार पाना सम्भव नहीं है। परन्तु आप इस समय तैयारी कहाँ जाने की कर रहे हैं? आज भी आपको हम लोग छोड़ने को नहीं हैं।

“छुटकारा प्राप्त करने की अपेक्षा पकड़ में आने की ही अधिक अभिलाषा मेरे हृदय में है।”

“परन्तु आप-जैसे बड़े आदमी को अधिक समय तक पकड़ रखने की शक्ति हममें नहीं है। तबीअत ठीक हो जाने पर आप इच्छानुसार कहीं भी जा सकेंगे।”

“लोग चिड़िया पालकर उसे अफ्रीम खिलाने हैं, अन्त में अफ्रीम का नशा जब खूब जमने लगता है तब उसे छोड़ देते हैं। इस प्रकार छुटकारा पा जाने पर भी वह चिड़िया एक प्रकार के बन्धन का अनुभव करती है, जिसके आकर्षण से छुटकारा पाकर भी वह बन्धन से मुक्त नहीं हो पाती।

आनन्द से मुख प्रफुल्लित किये हुए कमरे से निकलकर जाती-जाती अर्च्चा बोली—रहने भी दीजिए, आप बड़े बातूनी हैं।

मयूख भी आनन्दपूर्वक जलपान से निवृत्त होकर घर से निकल पड़ा। वन में सुरंग के पास जो कुआँ था, उसी की ओर वह चला। कुएँ के समीप जो साफ़-सुथरा स्थान था, वहाँ पहुँचने से पहले ही उसे मालूम पड़ने लगा कि मानों कोई वहाँ बातें कर रहा है। एक झाड़ी की आड़ में खड़ा होकर मयूख ने बहुत ही धीरे-धीरे उस घेरे के पास की थोड़ी-सी लतायें हटाईं और झाँककर देखने लगा। तब उसे मालूम हुआ कि एक पेड़ की छाया में पार्वती खड़ी है और भूमि पर बैठे-बैठे उसका पैर पकड़कर विनय करने का प्रयत्न कर रहा है विभीषण प्रधान। मयूख के कान में यह आवाज़ आई—(पार्वती ने भूमि पर पैर पटककर कहा)—तुम भूत हो ! बिलकुल पशु हो ! मैं तुमसे घृणा करती हूँ। परन्तु यह बात मन में तुम मत लाना कि तुम्हारे-जैसे नीच आदमी के भय से मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार कोई भी काम करने को तैयार हो जाऊँगी।

एक इतनी-सी स्त्री की तिरस्कारपूर्ण बात से अत्यन्त ही मर्माहत होकर विभीषण उछल पड़ा। हाथ में घोड़ा हाँकने का जो चाबुक लिये हुए था, उसने चमकाते हुए उससे कहा—देखोगी मजा ? मैं चला जाऊँ धर्मशाला में और कह आऊँ मयूख बाबू से कि लालिमा बाई को छिपा रक्खा गया था तुम्हारे घर में ? तुम्हीं लोगों ने चाय के साथ दवा देकर उसके प्राण ले लिये थे न ?

अपने आपको कुछ असहाय-सी अनुभव करती हुई हाथ जोड़कर पार्वती कहने लगी—आह ! ऐसी बात मुँह से मत निकालो। तुम तो इस तरह की बात कहकर एक झंझट खड़ा कर देना चाहते हो। तुम्हारी यह धारणा बिलकुल ग़लत है।

विभीषण ने कर्कश स्वर में कहा—क्या तुम उससे घृणा नहीं किया करती थीं ?

“यह तो सच है कि हम लोग उसे पसन्द नहीं करती थीं; किन्तु मैं तो जाने दो वे सब बातें, तुम चुप रहो।”

“ओह, यदि तुमने उसे नहीं मार डाला है, तो एक दूसरे व्यक्ति ने उसके प्राण लिये हैं। पेड़ पर चढ़कर मैं देख रहा था। लालिमा बाई ने चकितभाव से चारों और ताकते-ताकते तुम्हारे घर में प्रवेश किया था। उसका रंग-ढंग देखकर मैंने समझ लिया था कि यह छिपकर तुम्हारे घर में प्रवेश कर रही है। उसके आने से ज़रा ही देर बाद वल्लि भी आ पहुँचा था। अन्त में पेड़ पर से उतरकर जब मैंने खिड़की से झाँका तब उन दोनों में जोरों से प्रणय-कलह मचा हुआ था। बातें उन दोनों की मैं सुन नहीं सका था अवश्य; किन्तु लालिमा बाई की भाव-भंगी देखकर मैंने यही अनुभव किया था कि इस कहल में माधुर्य नहीं है। वह कटुभाव से ही बातें कर रही थी। बाद को कुछ खिन्न-से होकर वल्लि बाबू लौट गये थे। तुम भी उसके बाद ही बगीचे में आकर अपने आप ही कुछ बड़बड़ाती-बड़बड़ाती टहलने लगी हो।”

कातरभाव से पार्वती ने कहा—आह ! यह बात मुँह से मत निकालो तुम ! चुप रहो।

पार्वती की इस प्रकार की कातरता के कारण विभीषण ने एक निष्ठुरता-पूर्ण उल्लास का अनुभव किया। वह बोला—बाद को तुम्हारी मा ने तुम्हें घर के भीतर बुलाया। एक कटोरी में चाय लेकर तुम लालिमा को देने गई हो। उस कटोरी में केवल चाय नहीं थी। अन्यथा तुम्हारा मुँह इस तरह सूख क्यों जाता ? वह चाय उसे देते समय तुम्हारा हाथ क्यों काँपने लगता ? लालिमा को वह कटोरी दे देने के बाद

तुम फिर बगीचे में आ गई हो। वाद को वह्नि बाबू फिर आये और बगीचे में तुम्हें देखकर भी तुम्हारी ओर ध्यान दिये बिना ही भीतर घुस गये। वह्नि बाबू के भीतर चले जाने पर दरवाजे के पास जाकर तुम चुपचाप खड़ी हो गई हो और सुनने का यह प्रयत्न करने लगी हो कि भीतर क्या बातचीत हो रही है।

क्रोध से अधीर होकर पार्वती बोल उठी—भूठी बात है यह, भूठी बात है !

“मुझे तुम भूठा कह रही हो ?”

“सौ बार भूठा कहूँगी मैं तुम्हें !”

सटाक ! विभीषण के हाथ में जो चाबुक था, वह सटाक से पार्वती के शरीर पर पड़ा। वह आवाज सुनकर मयूख ने अनुभव किया कि पार्वती की रेशमी अँगिया फट गई हाँगी और उसके शरीर की खाल उधड़ गई होगी।

एकाएक इतने जोर की चोट खाकर वेदना के मारे पार्वती भूमि पर लोट पड़ी। परन्तु उस सुन्दरी तरुणी को भूमि पर लोटी हुई देखकर मयूख उदासीन न रह सका। विभीषण दूसरी बार भी उस पर आघात करने के लिए चाबुक तान ही रहा था कि मयूख ने झपटकर उसके हाथ से चाबुक छीन लिया और उसे पटककर शरीर पर उसके सटाक-सटाक चाबुक जमाना आरम्भ कर दिया। अन्त में उसने कहा—देखो, यही रास्ता सीधे गाँव की ओर चला गया है। चुपचाप घर चले जाओ। इसके बाद भी यदि तुम मुँह खोलने का साहस करोगे तो मारे चाबुकों के तुम्हें दुरुस्त कर दूँगा।

इस अपमान के कारण क्रोध से अधीर होकर विभीषण चलता बना। वहाँ से हटकर वन में पहुँचने पर उसने शपथ की कि अवसर

पाकर इस अपमान का बदला ब्याज-सहित लिये बिना में न रहूँगा। इस प्रकार शपथ करके विभीषण वन से बाहर निकल गया। इधर भूमि पर पड़ी-पड़ी रोती हुई पार्वती की ओर मुँह फेरकर मयूख ने कोमल स्वर में कहा—तुम लोगों की बातें मैंने सुनी हैं। वह आदमी जो कुछ कह रहा था, क्या वह सब सच है?

“नहीं।”

“क्या यह बात सच नहीं है कि लालिमा बाई तुम्हारे यहाँ आई थी?”

पार्वती इस प्रश्न के उत्तर में कुछ बोली नहीं।

पार्वती को चुप देखकर आग्रहपूर्ण स्वर में मयूख ने कहा—चुप मत रहो। मुझसे बतलाओ यह बात। इस विषय की जानकारी प्राप्त करना मेरे लिए नितान्त आवश्यक है।

पार्वती किर्कत्तव्य-विमूढ़ होकर मयूख की ओर ताक ही रही थी, इतने में किसी को आते देखकर कुछ भयभीत-सी होकर वह एकाएक चंचल हो उठी। पार्वती की दृष्टि का अनुसरण करके मयूख ने भी देखा कि कोई आदमी चला आ रहा है, जो वल्लि-सा मालूम पड़ता है। वास्तव में यह वल्लि ही है या नहीं, इस बात का निश्चय करने के विचार से मयूख जैसे ही ध्यानपूर्वक आगन्तुक की ओर देखने लगा, वैसे ही वह घने वृक्षों तथा झाड़ियों की आड़ में छिप गया। मयूख के हृदय में पार्वती के प्रति जो करुणा का भाव उदय हुआ था, लुकी-छिपी की यह घटना देखकर वह संदेह के रूप में परिणत हो गया। कुछ रूखे स्वर में उसने पार्वती से पूछा—क्या उससे यहाँ मुलाकात करने की बात थी तुम्हारी?

विस्मय का-सा भाव प्रदर्शित करती हुई पार्वती बोली—किससे?

“वह्नि बाबू से।”

व्यस्तभाव से पार्वती बोल उठी—वे वह्नि बाबू तो नहीं थे, उनके यहाँ का एक खानसामा था। परन्तु यह बात मुँह से निकालते समय पार्वती के मुख पर इस प्रकार की दीनता और संकोच का भाव उदित हो आया, जिससे मयूख को स्पष्ट रूप से मालूम हो गया कि यह अवश्य मिथ्या बोल रही है। इधर यह बात मुँह से निकाल चुकने के बाद ही पार्वती एकाएक चल पड़ी। मयूख आसानी से उसे छोड़ देने को तैयार था नहीं, इसलिए वह भी उसके साथ-साथ चला। वन का रास्ता बहुत संकीर्ण था, इसलिए पास-पास चलते समय उन दोनों ही का शरीर एक-दूसरे से रगड़ता हुआ चलता था और देखने पर कोई यह अनुमान किये बिना नहीं रह सकता था कि ये परस्पर प्रेमी और प्रेमिका हैं, वन में अभिसार के निमित्त गये थे। अस्तु, घुमा-फिरा कर तरह-तरह के प्रश्न करने के बाद भी मयूख पार्वती के मुँह से मतलब की कोई बात न निकलवा सका।

कुंज में बना हुआ पार्वती का कुटीर दूर से दिखाई पड़ने लगा। कुछ ही कदम आगे बढ़ने के बाद उस कुंज के पास खड़ी हुई एक स्त्री दिखाई पड़ी। ज़रा दूर और बढ़ने के बाद मयूख ने उसे पहचान लिया। वह भवानी-मंदिर के प्रबन्धक गंगाधर जोशी की कन्या अर्च्चा थी।

अर्च्चा ने मयूख को वन में प्रवेश करते देखा था। परन्तु उसे लौटने में विलम्ब होते देखकर वह उत्कण्ठित हो उठी थी। वह सोच रही थी कि कहीं कल की ही तरह मयूख आज भी किसी प्रकार के संकट में न पड़ गया हो। इससे शान्त होकर बैठी न रह सकी वह। घर से निकलकर आगे की ओर पैर बढ़ाते-बढ़ाते वह पार्वती के कुंज

के समीप तक पहुँच गई। इतने में उसकी दृष्टि मयूख पर पड़ी। उसने जब देखा कि मयूख सकुशल लौटकर आ रहा है, तब वह बहुत ही प्रसन्न हुई। परन्तु उसने जब यह देखा कि वह विख्यात सुन्दरी पार्वती के साथ घनिष्ठ-भाव से चला आ रहा है तब उसका मुख मलिन हो उठा। उसने सोचा कि प्रणय के अतिरिक्त और आवश्यकता ही क्या हो सकती है, जिसके कारण मयूख इसके साथ इस प्रकार घनिष्ठ-भाव से आ रहा है।

अर्च्चा को देखते ही मयूख का हृदय आनन्द से प्रफुल्लित हो उठा। पार्वती से अग्नि के अन्तर्धान होने के सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके हृदय में जो आग्रह उत्पन्न हुआ था, उसे भुलाकर वह पार्वती को छोड़कर आगे की ओर बढ़ा और उतावली के साथ अर्च्चा के पास पहुँचा; परन्तु उसकी उपेक्षा करके अर्च्चा ने गर्वित भाव से अपनी राह ली।

मयूख ने अर्च्चा से पूछा—आप कहाँ जा रही हैं ? क्या मैं कुछ दूर तक चलकर आपको पहुँचा आऊँ ?

अर्च्चा ने दर्पमय स्वर में कहा—धन्यवाद ! मैं ज़रा अपनी एक पड़ोसिन से मुलाकात करने जा रही हूँ, मेरे साथ आपके चलने की आवश्यकता नहीं है।

अर्च्चा तैश में आकर बहुत ही तेज़ी के साथ चली गई। वन में कुछ ही दूर आगे बढ़ने के बाद वह फिर पीछे की ओर मुँह फेरकर ताकने लगी। परन्तु वहाँ से मयूख दिखाई नहीं पड़ा। तब वह मन ही मन इस बात के लिए ग्लानि का अनुभव करने लगी कि मैंने मन में ईर्ष्या का अनुभव क्यों किया ? इस ईर्ष्या के कारण उनसे हवाई के साथ क्यों बातें कीं ? वे इच्छानुसार किसी से भी प्रेम क्यों न करें, इसमें मेरे क्रुद्ध होने की कौन-सी बात है ?

मयूख चुपचाप खड़ा रहा। उसकी समझ में यह न आ सका कि एकाएक अर्च्वा के भावों में इस प्रकार का परिवर्तन क्यों हो गया है? अन्त में पार्वती से बिदा लेकर उसके घर के चारों ओर घूमकर उसने खूब देख लिया। आज की जाँच से उसने इस बात का भी पता चला लिया कि उस दिन आततायी ने जिस स्थान पर मुझ पर आक्रमण किया था, वह पार्वती के स्थान से अधिक दूर नहीं है। इससे मयूख ने यह अनुमान किया कि वहाँ जो भयंकर आकार का आदमी छिपा हुआ था, वह पार्वती तथा उसके परिवार के लोगों से सर्वथा अपरिचित न होगा, क्योंकि वह इन लोगों से बहुत ही समीप रहा करता है। इस अनुमान ने मयूख के मन में एक नवीन प्रकार की चिन्ता उत्पन्न कर दी, वह मन में सम्भव-असम्भव कितनी कल्पनायें करने लगा।

बीसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन पार्वती के मकान के समीप के एक ऊँचे-से पेड़ पर चढ़कर मयूख बैठा। काफ़ी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद उसने देखा कि पार्वती घर से निकली और उसने वह्नि से मुलाकात की। ज़रा देर की बातचीत के बाद पार्वती रोने लगी। वह्नि उससे कुछ और कहकर चला गया। पार्वती भी आँखें पोंछती हुई घर के भीतर गई। ज़रा देर के बाद वह फिर घर के भीतर से निकली। इस बार हाथ में वह एक पोटली लिये हुए थी। उस पोटली को लिये हुए वन में गई। मयूख ने उस पोटली को देखकर अनुमान किया कि सम्भवतः पार्वती अँगौछे में बाँधकर किसी के लिए भोजन ले जा रही है।

वन में जाकर पार्वती अदृश्य हो गई। ज़रा देर बाद ही लौटकर वह फिर आई। परन्तु हाथ में उसके वह पोटली नहीं थी। यह देखकर मयूख का कौतूहल बहुत अधिक बढ़ गया। वह सोचने लगा कि आस-पास यहाँ कोई बस्ती है नहीं, जहाँ से होकर पार्वती लौटी आ रही है। इससे वन में अवश्य कोई आदमी छिपा हुआ है, जिसे कोई खाद्य सामग्री देकर वह लौट आई है। यह भी सम्भव है कि किसी संकेत-स्थान पर किसी के लिए कोई चीज़ रख कर यह आई होगी।

मयूख साथ में थोड़ा-सा जल और कुछ खाद्य सामग्री लेकर पेड़ पर चढ़ा था। इसलिए साँझ तक वह उस पर से उतरा नहीं। परन्तु उसे जो कुछ देखने की आकांक्षा थी, वह देखने को उसे न मिल सका। सन्ध्या का अन्धकार प्रगाढ़ होता जा रहा था। इससे उसके मन में यह बात आ रही थी कि अब उतरकर धर्मशाला में चलीं।

इतने में उसे जान पड़ा कि मानो कोई सीटी बजा रहा है। इससे चकित होकर वह जिस ओर से सीटी की आवाज़ आ रही थी, उसी ओर अधिक सावधान होकर ताकने लगा। परन्तु अन्धकार में उसे कुछ दिखाई न पड़ा। अन्त में अपने कौतूहल का दमन करने में असमर्थ होकर मयूख पेड़ पर से उतर आया। एक झाड़ी में छिपकर वह ताक रहा था, इतने में जिस आदमी ने उसे कुएँ में गिराया था, वही चकितभाव से चारों ओर ताकते-ताकते पार्वती के घर के पास पहुँचा। उसके आने की आहट पाते ही पार्वती ने भी झटपट आकर बेड़े में लगे हुए फाटक की साँकड़ खोल दी। आगन्तुक चारों ओर ताकने के बाद बड़ी ही तेज़ी के साथ भीतर घुस गया। बाद को पार्वती ने भी उसका अनुसरण किया।

मयूख खड़े-खड़े सोच रहा था कि यह आदमी अवश्य कोई अपराध करके पुलिस के भय से वन में छिपा हुआ है, अन्यथा शिकारी के भय से पशु के समान वन के लता-कुंज में अपने आपको इस प्रकार छिपाये रखने के लिए वह क्यों प्रयत्नशील रहता है ? इस आदमी के पकड़े जाते ही लालिमा की मृत्यु-आदि का रहस्य खुल जायगा।

मयूख पार्वती के घर के भीतर प्रवेश करने के सम्बन्ध में सोच-विचार कर ही रहा था, इतने में दो-तीन आदमियों ने तेज़ी के साथ आकर उसे पकड़ लिया। एकाएक आक्रमण होने के कारण पहले तो वह हक्का-बक्का हो गया; बाद को शरीर का सारा बल लगाकर अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न करने लगा। इतने में एकाएक चकित होकर वह बोल उठा—चिपलूनकर साहब, किसको पकड़वा रहे हैं आप ?

चिपलूनकर ने आँखें फाड़-फाड़कर मयूख की ओर देखा। बाद को वह अपने आदमियों से बोला—इन्हें छोड़ दो, ये मेरे साथी हैं। तुम लोग सावधानी के साथ इसी मकान पर निगरानी रखो।

एकान्त स्थान में जाकर मयूख और चिपलूनकर बातें करने लगे। चिपलूनकर ने कहा—आजकल कुछ दिनों से मैं गणपति के मकान की निगरानी कर रहा हूँ। गणपति का लड़का धनपति जेल से भाग आया है। हम लोगों का अनुमान था कि वह पिता के घर में गये बिना न रहेगा, इससे थोड़े-से आदमियों को इसलिए नियुक्त कर दिया था कि वे गणपति के घर की ओर दृष्टि रखें। परन्तु उस दिन आपने अपने पत्र में सुरंग के पास एकाएक किसी के आक्रमण कर बैठने की घटना का जो विवरण लिखा था, उससे मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि वह अवश्य धनपति ही था। इसलिए आज मैं यहाँ आ पहुँचा।

“वही आदमी इस समय भीतर घुसा हुआ है। घर के लोग रात्रि में उसे छिपा रखते हैं, दिन में वह उस सुरंग में छिपा रहता है।”

“अब बेटा फंदे में आगये हैं। अभी मैं इन्हें गिरफ्तार करवाता हूँ। बाद को छिपा महल के मामले में तुमसे बातें करूँगा। उस मामले के सम्बन्ध की बहुत-सी बातें करनी हैं तुमसे। मैंने अपने एक आदमी को छिपा महल में नौकर रखवा दिया है। वह ताम्बे और अहल्या की गति-विधि की ओर बराबर ध्यान रखता है। उसने कई अद्भुत घटनायें देखी हैं। उसने यह भी कहा है कि अभी कुछ और भी अद्भुत घटनाओं के होने की सम्भावना है।

उन समस्त घटनाओं का विवरण जानने के लिए मयूख बहुत ही उत्कण्ठित हो उठा था। परन्तु चिपलूनकर ने कहा—अभी तुम ज़रा शान्त रहो, पहले इस कार्य से मुझे निवृत्त हो जाने दो। अन्त में उसने धनपति को गिरफ्तार करके उसे हथकड़ी-बेड़ी पहनाई और उसका चालान कर दिया, गाँव के किसी आदमी को पता तक न चल सका।

इकोसवाँ परिच्छेद

मयूख के साथ चिपलूनकर धर्मशाला में गया। उसकी उत्कण्ठा निवृत्त करने के लिए वह कहने लगा—आपके पास से चले जाने के बाद यहाँ के मामले में बिलकुल निश्चित होकर मैं उदासीन नहीं हो सका। मैं वह्नि की कारसाजी का पता लगाने का प्रयत्न कर रहा था। यह तो मुझे मालूम ही था कि वह्नि का रेस खेलने की ओर बहुत अधिक भुकाव है; परन्तु यह मैं नहीं जानता था कि वह बाकायदा बाजी लगाकर रेस में सम्मिलित हुआ करता है। बाजी भी वह दो-चार सौ रुपयों की नहीं, बल्कि हजार-हजार रुपयों से भी अधिक की लगाया करता है।

मयूख आश्चर्य में आगया। उसने कहा—ऐं! हजार-हजार रुपये की बाजी लगाता है वह! इतना रुपया कहाँ मिलता है उसे?

चिपलूनकर ने कहा—वह घुड़दौड़ में कभी बाजी जीतता है, कभी हारता है और आवश्यकता होने पर रुपये उधार ले लेता है। कभी-कभी पिता का घुड़दौड़ का घोड़ा 'राकेट' चुरवाकर दूसरे नाम से रेस में सम्मिलित करवाता है और उसके द्वारा वह कुछ जीत लेता है; परन्तु हारता अधिक है। हारने पर वह श्रृंग लेता-फिरता है। वह्नि के पिता को इस बात का पता नहीं है कि मेरे लड़के की आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार अस्त-व्यस्त है। अपनी उच्छृङ्खलता के ही कारण वह्नि आजकल पैसे-पैसे के लिए महाजनों के सामने हाथ फैलाता रहता है। महाजनों को वह इस बात का आश्वासन दिया करता है कि मेरे बड़े भाई की मृत्यु हो गई है, इससे अब एकमात्र

मैं ही पिता की सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होऊँगा। उस अवस्था में तुम्हारे रुपये डूब न सकेंगे।

मयूख और चिपलूनकर में इस प्रकार की बातें हो ही रही थीं, इतने में धर्मशाला के एक नौकर ने आकर कहा—चिपलूनकर साहब से मिलने के लिए एक आदमी आया है, वह अपना नाम नारायण बतला रहा है।

नौकर को उसे भेज देने का आदेश करके चिपलूनकर ने मयूख से कहा—यह वही आदमी है, जिसे मैंने छिपा महल में नौकर रखवाया है। उससे बहुत-सी नई बातें मालूम होंगी।

“तो क्या यह भी खुफिया-विभाग का आदमी है?”

“हाँ, नौकर के रूप में रहकर यह अहल्या और ताम्बे के आचरण का अध्ययन किया करता है।”

इतने में नौकर के वेश में आकर एक आदमी ने प्रवेश किया। चिपलूनकर ने उससे कहा कि भीतर से साँकड़ लगा लीजिए तब बैठिए।

चिपलूनकर ने पहले-पहल आगन्तुक को मयूख का परिचय दिया। तब वह आश्वस्त हुआ और दरवाजा बन्द करने के बाद आकर वह निस्संकोचभाव से बिस्तरे पर बैठा। चिपलूनकर के साथ उसे समता का व्यवहार करते देखकर मयूख ने भी समझ लिया कि नारायण साधारण भृत्यों की श्रेणी का आदमी नहीं है।

नारायण ने कहा—छिपा महल में थोड़े ही दिनों के बीच में जो दो-दो दुर्घटनायें हुई थीं, साथ ही एक हत्या भी हो गई थी, इससे डर के मारे घर के सभी नौकर और नौकरानियाँ छोड़-छोड़कर चली गईं। ताम्बे और अहल्या का आसन अवश्य नहीं डगमग हुआ। आपकी

चिट्ठी लेकर जैसे ही मैं पहुँचा, वैसे ही हुताशन बाबू ने मुझे नियुक्त कर लिया। काम हाथ में लेते ही मैंने ताम्बे से खूब मित्रता कर ली। अहल्या और मुझमें तो बाकायदा प्रेम हो गया। उसे मैंने समझा दिया है कि यदि तुम मेरे इस शून्य जीवन की अधीश्वरी बनना स्वीकार करो तो जीवन-निर्वाह के लिए तुम्हें फिर दासीत्व न करना पड़ेगा। मेरी इस बात पर अहल्या बहुत-कुछ सहमत भी हो चली है। उसके सामने मुझे बहुत-सी प्रणयपूर्ण बातें करनी पड़ती हैं। उसी सिलसिले में वह अपने हृदय की भी कोई-कोई बात उगल देती है। एक दिन बात ही बात में वह बोली—यहाँ के जिन नौकरों और नौकरानियों ने नौकरी छोड़ी है, वे सब भूत से डरकर भागे हैं।

चिपलूनकर ने हँसकर कहा—भूत से या चुड़ैल से ?

‘चुड़ैल का ही डर है वहाँ। आप लोग हँस रहे हैं; परन्तु वहाँ रात के समय सचमुच पीठ पर बिखरे हुए बाल लटकाये हुए एक रमणी-मूर्ति सारे घर में घूमती-फिरती दिखाई पड़ती है। छिपा महल में एक नौकरानी और आई है। नाम है उसका कस्तूरी बाई। उसके भी प्रेम में पड़ गया हूँ मैं। कस्तूरी बाई ने चुपके-चुपके मुझसे कहा है—वह्नि बाबू रात्रि में माता-पिता से छिपाकर गुप्त सीढ़ी से प्रायः बाहर चले जाया करते हैं और किसी-किसी दिन साथ में एक स्त्री को लेकर लौट आते हैं। किसी-किसी दिन मुद्गर स्थान में जाने का बहाना करके वे घर से निकलते हैं; किन्तु गुप्त रास्ते से वे फिर भीतर चले आते हैं। ताम्बे उनके लिए द्वार खोल रखता है। परसों वे बम्बई जाने के बहाने मे घर से निकले थे, परन्तु उसी दिन रात्रि में वे फिर लौट आये हैं। मैंने पहले से ही इस बात का अनुमान कर रक्खा था कि वे लौट आयेंगे, इसलिए एक चोर-कोठरी में छिप गया था।

छिपे-छिपे मैंने स्वामी और सेवक की बहुत-सी बातें सुन ली हैं, यद्यपि वे लोग फिम-फिस करके बातें कर रहे थे। मैंने देखा कि ताम्बे ने बल्लि बाबू पर बहुत ही प्रभाव जमा रक्खा है। वह उससे बराबरी के दावे के साथ बातें करता है, कभी-कभी तो डाँट भी देता है बल्लि को। तीन-चार बार बल्लि बाबू के मुँह से यह बात मैंने सुनी—और थोड़े दिनों तक धैर्य धारण किये रहो, समय आने पर मैं तुम्हें प्रसन्न कर दूँगा। पहले हमारा यह काम तुम सिद्ध कर दो.....।”

बात काटकर विपलूनकर बीच में ही बोल उठा—किस काम के सम्बन्ध में यह बात कह रहा था वह ?

नारायण ने कहा—यह बात नहीं मालूम हो सकी है मुझे। परन्तु रंग-ढंग से मालूम यही पड़ा कि कोई षड्यंत्र चल रहा है इन लोगों में। इतने में ताम्बे बोल उठा—नारायण विश्वास-योग्य आदमी नहीं मालूम पड़ता। वह हर एक बात को न जाने कैसे कान खड़ा करके सुनने का-सा प्रयत्न करता है। यह बात सुनते ही मैं वहाँ से खिसक आया और रसोईघर के द्वार पर बैठे-बैठे ऊँघने-सा लगा।

बड़ी देर के बाद लौटकर ताम्बे आया और मुझसे पूछने लगा—नारायण, क्या तुम सो रहे हो ?

“हाँ भाई, बैठे ही बैठे नींद आगई।”—हण्ठ-स्वर मैंने इतना भारी कर लिया था, मागो बहुत ही गम्भीर निद्रा में सो रहा था मैं।

ताम्बे ने मुझसे कहा—तुम बैठे-बैठे कष्ट क्यों कर रहे हो ? जाकर लेट क्यों नहीं जाते हो ? अब तो कोई काम-काज है नहीं।

ताम्बे के आग्रह करने पर मैं जाकर बिस्तरे पर लेट गया; परन्तु निद्रा मुझे नहीं आ सकी। खूब सतर्कभाव से कान खड़ा करके मैं

इस बात की टोह लेने लगा कि कहाँ क्या हो रहा है ? इधर मेरे लेटते ही ताम्बे वहाँ से चला गया ।

चारों ओर निस्तब्धता हो जाने पर मैं बिस्तरे पर से उठ गया । बहुत धीरे-धीरे पैर रखते हुए मैं उस ओर पहुँचा, जहाँ पतली-सी गली के दोनों ओर क्रतार के क्रतार कमरे तथा चोर-कोठरियाँ बनी हुई थीं और पास ही गुप्त सीढ़ी भी बनी हुई थी । उस समय वहाँ कोई था नहीं । एक कमरे में वल्लि बाबू का विस्तरा लगा हुआ था । उसी कमरे में लालटेन जल रही थी, जिसकी बत्ती इतनी कम कर दी गई थी कि उसके क्षीण प्रकाश में स्पष्ट रूप से कुछ दिखाई नहीं पड़ता था ।

एक गुप्त सीढ़ी के पास से सामने की ओर भाँककर मैंने देखा तो वल्लि बाबू एक दूसरी सीढ़ी के सामने दरवाजे से बाहर इधर-उधर ताकते हुए अधीरभाव से टहल रहे थे । ताम्बे वहाँ नहीं था ।

बड़ी देर के बाद लौटकर ताम्बे आया । उसके साथ मैं विभीषण था । वह सफ़ेद पत्थर के चौके की तरह की कोई चीज़ लादे हुए था । वल्लि बाबू ने बहुत ही मन्द-स्वर से कहा—कन्नौ और सुर्खी ले आये हो ?

विभीषण ने उत्तर दिया—वहाँ वे सब चीज़ें पहले से ही रक्खी हुई हैं ।

इसके बाद वे तीनों ही आदमी वन में चले गये । दृष्टि बचाकर मैं भी उन सबका अनुसरण करने लगा । बीच वन में से होकर वे लोग एकदम सलिता नदी के तट पर जाकर पहुँचे । जहाँ पर नदी एकदम पहाड़ से टकरा-टकरा कर बहती है और जहाँ पर जल का टक्कर लगते-लगते एक कन्दरा-सी बन गई है, उसी अत्यन्त दुर्गम

स्थान पर पहुँचकर तीनों ही आदमी रुके। विभीषण ने कन्धे पर से उतारकर पत्थर का चौका नीचे रखवा।

जहाँ पर ताम्बे और विभीषण के साथ वह्नि बैठा हुआ था, उस स्थान के ऊपर पहाड़ पर बड़ी कठिनाई से चढ़कर मैं एक चट्टान पर लेट गया और दृष्टि नीचे की ओर करके देखने लगा।

वह्नि बाबू के हाथ में बिजली का एक लैम्प था। उसे उन्होंने जलाया। इसलिए ऊपर से मैं वहाँ की सारी व्यवस्था स्पष्टरूप से देख रहा था। इधर उन लोगों को इस बात का सन्देह ही नहीं था कि कोई हमारी यह कारसाजी देख रहा होगा। इससे वे सब निश्चिन्त थे।

बिजली के उस लैम्प की रोशनी में मैंने देखा तो वहाँ तत्काल ही ईंट और पत्थर से बनी हुई एक समाधि-मी थी। उस समाधि के ऊपर विभीषण ने सिमेंट और मुखी से सफ़ेद पत्थर का वह टुकड़ा बैठाया। संगमरमर के उस टुकड़े पर लिखा था :—

दुष्कर्म की लज्जा आर राजदण्ड के भय से
आत्महत्या करनेवाले भाग्यहीन पुत्र
अग्निकुमार की चिता पर
उसके शोक-मन्तप्त माता-पिता की मर्मवेदना
का स्मृति-चिह्न ।

नारायण के मुँह से यह बात सुनते ही मयूख अत्यन्त कातर हो उठा। उसने रुद्ध-स्वर से कहा—तो अग्नि अब जीवित नहीं है ?

किसी प्रकार का उद्वेग का भाव न प्रकट करके ज़रा-सी मुस्कराहट के साथ चिपलूनकर ने कहा—यह किसने आपसे कहा कि अग्नि बाबू जीवित नहीं हैं ? उनके जीवित होने की ही अधिक सम्भावना है।

स्वार्थवश वह यह बात घोषित करने का प्रयत्न कर रहा है कि मेरे बड़े भाई की मृत्यु हो गई है। यह स्मारक बनाने में भी उसका कोई विशेष स्वार्थ है और माता-पिता को इसका पता नहीं है। अन्यथा इस प्रकार छिपाकर रात में यह काम करने की उसे क्या आवश्यकता थी? उसके माता-पिता दिन में प्रकट रूप से भी तो वह स्मारक बनवा सकते थे।

चिपलूनकर की इस बात से मयूख पूर्णरूप से चिन्ता-रहित नहीं हो सका। इसके समर्थन के लिए वह नारायण के मुँह की ओर ताकने लगा।

नारायण ने कहा—विभीषण वह्नि बाबू से कह रहा था कि जिस प्रकार बकरा-रूपी भैया का मांस खाकर उनकी हड्डियाँ जलाने के लिए आप इस चिता पर ले आये हैं, उसी प्रकार महाजनों को यह स्मारक दिखाकर उनका धन खूब ठाट से खा सकेंगे।

कुछ निश्चिन्त और आश्वस्त होकर मयूख ने कहा—ओह! परन्तु अग्नि की मृत्यु हो गई है या वह जीवित है, यह बात सर्वथा अनिश्चित ही रह गई।

मयूख और चिपलूनकर से विदा होकर—नारायण छिपा महल की ओर चला। वन से निकलकर वह महल में प्रवेश करने को ही था कि सफ़ेद वस्त्र पहने और बाल खोलकर पीठ पर लटकaye हुए दीर्घ आकृति की एक रमणी की मूर्ति दिखाई पड़ी। वह मूर्ति नारायण की ही ओर बढ़ती आ रही थी। उसकी ओर दृष्टि जाते ही नारायण इतना अधिक भयभीत हुआ कि आगे की ओर पैर बढ़ाने का उसे साहस ही नहीं हो रहा था। उसके मन में आया—तो क्या यही छिपा महल की चुड़ैल है? इसी की चर्चा नौकरों तथा नौकरानियों से सुनने में आती है?

क्षण भर में ही साहस का सञ्चय करके नारायण वृक्ष के पास चला गया और तने से लिपटकर खड़ा रहा। उसी वृक्ष के पास से होकर जाते-जाते उस रमणी-मूर्ति ने एक लम्बी साँस ली और निराशा-पूर्ण एवं मन्द-स्वर में वह बोली—ओह ! पाप की बात छिपा रखने में कितना असह्य क्लेश होता है !

नारायण के कान में यह बात पड़ गई। बाद को उसने पहचाना कि यह रमणी स्वयं छिपा महल की गृहस्वामिनी निपुणिका हैं। उनके मुँह से यह बात सुनकर नारायण यह जानने के लिए बहुत उत्कण्ठित हो उठा कि इन्होंने कौन-सी पाप की बात छिपा रखी है। अन्त में निपुणिका के जाने के बाद नारायण भी गया और वह चुपके से अपने बिस्तरे पर लेट गया। दुश्चिन्ता के मारे उस रात्रि में उसे निद्रा नहीं आ सकी।

बाईसवाँ परिच्छेद

नारायण ने निश्चय किया था कि उजाला होने से पहले ही चिपलूनकर के पास जाकर मैं उसे इस घटना की सूचना दे आऊँगा । परन्तु रात्रि में निद्रा न आ सकने के कारण उपाकाल में उसे बहुत ही गम्भीर निद्रा आ गई । ताम्बे ने जिस समय उसे जगाया उस समय काफ़ी दिन चढ़ आया था । उठते ही वह मालिक के लिए चाय तैयार करने में लग गया । बड़ी उतावली के साथ हर एक काम करने के बाद नौ बजे तक उसे बड़ी कठिनाई से अवकाश मिल सका । तब वह दौड़ता हुआ भवानी-मन्दिर की धर्मशाला में पहुँचा ।

गत रात्रि की घटना का विवरण सुनकर चिपलूनकर ने कहा— अपने अनुसन्धान के द्वारा अग्नि बाबू के अदृश्य होने का हाल मालूम करने में यदि हम समर्थ न हो सकेंगे तो अपने आप कोई बात प्रकट न हो सकेगी । बहुत सम्भव है कि अग्नि बाबू छिपा महल की किसी गली, चोर-कोठरी या सुरंग आदि में बन्दी होकर पड़े हों । हम लोगों को वहीं उनकी खोज करनी चाहिए ।

इन लोगों में ये बातें हो ही रही थीं, इतने में तार-घर का एक चपरासी आया और उसने बाबू मयूख मुस्तफ़ी के नाम के तार का एक लिफ़ाफ़ा दिया । बहुत ही उत्कण्ठित होकर मयूख ने लिफ़ाफ़े को खोला । वह तार प्रमिता का भेजा हुआ था । उसने लिखा था— आप अपने मित्र को अब वहाँ खोजने का उद्योग न कीजिएगा । वे मुझे दिखाई पड़ गये हैं । इसके बाद की ही गाड़ी से मैं नाहिपुर आ रही हूँ । स्टेशन पर आइएगा ।

तार पढ़कर मयूख ने चिपलूनकर तथा नारायण को यह संवाद सुनाया । इस संवाद से वह स्वयं बहुत ही चकित हो उठा था और इस बात की सत्यता पर विश्वास करने की उसकी इच्छा नहीं हो रही थी । परन्तु मित्र के जीवित अवस्था में होने का समाचार पाकर वह अत्यन्त ही आनन्दित हो उठा था । उसने सोचा कि अब शीघ्र ही उससे मुलाकात हो जायगी और उसके इस प्रकार अदृश्य हो जाने का रहस्य भी उद्घाटित हो जायगा । उस अवस्था में जिन समस्त षड्यंत्र-कारियों के कारण छिपा महल में यह सत्र गहित काण्ड हुए हैं, वे गिरफ्तार किये जा सकेंगे ।

मयूख उस तार को कई बार पढ़ने के बाद भी निश्चिन्त नहीं हो सका । उसने मन ही मन कहा—कही कल्पना के आवेग के कारण प्रमिता वाई को दृष्टि-विभ्रम तो नहीं हो उठा ? स्त्रियाँ बहुधा प्रत्यक्ष में अनुमान का भी बहुत कुछ सम्मिश्रण कर देती हैं । इसलिए उनकी बातें सर्वथा विश्वास के ही योग्य नहीं हुआ करतीं ।

मयूख प्लेटफार्म पर टहल रहा था । गाड़ी आते ही प्रमिता को खिड़की से भाँकती हुई देखकर वह प्रसन्न हो उठा । दोनों ही ने मुस्कराते हुए एक दूसरे को नमस्कार किया । रुकती हुई गाड़ी के साथ ही साथ बढ़कर उसने खिड़की खोला । प्रमिता से मित्र का समाचार प्राप्त करने के लिए वह उत्कण्ठित तो था ही; परन्तु प्रमिता की ओर से उस विषय में कोई वैसा आग्रह न देखकर मयूख और भी अधीर हो उठा ।

प्रमिता गाड़ी से उतरी । परन्तु उसकी अवस्था देखकर मयूख एकाएक उससे कुछ पूछने का साहस नहीं कर सका । प्रमिता का मुख

सूखकर कांतिहीन हो उठा था। आँखों की पलकें आँसुओं से भीगी हुई थीं।

मयूख उत्कण्ठितभाव से प्रमिता की ओर ताक रहा था। भीतर से उठती हुई रुलाई को रोकने का उद्योग-सा करती हुई हाँफती-हाँफती वह बोली—मैंने उन्हें देखा है।

“किसको ? अग्नि को ? कहाँ देखा है आपने उसे ?”

बड़ी कठिनाई से अपने आपको सँभालकर प्रमिता ने कहा—स्टेशन से बाहर चलिए, तो बतलाती हूँ सारी बातें।

प्रमिता ने अपने आने की सूचना छिपा महल में नहीं भेजी थी। इसलिए वहाँ से सवारी नहीं आई थी। बिल्कुल देहात में बने हुए उस स्टेशन पर किराये की कोई सवारी मिल ही नहीं सकती थी, इसलिए उतना रास्ता पैदल ही चलकर तय करने का निश्चय हुआ।

मयूख और प्रमिता पास-पास चल रहे थे। पीछे एक कुली था; जो प्रमिता का सामान लिये हुए था। कुछ दूर तक चलने के बाद एक लम्बी साँस लेकर प्रमिता बोली—मैं उन्हें एक रेलवे स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर देख आई हूँ। एक सुन्दरी तरुणी का हाथ पकड़े हुए खूब वे हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। कितने निष्ठुर हैं वे ! कितने हृदयहीन हैं !

आश्चर्य में आकर मयूख ने पूछा—रेलवे स्टेशन पर देखा है आपने ? अग्नि को ? किस स्टेशन पर देखा है ?

“मैं डाकगाड़ी से बड़ौदा से राजपिप्पला आ रही थी। रास्ते में किसी छोटे स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर मैंने उन्हें देखा है। हमारी गाड़ी उस स्टेशन पर खड़ी नहीं हुई। प्लेटफ़ार्म पर उनकी ओर दृष्टि जाते ही वह एकदम से उन्हीं की ओर आवद्ध हो गई थी, इससे यह देखने का

अवसर ही नहीं मिला कि वह स्टेशन कौन-सा था। उन्हें उस अवस्था में देखकर मैं इस प्रकार विह्वल हो उठी थी कि गाड़ी जब भड़ोंच में खड़ी हुई तब जाकर मैं किसी प्रकार स्वाभाविक अवस्था में आ पाई हूँ।

“मतलब यह है कि बड़ौदा और भड़ोंच के बीच के किसी स्टेशन पर वे मिले हैं।”

“हाँ। परन्तु उस स्टेशन पर वे सम्भवतः गाड़ी की ही प्रतीक्षा में खड़े थे। वहाँ से वे अवश्य कहीं चले गये होंगे।”

“आपने ठीक-ठीक देखा है न? अग्नि ही थे न वे? भ्रम तो नहीं हो गया आपको?”

अपने मुरझाये हुए मुख पर ज़रा-सी मुस्कराहट ले आकर प्रमिता ने कहा—क्या मैं उन्हें पहचानती नहीं हूँ ?

प्रमिता की इस बात में कितना अनुराग; कितना प्रणय व्यक्त हो रहा था! अग्नि के प्रति उसका इतना अगाध प्रेम देखकर मयूख ने बहुत ही सन्तोष का अनुभव किया। प्रमिता की मनोवेदना से व्यथित होकर उमने कहा—किन्तु गाड़ी तेज़ी के साथ चली आ रही थी और बात की बात में प्लेटफार्म को पीछे छोड़कर चली आई होगी, इससे आपका दृष्टि-विभ्रम हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

खूब ज़ोर से मस्तक हिलाकर दृढ़तापूर्वक प्रमिता ने कहा—पहचानने में मुझसे ज़रा भी भूल नहीं हुई है। मैंने उन्हीं को देखा है।

प्रमिता की इस दृढ़तापूर्ण बात से मयूख ने बहुत ही आनन्द का अनुभव किया। उसे निश्चय हो गया कि अग्नि जीवित है और सुखपूर्वक विचरण कर रहा है। उसे जीवित देखकर प्रमिता को भी सुखी ही होना चाहिए था; परन्तु हाय रे नारीचरित्र, जिस प्रियतम के

सम्बन्ध में वह निश्चय कर चुकी थी कि उसकी मृत्यु हो गई है, उसी को जीवित अवस्था में देखकर उसने जब यह अनुभव किया कि यह किसी दूसरी स्त्री के प्रति आसक्त हो उठा है, तब हृदय उसका ईर्ष्या से लबालब भर उठा। मन में यह बात आते ही कौतुक का अनुभव करते हुए उसने पूछा—अग्नि के साथ जो स्त्री दिखाई पड़ी थी, वह किस प्रान्त की-सी जान पड़ती थी ?

“वह या तो बंगालिन होगी या गुजरातिन होगी। इन दोनों प्रान्तों की शिक्षित रमणियों के पहनावे में जो साधारण-सा अन्तर है, उसकी ओर ध्यान देने का अवसर मुझे नहीं मिल सका।”

“क्या उन लोगों के साथ में कोई और भी था ?”

“यह मैं नहीं बतला सकती। मैं केवल इतना ही देख सकी हूँ कि एक सुन्दरी युवती का हाथ पकड़े हुए वे हँस-हँसकर बातें कर रहे हैं।”

मयूख ने कहा—आप इस सम्बन्ध में अभी किसी से कुछ कहिएगा नहीं; मैं चिपलूनकर साहब से परामर्श करूँगा कि इस विषय में क्या किया जा सकता है ?

बातें करते-करते लोग छिपा महल के पास पहुँच गये। किसी प्रकार की सूचना दिये बिना ही प्रमिता को आई हुई देखकर हुताशन बाबू और निपुणिका को कुछ आश्चर्य हुआ अवश्य, किन्तु उन्होंने अनुमान यही किया कि अग्नि का कोई पता चल सका है या नहीं, यही बात जानने के लिए यह आई होगी।

तेईसवाँ परिच्छेद

मयूख के मुँह से प्रमिता की यह बात सुनकर चिपलूनकर ने अवज्ञा के स्वर में कहा—यह सब एक रमणी के हृदय की भ्रान्त कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। तो भी उन सब स्टेशनों पर एक आदमी को भेजकर पता लगाने का प्रयत्न करूँगा। परन्तु इतने बड़े रहस्य के अनुसंधान के लिए उद्योग हमें छिपा महल में ही करना होगा।

प्रमिता की इस बात के कारण मयूख बड़े ही द्वैविध्य में पड़ गया था। वह सोच रहा था कि प्रमिता ने यदि सचमुच अग्नि को देखा है तो उसकी खोज के लिए मुझे उन सब स्थानों में जाना चाहिए। परन्तु यदि वह भ्रान्त कल्पना के कारण यह बात कह रही हो तो यहाँ से इतनी दूर तक जाना किसी प्रकार भी युक्ति-संगत न होगा। बहुत सोच-विचार करने के बाद उसने निश्चय किया कि चिपलूनकर के कथन के अनुसार छिपा महल में एक बार और खोज करके प्रमिता की बातों की सत्यता की परीक्षा करने के लिए निकलूँगा।

चिपलूनकर और मयूख ने जाकर हुताशन बाबू से जब प्रस्ताव किया कि छिपा महल के गुप्त रास्तों को हम लोग एक बार और ध्यानपूर्वक देखना चाहते हैं, तब निराशामिश्रित अवज्ञा के स्वर में उन्होंने कहा—तुम्हारी जो इच्छा हो, वह करो।

हुताशन बाबू की आज्ञा पाते ही वे दोनों आदमी छिपा महल के भीतर की उस पतली-सी गली में, जिसके दोनों ओर छोटे-छोटे कमरे बने थे, पहुँच गये। गली का जहाँ पर अन्त हुआ था, वहाँ दीवार पर फ़ारसी में कुछ लिखा था। वह लेख देखने के विचार से अग्नि

पिता के पास से चला था और उसके बाद से ही उसका पता नहीं चल सका। इसलिए उन दोनों आदमियों ने पहले-पहल जाकर उस लेख की ही परीक्षा करने का निश्चय किया।

छिपा महल के भीतर की पतली गली में प्रवेश करते समय चिपलूनकर ने उस गली में प्रवेश करने के द्वार को बन्द कर लिया था। इससे एकान्त भंग होने की आशंका उन्हें नहीं रह गई थी और वे निश्चिन्त भाव से अपने कार्य में मग्न थे। जहाँ पर दीवार में फ़ारसी के अक्षर खुदे हुए थे, उसके नीचे दीवार में ही एक चौकोर पत्थर बैठाला हुआ था। उस चौकोर पत्थर के मध्य भाग में लोहे के कुलाबे में एक बहुत ही मजबूत हुक लगा हुआ था। पत्थर में उस हुक की नाप की ही एक खड्ड बनी हुई थी, जिसमें कि वह उसमें लगाया जा सके। खूब ध्यान से देखकर चिपलूनकर ने मालूम किया कि यह हुक पहले चूना और मुखी से इसी खड्ड में बैठाला हुआ था, हाल में किसी ने चूना और मुखी हटाकर हुक को खड्ड से निकाल दिया है।

फ़ारसी में खुदा हुआ यह लेख, पत्थर में बनाई गई खड्ड तथा उसमें लगा हुआ हुक आदि मयूख पहले ही देख चुका था। परन्तु खुफ़िया-विभाग के अनुभवी कर्मचारी चिपलूनकर के समान ही उसमें भी तो इन सबकी उपयोगिता का मूल्य आँकने की शक्ति थी नहीं। इससे वह इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का अनुमान नहीं कर सका था। यही कारण है कि चिपलूनकर ने जब बतलाया कि यह हुक सम्भवतः अभी हाल में निकाला गया है, तब मयूख चकित हो उठा।

आतसी शीशे की सहायता से दीवार पर खुदे हुए लेख का जितना अंश चिपलूनकर पढ़ सका, वह इस प्रकार था—यह छिपा महल पेशवा....(नाम मिट गया था) के शासन-काल में..... (शायद

यहाँ एक और नाम था) की आज्ञा से..... संवत् में बनाया गया है । जो कोई देश का शत्रु, विश्वास-घातक तथा दूसरे का पद छीनने का प्रयत्न करनेवाला गिरफ्तार किया जा सकेगा, उसे छिपा महल के नरक-कुंड में जीवित अवस्था में ही समाधिस्थ कर देने के लिए..... (अन्त के मिटे हुए कई अक्षरों के बाद सबसे अन्त का जो शब्द पढ़ा जाता था, उसका अर्थ था) खुलेगा ।

मयूख बहुत ही उत्सुकभाव से चिपलूनकर की ओर ताक रहा था । उपर्युक्त लेख को एक बार पढ़ लेने के बाद चिपलूनकर ने पाकेट से एक खूब बड़ा-सा लेन्स निकाला और उसे पत्थर के आस-पास दीवार पर फेर-फेरकर आतसी शीशे पर तीक्ष्ण दृष्टि रखे हुए रहस्य के सूत्र का अनुसंधान करते-करते उसने कहा—इस लेख से ज्ञात हुआ कि जिन लोगों के सम्बन्ध में देश-द्रोही होने का संदेह होता, उन्हें बन्दी करके इस छिपा महल में जीवित अवस्था में ही समाधिस्थ कर दिया जाता था । यहीं कहीं कोई अन्धकूप होगा । अन्धकूप का मुखोद्घाटन करने की कुंजी शायद यह लोहे का हुक ही..... ।

बहुत ही सावधानी के साथ परीक्षा करने के बाद चिपलूनकर ने वह हुक घुमाना आरम्भ किया । उसे घुमाते ही दीवार में जड़ा हुआ पत्थर खट से खुल गया और वह धीरे-धीरे खिसकने लगा । उसे इस प्रकार खिसकता देखकर मयूख तो भयभीत होकर कई कदम पीछे हट गया । इधर देखते ही देखते दरवाजा बिलकुल खुल गया और एक अन्धकारमय गह्वर-सा दिखाई पड़ने लगा । झाँककर देखने पर उस अन्धकारमय गह्वर में अस्पष्ट रूप से एक सीढ़ी भी दिखाई पड़ी । अब मयूख का साहस बढ़ा । और भी झुककर ध्यानपूर्वक देखने

के बाद उसने मालूम किया कि सीढ़ी लकड़ी की है और काफ़ी मजबूत है।

मयूख के आग्रह से चिपलूनकर ने अपना बिजली का लैम्प जलाया और दोनों ने यह इच्छा की कि इस गह्वर को खूब ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। इतने में उन्हें ऐसा मालूम पड़ा कि मानो यह दरवाज़ा अपने आप बन्द हुआ जा रहा है।

अत्यन्त ही विस्मित होकर मयूख ने कहा—यह दरवाज़ा ऐसे विचित्र ढंग से बना हुआ है कि इसमें जो बड़े-बड़े पत्थर लगे हुए हैं, वे सदा ही एक दूसरे से भिड़कर दरवाज़े को बन्द कर देने के प्रयत्न में रहते हैं। केवल हुक को घुमाकर जब उसे खोलने का उद्योग किया जाता है, तभी शायद किसी स्प्रिङ्ग के घूमने के कारण दरवाज़ा एकदम से खुल जाता है, बाद को वह अपने आप ही फिर बन्द हो जाता है।

मयूख और चिपलूनकर आपस में इस प्रकार की बातें कर ही रहे थे, इतने में दरवाज़े के दोनों पत्थर अपने आप भिड़ गये और साँकल भी बन्द हो गई। उन लोगों ने पत्थरों को ठेलकर देखा। परन्तु केवल धक्का देकर इतने भारी पत्थरों का हिलाना सम्भव न हुआ। अब मयूख ने हुक को पकड़कर ताले की कुंजी की तरह उसे फिर दाहिनी ओर घुमाया। ऐसा करने पर तुरन्त ही खट से दोनों ओर के पत्थर एक दूसरे से अलग हुए और गह्वर का द्वार क्रमशः खुलने लगा।

अब मयूख ने कहा—पत्थर पर खुदा हुआ यह लेख पढ़ने के विचार से आकर अग्नि ने अवश्य इस हुक को घुमाया होगा और द्वार खुलने पर कौतूहलवश वह इस गह्वर में अवश्य प्रविष्ट हुआ होगा। अन्त में एकाएक द्वार बन्द हो जाने पर इस अन्धकूप में बन्दी होकर रह जाने के सिवा उसके

लिए और कोई उपाय ही नहीं रह गया था। अन्त में अग्नि को खोज निकालने के विचार से मयूख ने बिजली का लैम्प लेकर अन्धकूप में प्रवेश करने का निश्चय किया। चिपलूनकर ने उसने कहा कि आप तब तक यहीं रहिएगा और आवश्यकता पड़ने पर द्वार खोल दीजिएगा।

गह्वर के भीतर बिजली के लैम्प की रोशनी डालकर मयूख ने जैसे ही सीढ़ी पर पैर रखवा, वैसे ही वह सामने की ओर लुढ़क पड़ा। उसके पैर के नीचे से सीढ़ी का डंडा भन से घूमकर हट गया। चिपलूनकर ने सामने की ओर हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ने का उद्योग किया अवश्य; किन्तु इससे पहले वह झलमलाकर अधिकार में अदृश्य हो गया। साथ ही साथ उस अन्धकूप का द्वार भी बन्द हो गया। चिपलूनकर भय और विस्मय में अभिभूत होकर क्षणभर स्तम्भितभाव से खड़ा रहा। बाद को साहम करके उस गली का द्वार खोलकर वह बाहर निकला और सामने ही नारायण को देखकर उसे साथ में लिये हुए वह फिर अन्धकूप के पास पहुँचा। तब उसने लोहे के उस हुक को ऐंठकर दो बड़े-बड़े अखण्ड पत्थरों का कपाट खोला। कपाट खुल जाने पर उस भयङ्कर अन्धकूप की ओर ताककर नारायण ने पूछा—मयूख बाबू कहाँ हैं ?

चिपलूनकर ने कहा—इसी अन्धकूप में वे गिरे हुए हैं। उन्हें देखने के लिए मैं इसमें उतरूँगा। यह दरवाजा अभी ही बन्द हो जायगा, तुम यह हुक पकड़कर दाहिनी ओर ऐंठ देना तब फिर खुल जायगा। इस प्रकार जब-जब दरवाजा बन्द हो जाय तब-तब इस हुक को ऐंठकर तुम इसे खोलते जाना। परन्तु पहले एक मोटी-सी रस्सी और एक लालटेन जलाकर ले आओ। रस्सी के ही सहारे से कुएँ में उतरना

होगा। इसके भीतर जो मीढ़ी-सी दिखाई पड़ रही है वह वास्तव में सँकरे से बँधी हुई एक चर्खी है। उस पर पैर रखते ही मयूख बाबू घुमूँडी खाकर गिर पड़े थे।

इतनी देर में मयूख भी बहुत-कुछ शान्त हो गया था और इतने ऊँचे से एकाएक गिरने के कारण भय और चोट के मारे उसे जो मूर्च्छा आगई थी, वह शान्त हो चुकी थी। इससे उसने चिल्लाकर पुकारा—चिपलूनकर साहब, आप मेरे लिए चिन्ता न कीजिएगा। मैं बहुत अच्छी तरह से हूँ। आप भी चले आइए, किन्तु किसी रस्सी के सहारे से नीचे उतरिएगा।

मयूख के कण्ठ-स्वर से चिपलूनकर और नारायण ने यह अनुभव कर लिया कि वह काफ़ी स्वस्थ अवस्था में है, साथ ही उसके मन में किसी प्रकार का उद्वेग भी नहीं है। इससे उन दोनों की व्यग्रता जाती रही। अन्त में ज़रा देर के बाद ही एक मोटी-सी रस्सी के सहारे से चिपलूनकर नीचे उतर गया। साथ में वह एक लालटेन और दो लट्ठ लिये हुए था।

कूप में प्रवेश करने के लिए सीढ़ी के भ्रम से चर्खी पर पैर रखते ही मयूख जब गिरा था तब बिजली का लैम्प उसके हाथ से छूट गया था। अंधकार के कारण अभी तक मयूख उसे पा नहीं सका था। उजाला होते ही वह उसे मिल गया। अब दोनों ही आदमियों ने बायें हाथ में लैम्प और दाहिने हाथ में लट्ठ ले-लेकर आगे बढ़ना आरम्भ किया। पैर आगे बढ़ाने से पहले लट्ठ से ठोंक-ठोंककर वे देख लिया करते थे कि ज़मीन ठोस है या नहीं?

ज़रा ही दूर तक बढ़ने के बाद चिपलूनकर और मयूख ने देखा कि सुरंग बाईं ओर घूम गई है और सामने की ओर पत्थर

की दीवार में दो बड़े-बड़े छेद हैं, जिनमें से होकर पानी की धारा निकल रही है ।

बहुत ही सावधानी के साथ पैर उठा-उठाकर रखते हुए वे दोनों बाईं ओर मुड़े । उस ओर सुरंग क्रमशः संकीर्ण और ढालू हो गई थी । उधर जल की धारा भी क्रमशः अधिक तीव्र वेग से बह रही थी । दीवार में पंक्ति के पंक्ति छेद थे, जिनसे होकर जल की धारायें निकल रही थीं और सुरंग के बीच से होकर बहती हुई धारा के वेग को क्रमशः बढ़ा रही थीं ।

एकाएक सामने की ओर झुककर चिपलूनकर ने भूमि पर से कोई चीज उठा ली । लालटेन के बिलकुल सामने लाकर देखने के बाद उसने कहा—यहाँ मनुष्य के आगमन का चिह्न-स्वरूप एक पत्र प्राप्त हुआ है । परन्तु कीचड़ में यह इस प्रकार सन गया है कि एक अक्षर भी पढ़ा नहीं जाता ।

बहुत ही उत्कण्ठित होकर मयूख ने कहा—पानी में कीचड़ धोकर तो जरा देखो !

चिपलूनकर ने वैसा ही किया । जल की धारा में उस चिट्ठी को उसने डुबो दिया, जिससे उसमें लगा हुआ सारा कीचड़ साफ़ हो गया । तब बिजली के लैम्प के सामने करके वह उसे खूब ध्यान से देखने लगा । जरा देर तक उस पर दृष्टि दौड़ाने के बाद उसने मयूख से कहा—यह पत्र बँगला में लिखा हुआ है । परन्तु अन्त में किये गये हस्ताक्षर के अतिरिक्त और कुछ पढ़ने योग्य नहीं रह गया है । जरा आप तो देखिए इसे, कुछ पढ़ा जाता है या नहीं ।

मयूख की दृष्टि पहले से ही पत्र पर लगी हुई थी । अब वह उस पर एकदम से झुक पड़ा और ध्यानपूर्वक देखने के बाद बोला—केवल अन्त

के दो अक्षर पढ़े जाते हैं—‘लिमा’ । बहुत सम्भव है कि यह पत्र लालिमा का ही हो ।

खूब सावधानी के साथ तहाकर चिपलूनकर ने पत्र को पाकेट में रख लिया । उसने कहा—इसे सुखाकर दिन के प्रकाश में देखना होगा । सम्भव है कि इसके द्वारा और भी कोई बात मालूम की जा सके ।

लट्ठ से भूमि को ठोंकते-ठोंकते हाथ में लालटेन लिये हुए वे दोनों और भी आगे की ओर बढ़ गये । ज़रा दूर तक बढ़ने के बाद मयूख की दृष्टि और भी एक कागज़ पर पड़ी । उसने उसे झटपट उठा लिया । वह स्वयं मयूख का भेजा हुआ पत्र था और वही पत्र था जिसके द्वारा उसने अपने नाहिपुर आने की सूचना दी थी । वह पत्र देखते ही मयूख बोल उठा कि अब अग्नि के यहाँ आने के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं रह गया है और यहाँ से निकलने के लिए यदि कोई दूसरा मार्ग नहीं है तो शीघ्र ही वह हमें जीवित या मृत अवस्था में मिल जायगा ।

बातें करते-करते मयूख और चिपलूनकर आगे की ही ओर बढ़ते गये । चारों ओर बिजली की रोशनी फैला-फैलाकर खूब सावधानी के साथ वे दोनों देखते जा रहे थे । ज़रा दूर बढ़ने के बाद एक नोट-बुक मिला, बाद को एक पेंसिल मिली, उससे ज़रा-सा और आगे बढ़ने पर कुंजियों का एक गुच्छा मिला । इन सब चीज़ों को उठाकर चिपलूनकर ने अपने पाकेट में रख लिया और बहुत ही ध्यानपूर्वक नीचे की ओर ताकते-ताकते सुरंग के पंकमय मार्ग में वह अग्नि के पद-चिह्नों का अनुसरण करने लगा । इससे उन दोनों ने अनुभव किया कि अन्धकारमय सुरंग में मार्ग खोजने के लिए अग्नि जैसे-जैसे

छटपटा-छटपटाकर भटकता रहा है, वैसे ही वैसे उसके पद-चिह्न बने हुए हैं ।

कुछ दूर तक और बढ़ने पर उन दोनों ने देखा कि सुरंग का सारा रास्ता जल से भर गया है और जल की धारा तीव्र वेग से प्रवाहित हो रही है। मयूख ने वहाँ पर लट्ठ डुबाकर देखा कि जल यहाँ पर बहुत गहरा है। उस जल की धारा के अतिरिक्त और कोई मार्ग भी नहीं था। जल की धारा और दीवार के बीच में केवल बालिस्त भर का चौड़ा रास्ता दिखाई पड़ा। उसी पर पैर रखकर दीवार के सहारे से लट्ठ टेकते-टेकते वे दोनों बहुत ही सँभाल-सँभालकर चलने लगे। इस प्रकार दस-बारह हाथ का रास्ता तय करने के बाद उन्होंने देखा कि एक स्थान पर दीवार तोड़कर जल की धारा बहुत ही वेग से घूमकर बाहर निकल गई है और वहाँ इतने जोर का भँवर है कि उसे पार करना शायद बड़े से बड़े तैराक के लिए भी सम्भव न हो सकेगा।

वहाँ से सुरंग दाहनी ओर घूमी हुई थी और जल की धारा तथा सुरंग जहाँ एक दूसरी से पृथक् हुई हैं, उस स्थान से आगे बढ़ने पर मार्ग की भूमि सूखी हुई थी। इस मार्ग में बहुत ही ध्यानपूर्वक देखने पर भी किसी प्रकार का पद-चिह्न नहीं दिखाई पड़ रहा था। ज़रा दूर तक और बढ़ने के बाद टेढ़ी-मेढ़ी सुरंग के एक मोड़ पर घूमते ही एकाएक सूर्य का प्रकाश दिखाई पड़ने लगा। समीप ही एक स्थान पर छत गिर पड़ी थी। उसके ऊपर पेड़ की एक डाली लटक रही थी। किसी प्रकार ऊपर चढ़कर उसी डाली की सहायता से मयूख बाहर निकला। चिपलूनकर ने भी उसका अनुसरण किया। बाहर आकर

उन दोनों ने देखा कि हम दोनों भवानी-मंदिर के पिछवाड़े के जंगल में आगये हैं।

इस बात का तो उन दोनों ही को विश्वास हो गया था कि अग्नि इस सुरंग में अवश्य आया था। परन्तु यहाँ उसके आने का क्या कारण हो सकता है और यहाँ से वह कहाँ गया होगा, इस विषय में वे दोनों एकमत न हो सके। अन्त में तरह-तरह का तर्क-वितर्क करते हुए वे छिपा महल में पहुँचे। मयूख और चिपलूनकर के मुँह से सारा वृत्तान्त सुनकर हुताशन बाबू बड़े ही आश्चर्य में पड़ गये। पहले उन्होंने ये बातें अविश्वास के ही साथ सुनी थीं और इन्हें वे उपेक्षापूर्वक टाल देना चाहते थे। परन्तु उन दोनों ने साथ में ले जाकर जब उन्हें वह अन्धकूप दिखलाया और सुरंग में जो-जो चीजें मिली थीं, वे सब दिखलाई तब वे बहुत ही विस्मित हुए।

अब एक बार हुताशन बाबू के मन में भी यह बात आई कि सम्भवतः लालिमा की हत्या करके अग्नि भाग गया है और जैसी कि प्रमिता की धारणा है, कहीं वह छिपा हुआ है। किन्तु यह बात किसी प्रकार भी उनके मन में नहीं बैठ पाती थी कि अग्नि-जैसा सदाचारी आदमी इस प्रकार के पाप कर्म की ओर प्रवृत्त हो सकता है। अन्त में चिपलूनकर की इस बात का उन्होंने भी समर्थन किया कि सुरंग का अवशिष्ट अंश भी खोजकर देखना चाहिए, नाहिपुर के समस्त आदमियों को लगाकर जंगल साफ़ करवाया जा सकता है।

चौबोसवाँ परिच्छेद

सुरंग में खोजने पर अग्नि का जब कोई भी पता न चल सका तब चिपलूनकर ने हुताशन बाबू से कहा कि अग्नि बाबू के घर से निकल भागने में अब कोई संदेह नहीं रह गया है। अनुमान से उनके निकल भागने के जो कारण मालूम पड़ रहे हैं, उनकी पुष्टि के लिए प्रमाण संग्रह करना आवश्यक है। इसलिए प्रमिता बाई ने जिस ओर अग्नि बाबू को देखा है, उसी ओर मैं जा रहा हूँ, मयूख बाबू यहीं रहकर जाँच-पड़ताल करेंगे।

हुताशन के द्वारा निपुणिका के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ कि आजकल वे ज्वर से बहुत अधिक पीड़ित हैं और रह-रहकर अंट-संट बकने लगती हैं। इससे चिपलूनकर ने मयूख से कहा कि उनके मुँह से जो कोई भी अंट-संट बात निकले उसे खूब ध्यानपूर्वक सुनकर आप लोग नोट करते जाइएगा, बाद को वह सब जोड़-तोड़कर कोई ऐसा अर्थ निकाल लेना कदाचित् असम्भव न होगा जिसके द्वारा रहस्य पर प्रकाश पड़ सके।

चिपलूनकर के मुँह से इस प्रकार की बात सुनकर हुताशन पहले मन ही मन क्रुद्ध हो उठे थे। उनकी धारणा थी कि भला ऐसी कौन-सी गोपनीय बात हो सकती है जो वे मुझसे छिपा रखने की इच्छा कर सकें। उनके प्रति किसी प्रकार का संदेह का भाव प्रकट करना बहुत ही अनुचित है। परन्तु बाद को निपुणिका के मुँह से निकली हुई अर्थहीन बातों पर ज़रा-सा ध्यानपूर्वक विचार करते ही उनकी बुद्धि चक्कर में आ गई। निपुणिका भोंक में आकर जो

अर्थहीन बातें मुँह से निकालती थीं, उनमें लालिमा, अग्नि और वह्नि के नाम आये बिना नहीं रहते थे। एक बार उनके मुँह से निकला—अग्नि के साथ लालिमा का विवाह हो जाने पर प्रमिता के साथ वह्नि का विवाह होने में कोई बाधा न रहेगी। दूसरी बार फिर उनके मुँह से निकला—नहीं, नहीं, वह्नि का विवाह लालिमा के साथ करना होगा, क्योंकि अग्नि और प्रमिता का विवाह किसी प्रकार भी रोका नहीं जा सकता।

उपर्युक्त बातों पर विचार करते ही हुताशन का हृदय संदेह से पूर्ण हो उठा। वे इन वाक्यों के तरह-तरह के अर्थ लगाने लगे। परन्तु उनमें से कोई भी अर्थ मन में ठीक से जमता नहीं था। इस कारण चिन्ता के मारे वे बहुत ही अधीर हो उठे थे। इतने में डाक्टर ने आकर निपुणिका के रोग की परीक्षा की। आज उन्होंने दवा बदल दी और कहा कि रोगिणी की अवस्था बहुत ही चिन्ताजनक है।

डाक्टर को गाड़ी पर बैठाकर हुताशन रोगिणी के कमरे में फिर लौट गये। अहल्या उस समय शीशे की एक नन्हीं-सी कटोरी में कोई चीज लेकर उन्हें पिलाने का प्रयत्न कर रही थी। परन्तु वे उसे किसी प्रकार भी नहीं पीना चाहती थीं, रह-रहकर प्रलाप करती थीं।

अहल्या से हुताशन ने काँच की कटोरी ले ली। पत्नी के मुँह के सामने झुककर स्नेहमय स्वर में वे बोले—क्या ज़रा-सा जल पीओगी ?

निपुणिका उत्तेजित स्वर में बोल उठीं—नहीं, नहीं, वह दवा मुझे न खिलाइएगा। मैंने लालिमा को खिलाई थी वह दवा, परन्तु उसका इस प्रकार का प्रभाव होगा, डम बात की आशा नहीं की थी मैंने। इसे खाने पर मैं भी मर जाऊँगी।

हुताशन का हृदय स्नेह से पूर्ण हो उठा। तो भी स्नेहमय स्वर में ही वे बोले—यह दवा नहीं है, पानी है।

निपुणिका चिल्ला उठी—विष है ! विष है ! यही विष खाकर मरी है वह लड़की। मैंने यही समझकर दिया था उसे कि इससे लाभ होगा। मैंने यह नहीं समझा था कि इसे खाकर वह मर जायगी !

हुताशन और भी आश्चर्य में आगये। समीप ही सन्नाटे में आकर मुंह सुखाये हुए अहल्या खड़ी थी। उसकी ओर उन्होंने एक बार ध्यान से ताका। बाद को अत्यन्त ही उत्कण्ठामय स्वर में वे बोले—विष की बात तुम क्यों कर रही हो ? यह जल है !

अविश्वास की हँसी की एक पतली-सी रेखा होठ के कोने में छिपाये हुए निपुणिका ने कहा—मैंने भी उस लड़की को चाय के बहाने से विष दिया था ! तुम्हें मेरे पाप-कर्म का पता चल गया है ! इसी लिए तुम मुझे मारने आये हो ? मुझे क्षमा करो, मेरी रक्षा करो, मुझसे मरा न जायगा !

भयभीत होकर निपुणिका ने तकिया में मुंह छिपा लिया। तब हुताशन ने अहल्या को आदेश किया कि किसी प्रकार एक खुराक दवा इन्हें पिला दो। परन्तु यह बात सुनते ही निपुणिका चिल्ला उठी—यही राक्षसी तो सारे अनर्थों का कारण है। इसी ने लालिमा को मारने के लिए विष लाकर दिया था। आज यही मुझे मारने के लिए भी विष ले आई है।

तीक्ष्ण दृष्टि से अहल्या की ओर ताकते हुए हुताशन ने पूछा—यह सब ये क्या कह रही हैं ?

भय के कारण सूखे हुए मुख से अहल्या ने कहा—मुझे तो

कुछ मालूम नहीं है सरकार ! बेहोशी की हालत में ये केवल यही बात बक रही हैं। मैंने लालिमा बाई को दवा नहीं खिलाई है। गणपति बाजीपुरकर के यहाँ छोटे साहब ने स्वयं चाय के साथ उन्हें दवा दी थी।

निपुणिका अपनी धुन में बकती ही गई—अग्नि को मैंने गर्भ में नहीं धारण किया। परन्तु फिर भी वह मेरा लड़का है। बड़ा अच्छा लड़का है। उसे मालूम हो गया था कि वह्नि के साथ लालिमा की घनिष्टता पराकाष्ठा तक पहुँच गई है। उसने उन दोनों का विवाह कर देने का परामर्श दिया था, परन्तु तुम्हारे भय से मैंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। इसी लिए मा होकर मैंने राजदण्ड और लोका-पवाद से एक लड़के की रक्षा करने के लिए उसका अपराध दूसरे लड़के के मृत्यु मढ़ दिया है। बच्चे ने मेरे लज्जा, क्षोभ और प्राण-भय के कारण देश-निर्वासन स्वीकार कर लिया है। परन्तु धन्य है उसकी गम्भीरता कि इतने पर भी उसने माता और भाई का कलङ्क प्रकट नहीं किया।

अपनी ही धुन में बड़बड़ाती हुई निपुणिका और न जाने क्या-क्या कह गई। उन सबको जोड़-तोड़कर हुताशन ने यह अर्थ निकाला कि अग्नि को प्रमिता के साथ घनिष्टता बढ़ाते देखकर उन्हें ईर्ष्या हुई। उनकी आन्तरिक आकांक्षा थी कि प्रमिता का विवाह वह्नि के ही साथ हो। इसी मतलब से उन्होंने लाकर लालिमा को भिड़ाया था और प्रयत्न किया था कि अग्नि के साथ उसकी घनिष्टता हो जाय, जिससे कि प्रमिता के साथ उसके विवाह का जो निश्चय हुआ है, वह भंग हो जाय। परन्तु अपने निर्मल चरित्र के कारण अग्नि उससे दूर ही रहा। इधर जो जाल उन्होंने फैलाया था अग्नि को फँसाने के लिए उसमें फँस गया

वह्नि। अन्त में निपुणिका और वह्नि ने मिलकर अहल्या की शरण ली। उसने विष ले आ दिया, जिसकी सहायता से उन माता-पुत्र ने नारी-हत्या तथा भ्रूण-हत्या-जैसे अत्यन्त गहिर्त कार्यों का सम्पादन किया। उधर अग्नि के अदृश्य होते ही इन सब लोगों ने परामर्श करके यह अपराध उसी के मत्थे मढ़ने का निश्चय किया। रात्रि में अहल्या और ताम्बे ने गुप्त मार्ग से लालिमा का शव ले आकर अग्नि के कमरे में उसी के सन्दूक में बन्द कर दिया था।

आज निपुणिका के प्रलाप का अन्त ही नहीं हो रहा था। वे कह रही थीं—अहल्या को तुम डाँटना नहीं। वह बड़ी ही चतुर है। उसी ने तो मुझे इतनी बुद्धि दी थी। उसने पुलिस की आँख में भी घूल भोंक दी थी। परन्तु इस पाप को मन में छिपा रखने में मुझे बड़ी यत्नव्रणा हो रही थी। कहते-कहते वे मूर्च्छित हो उठीं। हुताशन उनकी सेवा में लग गये।

पच्चोसवाँ परिच्छेद

इस घटना के दूसरे ही दिन चिपलूनकर का तार पाकर मयूख सूरत पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उसने बतलाया कि यहाँ भोलानाथ नामक एक व्यक्ति चिकित्सा के निमित्त लाया गया है, जिसकी रूप-रेखा अग्नि बाबू से मिलती-जुलती है। भोलानाथ मार्त्तण्ड वाजपेयी नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मण का अतिथि है। मार्त्तण्ड का निवास-स्थान सलिता नदी के तट पर बसे हुए एक गाँव में है, जो नाहिपुर से केवल दस कोस की दूरी पर है। मार्त्तण्ड की विधवा कन्या आनन्दी स्नान के निमित्त नदी-तट पर गई हुई थी। वहाँ उस व्यक्ति को मूर्च्छित अवस्था में पड़ा देखकर घर उठवा ले आई। आनन्दी की सेवा-शुश्रूषा के कारण उसे चेतना आई और वह धीरे-धीरे आरोग्य हो उठा। अग्नि जिस दिन से लापता है, उसके दूसरे ही दिन भोलानाथ नदी-तट पर आनन्दी को मिला है। परन्तु इसकी स्मरणशक्ति बिलकुल लुप्त हो गई है। आज तक इसने अपने सम्बन्ध की कोई भी बात नहीं बतलाई। मार्त्तण्ड ने अपने इस स्मृति-भ्रष्ट अतिथि का नाम भोलानाथ रख लिया है। आनन्दी भोलानाथ को भैया कहती है। भोलानाथ भी आनन्दी को दीदी कहता है।

सूरत में रेलगाड़ी से उतरकर मयूख चिपलूनकर के स्थान पर बहुत अधिक रात बीत जाने के बाद पहुँचा था। इससे वह रात्रि उसे वहीं व्यतीत करनी पड़ी। परन्तु उसने एक बन्दी के समान व्याकुलभाव से ही वह रात्रि व्यतीत की। सबेरा होते ही चिपलूनकर के साथ वह मार्त्तण्ड के स्थान पर पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर दूर से ही देखकर

उसने अग्नि को पहचान लिया। भोलानाथ नामधारी अग्नि उस समय एक मोढ़े पर बैठा हुआ था और एक तरुणी उसके लिए दातून और जल की व्यवस्था कर रही थी।

मयूख दौड़कर अग्नि से लिपट गया। आनन्द की अधिकता से अधीर होकर उसने कहा—कहो भाई अग्नि ! तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो ? मैं तुम्हारा साथी मयूख हूँ।

अपने हृदय की अपरिमित दयालुता से प्रेरित होकर सेवा-शुश्रूषा के द्वारा आनन्दी ने जब अग्नि को सचेत किया, तब से वह केवल मरहठी भाषा सुनता आ रहा था और वह स्वयं भी मरहठी में बात-चीत किया करता था। परन्तु इतने दिनों के बाद एकाएक मयूख के मुँह से बँगला भाषा के शब्द सुनकर वह चौंक पड़ा। उसने अनुभव किया कि शायद मैं भी यह भाषा जानता हूँ। सम्भवतः बातचीत भी मैं इस भाषा में कर सकता हूँ।

उत्सुकतामयी दृष्टि से मयूख के मुँह की ओर ताकते-ताकते अग्नि उठकर खड़ा हो गया। बाद की धीरे-धीरे उसने अपनी दृष्टि आनन्दी के मुँह की ओर फेरी और मानो कोई भूली हुई बात स्मरण करने लगा। क्षण-भर तक एक दृष्टि से आनन्दी के मुँह की ओर ताकने के बाद एक अबोध बालक के समान सरल भाव से उसने कहा—दीदी, क्या मैं तुम्हारा भाई भोलानाथ नहीं हूँ ?

अग्नि के इस प्रश्न के कारण आनन्दी के हृदय की ममता आँसुओं के रूप में प्रकट हो आई। रुद्ध स्वर में वह बोली—तुम सदा ही मेरे भैया रहोगे। नाम तो तुम्हारा हम लोग जानते नहीं थे, इसलिए तुम्हें भोलानाथ कहने लगे। परन्तु तुम्हारे मित्र कह रहे हैं कि तुम्हारा नाम अग्नि है। इसलिए आज से मैं तुम्हें अग्नि-भैया कहा करूँगी।

अग्नि और आनन्दी की बातों के कारण मयूख को बहुत ही सन्तोष हुआ। इन दोनों के इतने पवित्रतामय सम्पर्क के सम्बन्ध में भी अकारण सन्देह करके प्रमिता जो इष्या के मारे जल रही थी, उसकी अवस्था पर विचार करके वह कौतुक का भी अनुभव करने लगा। इधर मयूख के मुँह से निकले हुए बँगला के वाक्यों से आनन्दी ने किसी प्रकार इतना अर्थ निकाल लिया था कि मेरे इन अतिथि का नाम अग्नि है और उनके मित्र का नाम मयूख है। परन्तु चिपलूनकर ने आकर जब उसे मराठी भाषा में सारी बातें समझाईं तब घृणा से उसका हृदय पूर्ण हो उठा। कातर कण्ठ से वह बोली—तो क्या ये ही नाहिपुर के छिपा महल के अग्नि अधिकारी हैं, जो एक स्त्री की हत्या करके भगे हुए हैं? तो इसका अर्थ यह है कि ये जो इस प्रकार का भाव प्रदर्शित किया करते हैं कि इन्हें पुरानी बातों का किसी प्रकार का ज्ञान नहीं है, यह इनकी चालाकी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है?

आनन्दी को आश्वासन देते हुए चिपलूनकर ने कहा—यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि चालाकी के ही कारण ये इस प्रकार का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। इसके सिवा मयूख बाबू को इस प्रकार के प्रमाण भी मिले हैं, जिनके द्वारा सिद्ध होता है कि अग्नि बाबू निर्दोष हैं। परन्तु इनके नाम वारंट है और मैं खुफ़िया-विभाग का एक कर्म-चारी हूँ, इससे इन्हें गिरफ़्तार करने के लिए मैं बाध्य हूँ।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

अग्नि को राजपिप्पला ले जाने का निश्चय हुआ । वहीं उसका मुकदमा होने को था । पुलिस के एक दल के साथ उसे लेकर चिपलूनकर जिस गाड़ी से रवाना हुआ, उसी गाड़ी से मार्त्तण्ड पण्डित और आनन्दी को साथ में लिये हुए मयूख भी रवाना हुआ । हुताशन और प्रमिता को उसने पहले से ही तार दे रखा था ।

पत्नी की शोचनीय अवस्था के कारण हुताशन स्वयं राजपिप्पला पहुँचने में असमर्थ थे । उन्होंने प्रमिता से कहा था कि तुम मेरी ओर से अपने पिता से आग्रह करना कि वे अग्नि के मुकदमे की पैरवी खूब डटकर करें, उसे छोड़ने के लिए मैं अपना सर्वस्व बेचने को तैयार हूँ । इस मामले की पैरवी के लिए उन्होंने वल्लि को विश्वासपात्र नहीं समझा ।

राजपिप्पला स्टेशन पर गाड़ी पहुँचते ही मयूख ने खिड़की से झाँककर देखा तो प्रमिता एक वृद्ध के साथ प्लेटफार्म पर खड़ी-खड़ी एक-एक डिब्बे पर दृष्टि दौड़ाने का उद्योग कर रही थी । चलती हुई गाड़ी पर से ही उसने उसे नमस्कार किया । मुस्कराहट के साथ उसके नमस्कार का उत्तर देने के बाद ही मयूख गम्भीर हो उठा । बाद को प्रमिता के संकेत करने पर उसके पिता ने भी मयूख को नमस्कार किया ।

गाड़ी खड़ी होने पर सबसे पहले मयूख उतरा । उसके बाद मार्त्तण्ड पण्डित, आनन्दी और चिपलूनकर उतरे । उन सबके बाद पुलिसवालों के साथ में उतरा अग्नि । मयूख और चिपलूनकर के अनुरोध से उसे हथकड़ी नहीं लगाई गई थी ।

प्लेटफार्म पर पैर रखते ही अग्नि आँखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखने लगा। उसने कहा—कौन-सी जगह है यह ? यह तो परिचित-सी जान पड़ रही है।

चिपलूनकर ने कहा—राजपिप्पला है यह। मुँह से अस्फुट स्वर में अग्नि ने दो-तीन बार मुँह से निकाला—राजपिप्पला, राज-पिप्पला ! नाम तो यह जाना हुआ-सा है।

मयूख बढ़कर अग्नि के समीप पहुँच गया। उसने उससे कहा—हाँ, यहाँ प्रमितादेवी का मकान है ! वे तुमसे मिलने आई हैं।

अग्नि अपनी ही धुन में बकने लगा—प्रमिता ! प्रमिता ! मधुर नाम है ! शायद कभी का मेरा सुना हुआ है यह नाम।

पिता के साथ आकर प्रमिता जब अग्नि के पास खड़ी हुई, तब अग्नि ने अपरिचित के समान उनकी ओर एक बार देखा और आनन्दी से बोला—कहाँ जा रहे हैं हम लोग दीदी ?

मयूख ने तार के द्वारा प्रमिता के पास जो संवाद भेजा था, उसमें उसने स्पष्ट कर दिया था कि अग्नि की स्मरण-शक्ति नष्ट हो गई है और आनन्दी के साथ उसका सम्बन्ध बहुत ही पवित्र अर्थात् भाई-बहन का-सा है। परन्तु फिर भी अग्नि ने उसकी उपेक्षा करके आनन्दी की ओर जो अनुरागमयी दृष्टि से ताक रहा था, उसके कारण प्रमिता को बड़ी ईर्ष्या हुई। कठोर दृष्टि से अग्नि और आनन्दी की ओर वह ताकने लगी।

इधर आनन्दी अग्नि को कुछ उत्तर देने ही को थी कि प्रमिता के पिता ने कहा—इस समय सबको मेरे ही स्थान पर चलना होगा। यहाँ के मैजिस्ट्रेट के यहाँ मैंने अग्नि के लिए ज़मानत कर ली है। इससे अब उसे पुलिस के संरक्षण में रहने की आवश्यकता नहीं है।

अन्त में पुलिस-कर्मचारियों को मैजिस्ट्रेट की लिखित आज्ञा दिखलाकर उन्होंने नियमित रूप से अग्नि को छुड़ाया।

स्टेशन से बाहर आकर सब लोग एक घोड़ा-गाड़ी में बैठे और प्रमिता के पिता के बैंगले की ओर चले। रास्ते में मयूख ने प्रमिता और आनन्दी में परस्पर परिचय कराया। परन्तु प्रमिता तो आनन्दी से असंतुष्ट ही थी। वह सोच रही थी कि अग्नि का मेरी ओर जो उपेक्षा का भाव है, उसका मूल कारण आनन्दी के प्रति उसका अनुराग ही है। इसी लिए आनन्दी को अपने और अग्नि के बीच में एक दीवार-सी खड़ी देखकर उससे वह किसी प्रकार भी संतुष्ट नहीं हो पाती थी। फलतः नितान्त ही उपेक्षा के साथ एक बार आनन्दी को नमस्कार करके प्रमिता ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया।

आनन्दी के हृदय में तो किसी प्रकार की ईर्ष्या या द्वेष का भाव था नहीं; इससे उसका ध्यान इस ओर नहीं जा सका कि प्रमिता मेरी उपेक्षा कर रही है। आन्तरिक स्नेह से गद्गद होकर मधुर और कोमल स्वर से वह बोली—तुम मेरी भाभी होनेवाली हो, इससे तुम्हारे प्रति किसी प्रकार का शिष्टाचार न प्रदर्शित करके आत्मीय का-सा ही व्यवहार करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। इस घृष्टता के लिए मुझे क्षमा करना। मैया जब तुम्हारे पास आगये हैं, तब तुम्हारे प्रेम का प्रभाव उनके खोये हुए ज्ञान को वापस लाये बिना न रहेगा।

मुँह से यह अन्तिम वाक्य निकालते-निकालते आनन्दी का कंठ-स्वर रुद्ध हो उठा। उच्चारण-सम्बन्धी परिवर्तन का अनुभव करके प्रमिता ने मुँह फेरकर उसकी ओर देखा। उस समय आनन्द के आँसुओं से आनन्दी के नेत्र आर्द्र थे। उसका इस प्रकार का भाव देखकर प्रमिता के हृदय की सारी ईर्ष्या जाती रही। आनन्दी का

हाथ पकड़े हुए कोमल स्वर से वह बोली—दीदी, उन्हें आरोग्य करने के लिए तुम्हारे स्नेह और सेवा-यत्न की आवश्यकता विशेषरूप से होगी। मुझे तो ये भूल ही गये हैं। नवीन चेतना प्राप्त करने के बाद से ये तुम्हारी ही ममता का परिचय प्राप्त करते आ रहे हैं, इसलिए केवल तुम्हें ही पहचानते हैं। इन्हें छोड़कर तुम जाना नहीं।

किराये की गाड़ी पर ज़रा ही दूर चलने के बाद प्रमिता के घर की भी गाड़ी आगई थी; इसलिए उसके पिता ने मयूख को आदेश किया कि तुम अग्नि, प्रमिता और आनन्दी को लेकर उस गाड़ी पर बैठ जाओ। मार्त्तण्ड पंडित और चिपलूनकर साहब को लेकर मैं इस गाड़ी से चलता हूँ। इससे उस दूसरी गाड़ी पर मयूख ने प्रमिता और अग्नि को पास-पास बैठाया था, मयूख और आनन्दी उनके सामने बैठे थे। इससे अग्नि प्रमिता की ओर बार-बार ताककर कुछ सोचने-सा लगता, मानो वह कोई भूली हुई बात स्मरण करने का प्रयत्न कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, मानो जन्मान्तर की कोई क्षीण-स्मृति हृदय में उदित होने को होती है और रह जाती है।

कुछ समय तक प्रमिता के पास इस प्रकार बैठे रहने के बाद अग्नि के मनोभाव में क्रमशः परिवर्तन होने लगा। अब क्षण-क्षण पर एक स्निग्ध संकोच से अग्नि का मुख लाल हो उठने लगा। रह-रहकर अपाङ्ग से प्रमिता का मुँह ताक-ताककर वह आनन्दित-सा होने लगा। उसके इस प्रकार के भावान्तर के कारण मयूख और आनन्दी को बड़ा ही सुख मिला।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

घर पहुँचने के बाद ही प्रमिता के पिता ने तार देकर पूना तथा भड़ोच के नामी-नामी डाक्टरों को बुलाया। उन सबने आकर अग्नि के स्वास्थ्य की परीक्षा की और मयूख तथा चिपलूनकर के मुख से छिपा महल के अन्धकूप में अग्नि के बन्दी होने तथा अन्धकारमय सुरंग में भटभटाकर शह खोजने आदि का प्रयत्न करने का हाल बतलाया। अन्त में उन दोनों ने कहा कि मार्ग का अनुसन्धान करते समय अग्नि बाबू सम्भवतः सुरंग के भीतर की धारा में गिर पड़े और बहते-बहते सलिता नदी में चले गये।

सारा विवरण सुनकर डाक्टरों ने कहा कि आत्मरक्षा के सम्बन्ध में अत्यन्त ही निराश हो जाने के कारण अग्नि को यह स्नायु-सम्बन्धी विकार हुआ है। भाग्य की ही बात है कि यह विक्षिप्त नहीं हुआ। अन्यथा इस प्रकार की अवस्था में मनुष्य का मस्तिष्क विकृत हो जाने की पूर्ण आशङ्का रहा करती है।

डाक्टरों की व्यवस्था के अनुसार अग्नि की चिकित्सा होने लगी, जिसके द्वारा वह उत्तरोत्तर स्वास्थ्यलाभ करने लगा। इधर प्रमिता के साथ नये सिरे से उसकी घनिष्ठता आरम्भ हुई और क्रमशः प्रणय का भी सञ्चार होता गया। कुछ ही समय में वह प्रणय इतना विकसित हो उठा कि वे दोनों ही एक दूसरे के क्षणमात्र के वियोग से भी अधीर हो उठने लगे। इधर प्रमिता से बातें करते-करते उसे माता-पिता तथा भाई आदि का स्मरण हो आया। अब उसने यह भी अनुभव किया कि यह वही प्रमिता है जो पहले से ही मेरे हृदय में अपना साम्राज्य स्थापित कर चुकी है।

प्रमिता ने जब देखा कि अग्नि की स्मृति जाग्रत हो आई है, तब उसने उससे नाहिपुर चलने का अनुरोध किया। कोमल और शान्त कण्ठ से उसने कहा—चलो, ट्रेन का समय हो गया है, सब लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम सब लोग मिलकर नाहिपुर में छिपा महल में तुम्हारे माता-पिता के पास जायँगे।

अग्नि ने स्पष्ट स्वर से कहा—“माता-पिता के पास नाहिपुर के छिपा महल में जायँगे”—यही कहते-कहते वह प्रमिता के पीछे-पीछे घर से निकल गया ।

अट्टाईसवाँ परिच्छेद

छिपा महल में पहुँचने पर अग्नि यह नहीं अनुभव कर सका कि मैं अपने घर में आया हूँ। उस समय उसकी यह धारणा हो रही थी कि इस स्थान को शायद मैंने कभी स्वप्न में देखा है। इससे विस्मय-पूर्ण दृष्टि से चारों ओर ताकते-ताकते वह फाटक के भीतर पैर बढ़ा रहा था। इधर छिपा महल से सम्पर्क रखनेवालों को अग्नि के इस प्रकार लौट आने की कोई आशा ही नहीं थी। वे सब सोच रहे थे कि अग्नि जब इस प्रकार का गृहित पाप-कर्म करके घर से निकला है, तब वह अपना काला मुख दिखाने के लिए यहाँ आने का साहस कैसे कर सकेगा। परन्तु अकस्मात् उसके आने का समाचार पाकर उन सबने बहुत ही आश्चर्य का अनुभव किया और उसे देखने के लिए सब लोग आकर एकत्र हो गये।

छिपा महल के नौकर-नौकरानियों तथा नाहिपुर के निवासियों की एक अच्छी खासी भीड़ के सामने से होकर अग्नि जा रहा था। जिस किसी के सामने वह पहुँचता वही झुककर उसका अभिवादन करता। परन्तु अग्नि पहले की तरह आदरपूर्वक किसी का नमस्कार स्वीकार नहीं कर रहा था। वह उन सबकी ओर शून्य-दृष्टि से इस प्रकार ताकता, मानों उसका इन सबसे कभी का परिचय नहीं है।

प्रमिता-आदि के साथ अग्नि घर में पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही नारायण ने आकर कहा—मालिकिन की अवस्था बहुत ही सङ्कटापन्न है। इससे उन्हें छोड़कर मालिक आ नहीं

सकते। उनकी इच्छा है कि आप सब लोग मालिकिन के ही कमरे में चले।

यह बात सुनते ही अग्नि को आगे करके सब लोग निपुणिका के कमरे की ओर चले। तब चिपलूनकर के पास पहुँचकर नारायण ने चुपके से उसे सूचित किया कि अहल्या और ताम्बे भाग निकले हैं। उन्हें खोजकर गिरफ्तार करने के लिए मैंने एक-एक थाने में तार कर दिया है।

चिपलूनकर ने कहा—भागकर कहाँ जायँगे ये लोग? ये गिरफ्तार होकर ही रहेंगे। व्यर्थ मैं भागने का प्रयत्न किया है इन्होंने।

नारायण ने कहा—साँझ को प्रलाप में मालिकिन ने सारी बातें प्रकट कर दीं। लालिमाबाई के गर्भपात के लिए अहल्या ने एक दवा लाकर दी है। वह दवा उसे खिलाई है। उसी से उसकी मृत्यु हुई है। अन्त में ताम्बे, अहल्या, विभीषण और गणपति ने उसकी लाश लाकर अग्नि बाबू के कमरे में छिपा दी। उन्होंने सोचा कि वे तो लापता हैं ही, इससे उनके कमरे में जब लाश भी निकल आवेगी तब लोग यही विश्वास कर लेंगे कि हत्या के अपराध से बचने के भय से ही वे भाग निकले हैं। उस अवस्था में वह बाबू के प्रति किसी को किसी प्रकार का सन्देह न हो सकेगा।

नारायण की बात सुनकर चिपलूनकर ने कहा—तब तो वह बाबू, विभीषण और गणपति को भी गिरफ्तार करना होगा।

नारायण ने कहा—इसकी भी व्यवस्था मैंने कर ली है।

इस प्रकार बातचीत करते-करते वे सब निपुणिका के कमरे में पहुँचे।

अग्नि को देखते ही हुताशन दौड़ पड़े। उसे छाती से लगाकर उन्होंने व्याकुलतामय स्वर से कहा—बेटा अग्नि, इस जीवन में तुम्हें मैं फिर कभी देख पाऊँगा, इस बात की आशा मुझे नहीं थी। मैंने मन ही मन तुम्हारे ऊपर कितने ही कल्पना-प्रसूत दोष आरोपित किये थे। परन्तु तुम मेरे सत्पुत्र हो, अत्यन्त पवित्र हो, निर्मल हो, तुम्हारे द्वारा मेरा कुल पवित्र हो गया है।

विस्मय-पूर्ण दृष्टि से पिता के मुँह की ओर ताकते-ताकते अग्नि ने केवल इतना कहा—बाबू जी !

अग्नि की भावभङ्गी से मालूम पड़ रहा था कि मानो कोई बात इसकी समझ में आ नहीं रही है। यह विश्वास ही नहीं कर रहा है किसी बात पर। यह इसका अपना घर है और ये बाबू साहब इसके पिता हैं, मानो इस बात पर भी इसे सन्देह हो रहा है।

इधर कमरे में इतने आदमियों को आते देखकर निपुणिका एका-एक चौंक पड़ीं। तड़फड़ाकर वे उठ बैठीं और चिल्लाकर बोलीं—बेटा अग्नि ! मुझे सँभालो, मेरी रक्षा करो। मैंने तुम्हें गर्भ में नहीं धारण किया है। तो भी मैं तुम्हारी मा ही तो हूँ बेटा !

पत्नी को उठकर बैठते देखकर हुताशन ने अग्नि को छोड़ दिया और उतावली के साथ जाकर उन्होंने उन्हें पकड़ा। अन्त में बहुत ही कोमल स्वर में वे बोले—तुम आराम से लेट जाओ, अग्नि तुम्हें देखने आया है।

निपुणिका ने स्वामी की इस बात पर कर्णपात नहीं किया। आँखें फाड़-फाड़कर कमरे में आये हुए लोगों की ओर ताकते-ताकते भय से व्याकुल कण्ठ से वे बोलीं—बेटा अग्नि, हत्या का मिथ्या अपराध तुम्हारे

मत्थे मढ़ने का प्रयत्न मैंने किया है, इस अपराध के कारण तुम्हारा साथी मयूख खुफिया-विभाग के कर्मचारी के साथ मुझे गिरफ्तार करने के लिए आया है। तुम मेरी रक्षा करो बेटा, मेरी रक्षा करो। मैं कैसी भी होऊँ, किन्तु हूँ मैं तुम्हारी मा। मुझे तुम बचाओ, मेरी रक्षा करो।

ये थोड़े-से शब्द निपुणिका ने बहुत ही कातर स्वर से निकाले। व्याकुल-भाव से दोनों बाहुओं को सामने की ओर उन्होंने इस प्रकार फैलाया, मानो वे बहुत ही प्रेमपूर्वक उसका आह्वान कर रही हैं। यह देखकर अग्नि का समस्त अन्तस्तल मातृ-स्नेह से अभिषिक्त हो उठा। तेजी से पैर बढ़ाता हुआ वह मा के पास पहुँचा और उससे लिपटकर स्निग्ध तथा मधुर स्वर में पुकारने लगा—मा !

निपुणिका ने अग्नि को अपने दोनों बाहुओं में आवद्ध कर लिया। बाद को अपना क्लान्त मस्तक उसके वक्ष पर रखकर वे कहने लगीं— हम सब लोगों ने मन में यह स्थिर कर रखा था कि तुम अब जीवित नहीं हो, इससे वह्नि को बचाने के लिए मैंने यह प्रसिद्ध करने की चेष्टा की थी कि लालिमा की हत्या करके ही सम्भवतः तुम भगे हुए हो। परन्तु उस अवस्था में भी ऐसा करना मेरे लिए उचित नहीं था। यदि तुम सचमुच मर गये होते तो हत्या के अपराध को तुम्हारे दण्ड भोगने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था, परन्तु इससे तुम्हारा नाम कलङ्कित हुए बिना न रहता। पुत्र के निर्मल यश पर कलङ्क की कालिमा फैलाना माता के लिए अत्यन्त ही घृणित कार्य है। ऐसी दशा में मैं यह कहने का साहस कैसे कर सकती हूँ कि उस परिस्थिति में मेरा यह कार्य निन्दनीय नहीं समझा जा सकता था। परन्तु अब तो भगवान्

की कृपा से तुम जीवित अवस्था में लौट आये हो, इससे परिस्थिति ही बिलकुल बदल गई। अब मैं सच बात कहने के लिए बाध्य हूँ, उसके कारण मेरे वल्लि को चाहे फाँसी पर ही क्यों न लटकता पड़े। इतनी बात अवश्य है कि लालिमा की हत्या करने का उद्देश्य हम लोगों का नहीं था। वे सब लज्जाजनक बातें मैं तुमसे क्या बतलाऊँ? तुम्हारे बाबू जी को वे मालूम हैं।

एकाएक उत्तेजित हो जाने के कारण निपुणिका बहुत ही शिथिल हो गई थीं। वे जोर-जोर से हाँफने लगीं। उनका क्लान्त शरीर अग्नि के वक्ष पर लटक पड़ा।

इस आकस्मिक उत्तेजना के कारण किसी कारण-विशेष से विस्मृति-आवरण में छिपा हुआ अग्नि का ज्ञान ज़रा-ज़रा-सा उन्मेषित हो आया। मृदु और स्निग्ध स्वर में उसने पुकारा—मा !

निपुणिका ने भी क्षीण स्वर में उत्तर दिया—बेटा !

मुहूर्त भर सभी लोग चुप थे। इस ज़रा देर की निस्तब्धता को भंग करती हुई निपुणिका बोलीं—बेटा अग्नि, वल्लि तुम्हारा भाई है। वह बड़ा ही दुराचारी है। परन्तु फिर भी तुम्हारा यही कर्त्तव्य है कि तुम उसकी रक्षा करो। तुम्हें क्षमा कर देना चाहिए उसे।

निपुणिका ने अग्नि को जिस समय देखा था, उससे ज़रा देर बाद उनकी मूर्च्छा दूर हो गई थी और वे सचेत हो उठी थीं। परन्तु इतनी बातें कह चुकने के बाद उन पर फिर विकार ने आक्रमण किया। वे चिल्ला उठीं—ओह ! ओह ! ओह ! फाँसी ! फाँसी !

“मयूख तो तुम्हारा साथी है बेटा, उससे कहो कि वह इस तरह कसकर गले में फाँसी न लगावे। अब तो साँस ही बन्द होती जा रही है।”

एक जोर की चीख के बाद निपुणिका ने तेजी के साथ उठने का उद्योग किया। परन्तु कोई सहारा न पाकर वे झूलकर गिर पड़ीं।

मा को उठाने के लिए अग्नि ने व्यस्त-भाव से हाथ बढ़ाये। परन्तु उस समय वे अचेत हो उठी थीं।

इस आकस्मिक उत्तेजना के कारण अग्नि की चेतना पूर्णरूप से जाग्रत् हो आई थी। आवेग के साथ वह बोल उठा—बाबू जी, देखिए, मा अचेत हो उठी हैं।

पत्नी को सीधी करके बिस्तरे पर लिटाने का उद्योग करते करते हुताशन ने व्याकुल होकर कहा—मूर्च्छा नहीं आई है इन्हें! मृत्यु हो गई है। डाक्टर . . . ।

कमरे के द्वार के पास ही डाक्टर उपस्थित था। उसने आकर निपुणिका के शरीर की परीक्षा करके कहा—शरीर इनका बहुत ही निर्बल था, इससे अकस्मात् अत्यधिक उत्तेजना होने के कारण इनके हृदय की गति रुक गई और इनकी मृत्यु हो गई।

डाक्टर के मुँह से यह बात सुनते ही अग्नि मा के वक्ष में मुख छिपाकर अबोध बालक की तरह ‘मा’ ‘मा’ कहकर रोने लगा।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

अग्नि मानो अपने पुराने मकान में नया जन्म लेकर आया था और वहाँ के समस्त प्राणियों तथा वस्तुओं से नया परिचय प्राप्त कर रहा था। कहाँ क्या है, इस बात का स्मरण उसे नहीं आ रहा था। परन्तु जो चीज़ उसके सामने पड़ती, उसे वह पहचान लेता। आदमी भी जो उसके सामने आते, वे उसे पूर्व-परिचित-से मालूम पड़ते थे। परन्तु किसका क्या नाम है, यह पूछे बिना वह नहीं मालूम कर पाता था। यह बात अवश्य थी कि रात्रि व्यतीत हो जाने पर उषाकाल के आलोक के समान अग्नि के हृदय में ज्ञान और विवेचना का उन्मेष उत्तरोत्तर होता जा रहा था।

जिन दिनों में छिपा महल में अग्नि के वापस आ जाने, उसकी खोई हुई स्मरण-शक्ति के फिर से जाग्रत् होने तथा निपुणिका का परलोकवास हो जाने के कारण हर्ष और शोक का गङ्गा-यमुना का-सा सङ्गम हो रहा था, उन्हीं दिनों में वह्नि अन्यत्र विपत्ति के अनन्त सागर में गोते खा रहा था। विभीषण की सहायता से बम्बई में वह घोड़दौड़ की बाज़ी जीतने का प्रयत्न कर रहा था। जीत की रकम में से उसने विभीषण को दस प्रतिसैकड़ा कमीशन भी देना स्वीकार किया था; परन्तु वह्नि ने विभीषण के ऊपर चाबुक का जो आघात किया था, उसका बदला लेने का उसे यही उपयुक्त अवसर मालूम पड़ा। परिणाम यह हुआ कि विभीषण की विश्वास-घातकता की बदौलत वह्नि कई हज़ार की बाज़ी हार गया।

अपमान, निराशा और मनोवेदना से अभिभूत होकर वह्नि भीड़ ठेलकर किसी प्रकार बाहर निकला। इतने में अखबार के हॉकर की सुरीली आवाज़

ने उसका ध्यान आकर्षित किया। हाँकर चिल्ला-चिल्लाकर कह रह था—
नाहिपुर के छिपा महल का भंडाफोड़ !

उतावली के साथ अखबार लेकर वह उस पर दृष्टि दौड़ाने लगा।
नाहिपुर का विस्तृत समाचार पढ़ने के बाद क्षोभ और दुश्चिन्ता के मारे
वह अधीर हो उठा। उसके मन में आया कि फाँसी के तख्ते पर चढ़कर
अपमान के साथ प्राण देने की अपेक्षा तो आत्म-हत्या की शरण लेना कहीं
अधिक अच्छा है। इससे होटल में पहुँचते ही विष खाकर सदा के लिए सो
जाने में ही मेरा कल्याण है। परन्तु होटल में पहुँचते ही वह गिरफ्तार हो
गया, उसे आत्म-हत्या करके अपमान से छुटकारा प्राप्त करने का अवसर
उसे नहीं मिल सका।

लालिमा की हत्या करने तथा उसका उस हत्या का अपराध अग्नि
के मत्थे मढ़ने के विचार से शव लाकर उसके कमरे में रखने में
जिन लोगों का हाथ था, वे सभी, विभीषण, ताम्बे, अहल्या तथा गणपति-
आदि गिरफ्तार किये गये। अग्नि के साथ ही उन सब पर भी मामला
चलाने का निश्चय हुआ।

निपुणिका के श्राद्ध से निवृत्त होकर अग्नि पेशी के दिन राज-
प्रिण्पला पहुँचा और अदालत में हाज़िर हुआ। उसकी ओर से पैरवी
करने के लिए कलकत्ता और बम्बई से दो बड़े-बड़े वरिष्ठ बुलाये
गये। खुफ़िया-विभाग की ओर से जो कुछ प्रमाण उपस्थित किये गये,
उनसे सिद्ध हो गया कि अग्नि निर्दोष है। इससे वह छोड़ दिया गया।
वह को एक वर्ष तथा अन्य समस्त अभियुक्तों को छः-छः मास
सपरिश्रम कारावास का दण्ड मिला। इससे सभी के हृदय में हर्ष और
विषाद का प्रकाश और अन्धकार एक साथ ही सम्मिश्रित हुआ।

हुताशन उस समय बहुत ही दुःखी थे। एक तो पत्नी की मृत्यु हो

जाने के कारण वे यों ही शोक से अधीर थे, दूसरे छोटे लड़के को कारावास का दण्ड मिलने के कारण उन्होंने बहुत ही लज्जा और अपमान का अनुभव किया। इससे अग्नि को फिर से प्राप्त कर लेने में उन्हें जो सुख मिला था, वह इस दुःख के नीचे दब गया। मन का यह दुःख कुछ कम करने के उद्देश्य से उन्होंने प्रस्ताव किया कि अग्नि और प्रमिता का विवाह अब यथासम्भव शीघ्र ही हो जाना चाहिए। परन्तु प्रमिता की ओर स्नेहमयी दृष्टि से ताकते हुए अग्नि ने कहा—“नहीं पिता जी, यह नहीं हो सकता। छोटा भाई जेल की नारकीय यातना भोगता रहे और बड़े भाई के विवाह का उत्सव मनाया जाय ? यह तो बहुत ही हृदयहीनता का व्यवहार होगा। वल्लि को लौट आने दीजिए, तब एक वर्ष के बाद हम लोगों का विवाह होगा।

अभी एक वर्ष और प्रतीक्षा करनी होगी ? प्रमिता का हृदय क्षोभ से परिपूर्ण हुआ जा रहा था। किन्तु क्षण ही भर में उसके मन में आया कि अग्नि का हृदय कितना स्वार्थहीन तथा उदार है। माता के प्रति इनके हृदय में इतनी अपरिसीम भक्ति है, भाई के प्रति इतना अगाध स्नेह है कि अपने सुख और आनन्द को एक वर्ष की लम्बी अवधि तक के लिए टाल देने में ये द्विविधा नहीं कर रहे हैं। मन में यह विचार आते ही इतने उदात्त विचार का पति प्राप्त करने की सम्भावना से अपने आपको वह गौरवान्वित-सी अनुभव करने लगी।

अपना विवाह एक वर्ष तक स्थगित रखने का जो प्रस्ताव अग्नि ने किया उसके कारण सभी लोगों ने मन ही मन उसके महत्त्व की बड़ी प्रशंसा की। उसके इस निश्चय के कारण सुखी सभी लोग हुए थे; परन्तु मुँह से किसी ने कोई भी बात नहीं निकाली। अन्त में सबको मौन देखकर अग्नि ने कहा—एक वर्ष में मयूख भी अपने लिए एक कन्या

खोज लेगा, तब एक ही दिन और एक ही स्थान पर हम दोनों ही का विवाह होगा।

अपने साथी के मुंह की ओर ताककर अग्नि मुस्कराने लगा। मयूख की ओर ताककर घर के और लोग भी मुस्कराये। मयूख का मुख लज्जा के मुख से उज्ज्वल हो उठा। उसके मानस-पट पर अर्च्चा की सुन्दर मूर्ति प्रकाशित हो उठी।

तीसवाँ परिच्छेद

छिपा महल के मामले-मुकदमे का भ्रमेला दूर हो जाने पर अतिथि लोग वहाँ से बिदा होने लगे। प्रमिता अपने पिता के साथ राज-पिप्पला चली गई। परन्तु बिदा होते समय उन दोनों ने ही अपने-अपने हृदय में एक दूसरे का मलिन मुख अङ्कित कर लिया। एक वर्ष की लम्बी अवधि उन दोनों ही के हृदय की अधीरता बढ़ा रही थी। मार्तण्ड पण्डित को बिदा करने के लिए अग्नि किसी प्रकार भी तैयार नहीं था। उसने कहा—काका जी, आप ही मेरे इस नये जन्म के पिता हैं। आप मुझे छोड़कर कहीं जाइए नहीं, दीदी को लेकर यहीं निवास कीजिए। पिता जी से कहकर मैं आपको जागीर दिलवा दूँगा। परन्तु मार्तण्ड ने अग्नि के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा—बेटा, पिता-पितामह का निवास-स्थान छोड़कर यहाँ आना मेरे लिए सम्भव नहीं है। परन्तु घर मेरा अधिक दूर तो है नहीं, बीच-बीच में हम लोग आते रहेंगे।

आँखों में आँसू-भरे हुए अग्नि ने इन पिता-पुत्री को भी बिदा किया। चलते समय उसे धैर्य प्रदान करती हुई आनन्दी रुद्धकण्ठ से बोली—तुम सदा ही मेरे लिए वही भैया रहोगे, जिसे नदी-तट से लाकर मैंने अबोध शिशु के समान पाला था। मैं क्या तुम्हें कभी भूल सकती हूँ भैया ?

इकतीसवाँ परिच्छेद

मयूख अग्नि को छोड़कर कहीं नहीं गया । वह छिपा महल में अग्नि के साथ निवास करता रहा । एक दिन साँझ को अर्च्चा से मिलने के विचार से वह भवानी-मन्दिर में गया । अर्च्चा उस समय अपने मकान के सामने सेमर के एक बहुत बड़े वृक्ष के नीचे खड़ी थी ।

कोमल और नयनाभिराम गलीचे के समान भूमि पर उठी हुई हरी-हरी घास पर तुषार के समान शुभ्र रुई गिरी हुई थी । आनन्द से मुख उज्ज्वल किये हुए अर्च्चा उसे देख रही थी । मयूख उसके समीप जाकर खड़ा हो गया । तब दोनों ही एक दूसरे की ओर ताक कर मुस्कराये । अर्च्चा ने उत्कण्ठित भाव से पूछा—छिपा महल का सारा भमेला अब शान्त हो गया न ?

मुस्कराहट के साथ मयूख ने उत्तर दिया—अब केवल एक ही प्रश्न रह गया है, जो थोड़ा-बहुत भमेला अब भी खड़ा किये हुए है । छिपा महल का यह अतिथि यहीं रहे या यहाँ से चला जाय, यह निश्चय होने को अभी बाकी है । अग्नि का विवाह हो रहा है, इससे वह चाहता है कि उसके इस साथी के लिए भी कोई कन्या ठीक हो जाय ।

अर्च्चा गम्भीर हो उठी । उसने कहा—ओह ! ठीक तो है ।

अपनी हँसी दबाने का प्रयत्न करते हुए मयूख ने कहा—मैंने जो कन्या ठीक कर रक्खी है, उसकी स्वीकृति मिल जाने पर मुझे उसके पिता के सामने अपना प्रस्ताव उपस्थित करने का साहस हो सकेगा ! परन्तु एक बंगाली कायस्थ के लिए क्या महाराष्ट्र ब्राह्मण की कन्या

के साथ विवाह करने की आकांक्षा करना नितान्त दुराशामय स्पर्द्धा है ?

अपने चकित नेत्र के कोण से मयूख के ऊपर कटाक्ष मारकर अर्च्चा ने मस्तक नीचा कर लिया। मधुर और कोमल स्वर में वह बोली—
आप पिता जी से कहकर देखिए।

आनन्द से उछलते हुए मयूख ने अर्च्चा का हाथ पकड़ लिया।
उसने कहा—तो छोटी अदालत में मेरी अर्जी मंजूर हो गई।

मधुर भाव से हँसकर अर्च्चा ने मयूख की ओर एक बार फिर कटाक्षपात किया। उसके बाद अपना हाथ छुड़ाकर वह बोली—
पिता जी आ रहे हैं, मैं घर के भीतर जाती हूँ।

आनन्द के कारण उत्पन्न हुई लज्जा को छिपाने के विचार से अर्च्चा घर के भीतर चली गई। इधर जोशी जी ने आकर मयूख से पूछा—कहो बेटा, तुम्हारा मित्र-प्रेम विजयशाली हो गया न ? बड़ी प्रसन्नता हुई मुझे यह सुनकर ! अर्च्चा तुम्हारी बड़ी प्रशंसा करती है। उससे तुम्हारी मुलाकात हुई ?

“जी हाँ ! आज मैं आपसे एक बात पूछने आया हूँ।”

“कहो बेटा, मुझसे कौन-सी बात पूछनी है ?”

“क्या आपने अर्च्चा का विवाह कहीं स्थिर कर लिया है ?”

एक लम्बी साँस लेकर वृद्ध ने कहा—अर्च्चा का विवाह अब नहीं हो सकता। जिसके साथ उसका विवाह निश्चित हुआ था, वह स्वर्ग-वासी हो गया है, इससे अर्च्चा बिना विवाह के ही विधवा हो गई है।

क्षण भर की नीरवता के बाद मयूख ने कहा—यदि आप अर्च्चा का पाणिग्रहण करने का अधिकार मुझे प्रदान करने की कृपा करते तो मैं कृतार्थ हो जाता।

अपनी धँसी हुई आँखों को फाड़-फाड़कर वृद्ध ने ध्यानपूर्वक मयूख की ओर देखा। इस प्रकार की अनहोनी बात पर मानो उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था।

मयूख ने फिर कहा—इस विषय में अर्च्चा की सम्मति है।

मयूख की यह बात सुनते ही वृद्ध स्तम्भित हो उठे। उनके मुँह से कोई बात न निकल सकी। ज़रा देर तक खड़े-खड़े सोचने के बाद एक आह भरकर उन्होंने कहा—अर्च्चा मेरी एकमात्र सन्तान है। छुटपन में उसकी माता की मृत्यु हो गई थी। मैंने ही उसका पालन-पोषण किया है। उसके सुख के मार्ग में मैं किसी प्रकार की बाधा नहीं उपस्थित कर सकता। मेरी आपत्ति स्वीकार करके यदि वह अपने सुख का बलिदान कर दे तो वह दुःखी होगी। उसके दुःख से मुझे भी दुःखी होना पड़ेगा। यदि वह मेरी आपत्ति की उपेक्षा करके अपनी इच्छा के अनुसार पति का वरण कर लेगी तो भी मैं दुःखी होऊँगा। मेरे दुःखी होने पर वह भी सुखी न हो सकेगी। मैं बहुत वृद्ध हो गया हूँ। मेरे जीवन के दिन अब बहुत थोड़े हैं। इस लोक से मेरे विदा होते ही अर्च्चा पूर्णरूप से स्वाधीन हो जायगी। परन्तु अब इतनी वृद्धावस्था में इतने दिनों से हृदय में जमे हुए संस्कार के विषुद्ध कार्य्य मुझसे न किया जायगा। मेरी मृत्यु तक तुम लोग प्रतीक्षा करो।

वृद्ध की इस बात से मयूख के मन में हर्ष और विषाद दोनों ही उत्पन्न हुए। मुँह से कोई बात निकाले बिना ही उसने वृद्ध को प्रणाम किया और सोचने लगा—इस जगत् के सभी सुख दुःख से सम्बद्ध हैं। यही कारण है कि सुख इतना सुन्दर, इतना मधुर है।

आगामी २०० पुस्तकें

नीचे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से अपनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

विचार-धारा

मानव-संबंधी

- (१) जीवन का आनन्द
- (२) ज्ञान और कर्म
- (३) मेरे अन्त समय के विचार
- (४) मनुष्य के अधिकार
- (५) प्राच्य और पाश्चात्य समस्था
- (६) मानव-धर्म
- (७) जातियों का विकास
- (८) विश्व-प्रहेलिका

समाज-संबंधी

- (१) संस्कृति और सभ्यता का विकास
- (२) विवाह-प्रथा, प्राचीन और आधुनिक
- (३) सामाजिक आन्दोलन
- (४) धर्म का इतिहास
- (५) नारी
- (६) दरिद्र का कन्दन

राजनीति-संबंधी

- (१) समाजवाद
- (२) चीन का स्वातन्त्र्य-प्रयत्न
- (३) राष्ट्रों का संघर्ष
- (४) स्वाधीनता और आधुनिक युग

(५) युवक का स्वप्न

(६) योरपीय महायुद्ध

(७) मूल्य, दर और लाभ

विश्व-उपन्यास

- (१) तावीज
- (२) आना केरेनिना
- (३) मिलितोना
- (४) डा० जेकिल और मि० हाइड
- (५) पंपियायी के अन्तिम दिन
- (६) अमर नगरी
- (७) काला फूल
- (८) चार सवार
- (९) रेवेका
- (१०) डेविड कूपर फ्रील्ड
- (११) जेन्डा का कैदी
- (१२) वेनहूर
- (१३) कोवेडिस
- (१४) रोमियो-जूलियट
- (१५) दो नगरों की कहानी
- (१६) टेस
- (१७) रहस्यमयी

आधुनिक उपन्यास

- (१) चुनारगढ़
- (२) विषादिनी

- (३) कालरात्रि
- (४) मुक्ति
- (५) यादगार
- (६) द्वादशिकी
- (७) दाना-पानी
- (८) विप्लव
- (९) जलती निशानी
- (१०) ग्रहचक्र
- (११) कजरी
- (१२) जयमाला
- (१३) उत्कंठिता
- (१४) लहर
- (१५) विचित्रा (नाटक)
- (१६) जयंती
- (१७) आलमगीर
- (१८) कर्णार्जुन

रहस्य-रोमांच

- (१) ताज का रहस्य
- (२) शैतान
- (३) धन का मोह
- (४) कोशलगढ़ का किसान
- (५) पहाड़ी फूल
- (६) अन्तिम परिणाम
- (७) अद्भुत जाल
- (८) मृत्यु का व्यापारी
- (९) यौवनशिखा
- (१०) विद्रोही
- (११) छिपा खजाना
- (१२) गविता
- (१३) चैतावनी

- (१४) देश के लिए
- (१५) दोस्त
- (१६) चौंदी की कुंजी
- (१७) आदर्श युवक
- (१८) हुल्लड़
- (१९) शैतान डाक्टर
- (२०) प्रतिशोध
- (२१) अन्याय का अन्त
- (२२) प्रोफेसर चौधरी
- (२३) वज्राघात
- (२४) समय का फेर
- (२५) डाक्टर कोठारी का लोभ
- (२६) चीन का जादू
- (२७) नीला चश्मा
- (२८) हार
- (२९) अफ़रीदी डाकू
- (३०) खतरे की राह
- (३१) जाला मकड़ी का
- (३२) अदृश्य आदमी
- (३३) साहस का पहाड़
- (३४) अंधेरखाता
- (३५) कंकन का चोर
- (३६) अपूर्व सुन्दरी
- (३७) लौह लेखनी
- (३८) गुप-चुप
- (३९) लाल लिफाफा
- (४०) कल की डाक

कहानी-संग्रह

- (‘क’ विभाग)—विदेशी भाषाओं की
चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

- (‘ख’ विभाग)—लेखकों की अपनी चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग
(‘ग’ विभाग)—विभिन्न विषयों पर चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग
(‘घ’ विभाग)—भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ—६ भाग

विज्ञान

- (१) स्वास्थ्य और रोग
- (२) जानवरों की दुनिया
- (३) आकाश की कथा
- (४) समुद्र की कथा
- (५) खाद-विज्ञान
- (६) मनुष्य की उत्पत्ति
- (७) प्राकृतिक चिकित्सा
- (८) विज्ञान का व्यावहारिक रूप
- (९) प्रकृति की विचित्रतायें
- (१०) वायु पर विजय
- (११) विज्ञान के चमत्कार
- (१२) विचित्र जगत्
- (१३) आधुनिक आविष्कार

हिन्दी-साहित्य

अमर साहित्य

- (१) वैष्णवपदावली
- (२) मीरा के पद
- (३) नीति-संग्रह
- (४) हिन्दी की सूफी कविता
- (५) प्रेममार्गी रसखान और धनानन्द
- (६) सन्तों की वाणी
- (७) सूरदास
- (८) तुलसीदास

- (९) कबीरदास
- (१०) बिहारी
- (११) पद्माकर
- (१२) श्री भारतेन्दु

साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

- (१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
- (२) हिन्दी-कविता में नारी
- (३) हिन्दी के उपन्यास
- (४) हिन्दी में हास्य-रस
- (५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
- (६) हिन्दी का वीर-काव्य
- (७) नवीन कविता, किधर
- (८) ब्रजभाषा की देन
- (९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
- (१०) बालकृष्ण भट्ट
- (११) बालमुकुन्द गुप्त
- (१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
- (१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

धर्म

- (१) गीता (शङ्करभाष्य)
- (२) ,, (रामानुजभाष्य)
- (३) ,, (मधुसूदनी टीका)
- (४) ,, (शङ्करानन्दी टीका)
- (५) ,, (केशव काश्मीरी की टीका)
- (६) योगवाशिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)

- (७) सरल उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुंडक, प्रश्न, ऐतरेय, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर आदि) २ भाग
 (८) पुराण (समस्त पुराणों के चुने हुए शिक्षाप्रद और मनोमोहक कथानक)
 (९) महाभारत के निम्नांकित अंश
 क—(विदुरनीति)
 ख—(सनक सुजातीय)
 ग—(नारायणीय उपाख्यान)
 घ—(श्रीकृष्ण के समस्त व्याख्यान)
 ङ—(वन, शान्ति और अनुशासन-पर्व के आख्यान)
 (१०) पातञ्जल योगदर्शन (व्यास भाष्य)
 (११) तंत्र सर्वस्व
 (१२) पौराणिक संतों के चरित्र
 (१३) उत्तर-भारत के मध्यकालीन संत
 (१४) दक्षिण-भारत के संत
 (१५) आधुनिक संतों की जीवनी (श्री अरविन्द, रमण महर्षि, विवेकानन्द, उड़िया बाबा आदि)
 (१६) पतिव्रताओं और सतियों के चरित्र

ऐतिहासिक विचित्र कथा

- (१) भारत का प्राचीन गौरव
 (२) प्राचीन मिस्र का रहस्य
 (३) प्राचीन ग्रीक की सभ्यता

- (४) मृत्युलोक की भाँकी
 (५) अमेरिका का स्वाधीनता-युद्ध
 (६) फ्रांस की राजक्रांति
 (७) रोमनसाम्राज्य का पतन
 (८) क्रांति की बिभीषिका
 (९) रोम के महापुरुष
 (१०) इत्सिंग का भारत-भ्रमण
 (११) ध्रुव प्रदेश की खोज में
 (१२) प्राचीन तिब्बत
 (१३) सहारा की विचित्र बातें
 (१४) मरहटों का उदय और अस्त
 (१५) सिक्खों का उत्थान और पतन
 (१६) भारत के पूर्वी उपनिवेश
 (१७) मुगलसाम्राज्य में भ्रमण
 (१८) मुगलों का दरबार
 (१९) लखनऊ की शाहजादियाँ
 (२०) विदेशी यात्रियों का भारत-वर्णन
 (२१) नरभक्षकों के देश में—
 (२२) पशुओं, मानवों और देवों में—

जीवन-चरित्र

- (१) नेपोलियन बोनापार्ट
 (२) लेनिन
 (३) भारतीय राजनीति के स्तम्भ (१)
 (४) तुर्की का पिता कमाल
 (५) मेक्सिनी—इटली का वीर
 (६) सब-यात-सेन—चीन का नायक
 (७) एब्राहिम लिंकन—अमेरिका का नेता

